

श्री JP नड्डा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी
6-A, पंडित दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
ITO के पास, रेलवे कॉलोनी, मिंटो ब्रिज कॉलोनी
बाराखंबा, नई दिल्ली
दिल्ली 110002

14 मार्च 2023

विषय: BJP के वर्ष 2024 के घोषणापत्र में पशु कल्याण को शामिल करने का अनुरोध

आदरणीय नड्डा जी:

मैं आपको यह पत्र पीपल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स (PETA) इंडिया के 20 लाख से अधिक सदस्यों और समर्थकों की ओर से यह निवेदन करने हेतु लिख रही हूँ कि कृपया भारतीय जनता पार्टी अपने वर्ष 2024 में होने वाले चुनावों के घोषणा पत्र में पशु हित से संबंधित विभिन्न विषयों को शामिल करें जिसमें पशु क्रूरता निवारण (PCA) अधिनियम, 1960 के संशोधन को सम्मिलित करना, प्रदर्शन हेतु हाथी के प्रयोग पर रोग लगाना और पशु प्रयोगों को कम करने हेतु प्रतिबद्धता दर्ज कराना शामिल है **(अनुलग्नक A)**। प्राचीन समय से, अहिंसा एवं करुणा का सिद्धांत हमारे देश की संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग रहा है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि सभी सजीव और भावनाशील प्राणियों के कल्याण हेतु उचित कदम उठाए जाए।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51-A (g) के अंतर्गत यह सभी नागरिकों का कर्तव्य है कि "प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दयाभाव रखे"। वर्ष 1976 में संवैधानिक संशोधन करके अनुच्छेद 48A को शामिल किया गया जिसके अंतर्गत वन, वन्यजीवों सहित पर्यावरण की रक्षा करना एवं इसमें सुधार हेतु उचित कदम उठाना राज्य का कर्तव्य है। वर्ष 2018 में विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन में वैश्विक नेताओं को संबोधित करते हुए, हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा था, "एक राष्ट्र के रूप में, हमें अपने प्राचीन इतिहास एवं मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व की परंपरा पर गर्व है।"

PCA अधिनियम, 1960, हमारे देश में पशु संरक्षण से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण कानून है और यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि इसमें पिछले 60 वर्षों से कोई बदलाव नहीं किया गया है। अब इस कानून के अंतर्गत पशुओं के प्रति क्रूरता के खिलाफ कठोर दंड प्रावधान और इसे पशु संरक्षण हेतु अपडेट करने की तात्कालिक आवश्यकता है। वर्तमान में, पशु क्रूरता करने वाले अपराधी के खिलाफ केवल 10 रुपये के जुर्माने का प्रावधान है। फेडरेशन ऑफ इंडियन एनिमल प्रोटेक्शन ऑर्गनाइजेशन एंड ऑल क्रिएटर्स ग्रेट एंड स्मॉल द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, "वर्ष 2010 से वर्ष 2020 के दौरान, कुल 4,93,910 जानवर इंसानों द्वारा की गयी क्रूरता का शिकार बनें। इनमें अपराधियों द्वारा जानबूझकर अंजाम दी गयी हज़ारों हिंसात्मक घटनाएँ शामिल हैं, जिसके कारण विभिन्न जानवरों को अपनी जान गवानी पड़ी या उन्हें अपूरणीय क्षति हुई"।

PEOPLE FOR
THE ETHICAL
TREATMENT
OF ANIMALS

PETA India
PO Box 28260
Juhu, Mumbai 400 049
(22) 4072 7382
(22) 2636 7383 (fax)

Info@petaindia.org
PETAIndia.com

Affiliates:

- PETA Asia
- PETA Australia
- PETA Foundation (UK)
- PETA France
- PETA Germany
- PETA Netherlands
- PETA US

Registered Office:
F-110, 1st Floor, Jagdamba Tower
Plot No 13, Community Centre
Preet Vihar, New Delhi
110 092

CIN: U74899DL2000NPL103217

इसके अलावा, यह उपयुक्त समय है कि भारत एक प्रगतिशील पहल करते हुए पशु परीक्षणों से संबंधित नीति विकसित करें। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, नियामकों और वैज्ञानिक समुदाय के बीच बढ़ती मान्यता है कि इस तकनीकी रूप से उन्नत युग में, ऑर्गन-ऑन-ए-चिप जैसे उपकरणों के साथ, अनुसंधान और परीक्षण हेतु पशु-आधारित तरीके मानव स्वास्थ्य या पर्यावरण के लिए सही विकल्प नहीं हैं। मानव जीव विज्ञान-आधारित तरीकों की ओर बढ़ते झुकाव के चलते, दुनिया भर में नीति परिवर्तन किया जा रहा। उदाहरण के लिए, यूरोपीय संसद द्वारा पशु प्रयोगों को बंद करने के लिए एक कार्य योजना विकसित करने के पक्ष में मतदान किया गया है।

PETA इंडिया द्वारा रिसर्च मॉडर्नाइजेशन डील (RMD) (अनुलग्नक B) का निर्माण किया गया है, जिसका प्रयोग सरकार द्वारा अनुसंधान एवं परीक्षण हेतु जानवरों के उपयोग को चरणबद्ध तरीके से कम करने और अत्याधुनिक एवं बेहतर गैर-पशु विकल्प अपनाने से संबंधित रणनीति विकसित करने के लिए किया जा सकता है। यह योजना सुनिश्चित करेगी कि भारत द्वारा जैव चिकित्सा अनुसंधान और परीक्षण में होने वाले वैश्विक बदलावों में अपनी प्रबल भागीदारी दर्ज कराई जाए और इससे हमें वैज्ञानिक लाभ के साथ-साथ आर्थिक, सार्वजनिक स्वास्थ्य और पशु कल्याण संबंधी लाभ भी प्राप्त हो। इसलिए, हम आपसे आग्रह करते हैं कि कृपया आप अपने पार्टी के घोषणापत्र में पशु प्रयोगों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने हेतु एक रोडमैप बनाने के लिए प्रतिबद्धता प्रदर्शित करें।

हम विशेष रूप से इन मुद्दों को शामिल करने का अनुरोध करते हैं:

- पशु अधिकार-संबंधित प्रयास (अनुलग्नक A)
- PCA अधिनियम, 1960 में उचित संशोधन जिसके अंतर्गत पशुओं को पर्याप्त रूप से संरक्षण प्रदान करना, पशुओं के प्रति क्रूरता के खिलाफ मज़बूत दंड प्रावधान जोड़ना और पशु क्रूरता करने वाले लोगों पर निजी या व्यावसायिक कारणों से जानवर रखने पर रोक लगाना
- अनुसंधान में पशुओं के उपयोग को कम करने के लिए एक रोडमैप का विकास

हमें आपसे मिलकर और इस अनुरोध पर आगे चर्चा करके एवं आपको अतिरिक्त जानकारी या संसाधन प्रदान करके अत्यंत खुशी होगी।

आभार सहित,



खुशबू गुप्ता
डाइरेक्टर ऑफ एडवोकेसी प्रोजेक्ट्स
PETA इंडिया

संलग्न:

- अनुलग्नक A: घोषणापत्र में शामिल करने के लिए पशु अधिकार से संबंधित सुधार बिन्दु
- अनुलग्नक B: रिसर्च मॉडर्नाइजेशन डील (RMD)

संलग्नक A

पशु अधिकारों के लिए विचार केन्द्रित सुधार एवं घोषणापत्र समावेशन

सामान्य पशु कल्याण

1. "पशु क्रूरता निवारण अधिनियम (PCA) 1960, 60 वर्ष से अधिक पुराना कानून है और अब इसे अपडेट किए जाने का समय आ गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पशुओं को प्रदान की जाने वाली सुरक्षा वास्तव में सही है और उनके साथ क्रूरता करने पर पर्याप्त दंड भी है। इसमें क्रूरता के अनुसार कठोर दंड, कारावास, और दोषियों के लिए जानवर रखने या जानवरों के साथ काम करने पर प्रतिबंध जैसे प्रावधान शामिल होने चाहिए।

स्कूलों में अनिवार्य मानवीय शिक्षा एक दयालु कदम है जिससे समाज को जिम्मेदार बनाने में मदद मिलेगी। मनोविज्ञान एवं अपराध विज्ञान में किए गए शोध से पता चलता है युवा अवस्था में जो लोग जानवरों के प्रति क्रूर होते हैं वह अक्सर इन्सानों को भी नुकसान पहुंचाते हैं। PETA इंडिया भारतीय स्कूलों में 'अनुकंपा नागरिक' or 'Compassionate Citizen' नाम से मुफ्त मानवीय शिक्षा प्रदान करता है जिसके तहत स्कूली बच्चों को जानवरों, स्वयं एक-दूसरे के प्रति तथा जिस वातावरण में हम रहते हैं उसके प्रति दयालु व्यवहार करना सिखाया जाता है। PETA India के इस कार्यक्रम को 'भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड' सहित केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं कई राज्य सरकारों का भी समर्थन प्राप्त है।

प्रयोगों के लिए इस्तेमाल होने वाले जानवर

2. वैश्विक स्तर पर वैज्ञानिकों में इस बात पर सहमति बढ़ रही है कि मानव जैव चिकित्सा एवं नियामक मूल्यांकन हेतु अन्य प्रजातियों पर प्रयोग करने वाली पुरानी शैली एवं तकनीक की तुलना में मानव प्रासंगिक अनुसंधान विधियाँ आर्थिक एवं प्रासंगिक रूप से अधिक अनुकूल हैं। हाल ही में, यूरोपीय संसद के सदस्यों ने जानवरों पर किए जाने वाले प्रयोगों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त किए जाने की कार्य योजना विकसित करने के पक्ष में भारी मतदान किया। भारत, गैर पशु प्रयुक्त अनुसंधान और परीक्षण विधियों को अपनाए जाने के लिए वित्त पोषण को प्राथमिकता देकर और अनुसंधान एवं परीक्षण के क्षेत्र में जानवरों के इस्तेमाल को चरणबद्ध रूप से समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध होकर आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में नेत्रत्व कर सकता है या फिर इस काम में कम से कम अन्य से पीछे नहीं रह सकता।

भोजन के लिए इस्तेमाल होने वाले जानवर

3. पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 के नियमों में किसी भी संसोधन के द्वारा पशुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने या फिर इस कानून में कोई भी नया नियम जोड़ने हेतु, मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण और पशुओं की सुरक्षा के लिए जानवरों से प्राप्त होने वाले खाद्य पदार्थों की खपत को कम करने वाली योजनाएँ शुरू की जानी चाहिए।

इस तरह के खाद्य पदार्थों के उत्पादन से पशुओं को अत्यधिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है। भोजन हेतु पाले जाने वाले पशुओं के पालन पोषण से वैश्विक स्तर पर होने वाले मानव प्रेरित कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग 14.5% से 18% का उत्सर्जन होता है जो कि कुछ अनुमानों में वैश्विक स्तर पर सभी तरह के परिवहन से होने वाले ग्रीनहाउस उत्सर्जन से अधिक है। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं के अनुसार वीगन (पौधों पर आधारित) भोजन अपनाने से एक व्यक्ति सन 2050 तक 81 लाख जीवन बचा सकता है, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को 70% तक कम कर सकता है और प्रतिवर्ष 1000 बिलियन डॉलर तक की कीमत की स्वास्थ्य संबंधी बचत कर सकता है। और तो और, एकेडमी ऑफ न्यूट्रीशियन एंड डायटेटिक्स का कहना है कि वीगन लोगों को हृदय रोग, टाइप 2 मधुमेह, उच्च

रक्तचाप, कुछ प्रकार के कैंसर और मोटापे सहित कई स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों के खतरे का जोखिम कम होता है और जैसा कि जामा इंटरनल मेडिसिन पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन में भी पाया गया है कि मांस खाने वालों की तुलना में वीगन लोग औसतन अधिक लंबे समय तक जीवित रहते हैं।

जर्मनी, नीदरलैंड, न्यूजीलैंड, स्पेन और स्विट्जरलैंड जैसे देशों ने मांस, अंडे या डेयरी पर कर लगाने के बारे में चर्चा की है या कदम उठाए हैं या उनके उत्पादन के कारण होने वाले उत्सर्जन को दूर करने के लिए वित्तीय पहलुओं पर विचार किया है। न्यूजीलैंड के स्वास्थ्य मंत्रालय ने सिफ़ारिश की है कि जनता अधिक से अधिक वीगन भोजन का सेवन करे, चीन ने अपने मांस की खपत को 50% तक कम करने का निर्णय लिया है और जर्मनी के पूर्व पर्यावरण मंत्री ने बैठकों एवं कार्यक्रमों के दौरान मांस के खाद्य पदार्थों के सेवन पर प्रतिबंध लगा दिया है। इस बीच कनाडा ने अपने भोजन गाइड में से डेयरी उत्पादों की सिफ़ारिशों को हटा दिया है।

वैश्विक स्तर पर खाद्य अर्थव्यवस्था के मामले में जानवरों, मानव स्वास्थ्य, किसानों, उधमियों, और पर्यावरण को लाभ पहुँचाने हेतु भारत के योगदान को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। प्रीसेंटेस रिसर्च के अनुसार, वर्ष 2030 तक वीगन भोजन का वैश्विक बाज़ार 65.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर के बराबर होने का अनुमान है। भारत, चूंकि यह 45,000 विविध पौधों की विभिन्न प्रजातियों का घर है, इसलिए पौधो पर आधारित दूध, अंडे, मूंग बीन्स व माँस जैसे उत्पादों के लिए वैश्विक स्तर पर बढ़ रही रूचि का लाभ उठान की अच्छी स्थिति में है।

कपड़ों के लिए इस्तेमाल होने वाले जानवर

4. फैशन के मामले में गौजातीय चमड़े को सबसे अधिक प्रदूषण फैलाने वाली सामग्री का दर्जा दिया गया है। इस मामले में लोगों की बढ़ती जानकारी, चमड़े के लिए गायों और उनके जैसे अन्य जानवरों के साथ होने वाली बर्बरता के प्रति सजगता के चलते अधिक से अधिक उपभोक्ता अब वीगन चमड़े का चयन कर रहे हैं जिसमें कृत्रिम चमड़े के साथ साथ पौधों से बने चमड़े, अनानास के पत्तों, मंदिरों से पुराने सूखे फूलों, मशरूम एवं सेब के कोर से बने वीगन चमड़े के उत्पाद शामिल हैं। इस तरह के पौधे भारत में अत्यधिक मात्रा में उगते हैं। मेघालय सरकार ने पहले ही घोषणा कर दी है कि वह अनानास चमड़ा उद्योग स्थापित करने पर विचार कर रहे हैं। MarketsandMarkets के अनुसार पौधो पर आधारित चमड़े का वैश्विक बाज़ार वर्ष 2027 तक लगभग 97 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक होने का अनुमान है। वीगन चमड़े खासकर पौधो पर आधारित चमड़े के उत्पादन पर ध्यान देने से भारत के जानवरों, पर्यावरण और मानव आबादी को लाभ मिलेगा।

मनोरंजन के लिए इस्तेमाल होने वाले जानवर

5. वर्ष 1998 में केंद्र सरकार ने भालू, बंदर, बाघ, तेंदुआ, और शेरों को प्रदर्शन करने वाले जानवरों के रूप में प्रदर्शित करने पर रोक लगा दी थी। वर्ष 2011 में इस सूची में साड़ों को भी जोड़ दिया गया, हालांकि, हमारी राष्ट्रीय विरासत पशु होने के बावजूद, हाथियों को अभी तक यह सुरक्षा नहीं प्रदान की गयी है। वर्ष 2016 में AWBI ने केंद्र सरकार को प्रदर्शन के लिए हाथियों के प्रशिक्षण, प्रदर्शनी और इस्तेमाल पर रोक लगाने की सलाह दी थी। इंसानी मनोरंजन के लिए जंजीरों में जकड़े जाने, मार पीट सहने और गुलाम बनाए जाने पर हाथियों को शारीरिक एवं मानसिक दोनों तरह से पीड़ा होती है।

आज दुनिया भर के देशों में सर्कसों में जानवरों के इस्तेमाल पर विभिन्न प्रकार के प्रतिबंध हैं और कई देशों ने सर्कसों में सभी तरह के जानवरों के इस्तेमाल पर रोक लगा दी है। भारत में, सर्कसों में जानवरों के इस्तेमाल को प्रतिबंधित करने के लिए प्रदर्शनकारी पशु (पंजीकरण) (संशोधन) नियम, 2018 का प्रारूप तैयार किया गया है और अब इसे पारित भी किया जाना चाहिए।

पिंजरोँ में बंद रहने से पक्षी उदास हो जाते हैं और जीवन जीने की इच्छा छोड़ देते हैं, कई खुद को चोटिल कर लेते हैं और मानसिक रूप से तनावग्रस्त होने के लक्षण प्रदर्शित करते हैं। चूंकि पक्षियों की स्वदेशी एवं विदेशी प्रजातियाँ 'वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972' (2022 में संशोधित), और 'पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960' के तहत संरक्षित हैं, इसके अनुसार पक्षियों को ऐसे पिंजरोँ में कैद करके पालतू बनाकर रखना जो पक्षियों को पर्याप्त क्रियाएं करने का अवसर नहीं देता और उड़ने जैसी स्वाभाविक जरूरत से वंचित रखता है, वह स्पष्ट रूप से निषिद्ध है। AWBI ने एक एडवाइजरी जारी की है और अरुणाचल प्रदेश, चंडीगढ़, हरियाणा, और सिक्किम सहित कई राज्यों ने पक्षियों को पिंजरोँ में रखने के खिलाफ आदेश जारी किए हैं।

समुदायिक एवं साथी पशु

6. पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रमों के माध्यम से नगर पालिकाओं को सामुदायिक जानवरों की बढ़ती आबादी पर रोक लगाने की आवश्यकता है। हालांकि, ब्रीडर्स और पालतू जानवरों की दुकानों द्वारा कुत्तों एवं बिल्लियों की बिक्री के परिणाम स्वरूप इन जानवरों पर क्रूरता, जानवर रखने की लालसा से प्रेरित खरीद और बाद में उन्हें त्याग दिये जाने जैसी गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है क्योंकि जानवरों को बिना किसी जांच के बेचा जाता है। चूंकि जानवरों से प्रेम करने वाले अच्छे घरों की संख्या सीमित है इसलिए पालतू जानवरों की बिक्री करने वाली दुकानों और ब्रीडर्स ने कुत्तों एवं बिल्लियों की जनसंख्या वृद्धि में अत्यधिक योगदान दिया है। पालतू जानवरों की दुकानों एवं ब्रीडर्स को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए और जनता को अत्यधिक बोझ वाले पशु आश्रयों से कुत्तों एवं बिल्लियों को गोद लिए जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

The Research Modernisation Deal

2021



© iStock.com / ClaudioVentrella

PHASELLUS NEC
IN HAC HABITA
TUMST. SED EFF
CULIS TINCIDUNT
ACCOMBOD. TEL
FENGAT PHARE
PIBUS CRAS. S
LECTUS. SED S
BODI FIBIBUS
SQUE. EMPER
TENTUS. METUS
PROIN POSUERE
VIVAMUS ORCI
VITRE ULTRICES
VELIT. MORBI SE
CONSECTETUR
MAURIS AC LIBE
RECT. POSUE ET

S NEC VESTIBULUM LEO. IN HAC HABITA TUMST. SED EFFICITUR DEL IN EX. IACULIS TINCIDUNT. AC VIBIS ANTE.
PHARETRA. CRAS VEL DAPIBUS E. SED EBET GR. DA LECTUS. SED SEMPER MAURIS. NEE. DODI. POSUERE. VITRE. PELLEN
METUS VOLUTPAT EGET. PROIN POSUERE POSUERE COMMOD. VIVAMUS ORCI. NOLLA. VULPUTATE. VITRE. ULTRICES. QUIS. BIBENDU
IPSUM CONSECTETUR PELLENTESSQUE. MAURIS AC LIBERO SAGITTIS. LABEET. POSUE ET. DICTUM. DIAM.
45198256379219005461



People for the Ethical Treatment of Animals (PETA) India

People for the Ethical Treatment of Animals (PETA) India is an animal rights organization dedicated to establishing and protecting the rights of all animals. Please visit www.petaindia.com for more information.

PETA India encourages the sharing and downloading of the content within this document for personal and non-commercial use. If you wish to use any of the document materials (including text, images, photographs, etc.) for any other purpose, you must obtain our express written consent before doing so by contacting info@petaindia.com.

© PETA India

Version 1.1 • last updated 19 May 2020

Executive Summary

Astonishing advances in research technology are already revolutionising biomedical research and regulatory testing, and even more progress is expected in the coming years.

The transition away from research relying on the use of animals to model human disease or as tools to predict human responses to drugs or other substances and towards human biology-based methods is changing policy and practice around the globe. Research funders are becoming increasingly aware that failing animal methods used to establish both efficacy and toxicology risk are holding back the development of potential cures. In the existing animal research paradigm, novel drugs take 10 to 15 years to reach the market at a cost of over \$2 billion, and over 95 per cent of them fail when they reach clinical trials. These failure rates cannot be supported economically or ethically, and efforts to transform the research environment are urgently needed.

Consider the following key points:

- Systematic reviews published in peer-reviewed journals document limitations in translating results from studies using animals to treatments for humans for numerous disease areas. Fewer than 10 per cent of highly promising basic science discoveries enter routine clinical use within 20 years.
- Between 50 and 89 per cent of preclinical research is not reproducible, with animal experimentation implicated as a serious problem area.
- Major scientific breakthroughs in disease areas such as diabetes and breast cancer have relied on studies of human disease in patients; they would not have been possible using animal research.

Along with growing evidence that experiments on animals do not faithfully translate to treatments for humans – as well as the development and implementation of technology that supplants animal use in laboratories – our society has also witnessed growing moral concern regarding the practice of using animals in experiments.

Public, private, and charitable funding bodies must cut budgets for experiments using animals and redirect funds to non-animal methods. In order to end the use of animals in experiments, we recommend the development of a strategy that includes the following critical steps:

1. Immediately eliminate animal use in areas for which animals have already been shown to be poor and unreliable predictors for humans and have impeded progress.
2. Conduct critical scientific reviews to identify the areas in which the use of animals can be ended immediately
3. Implement an ethical harm-benefit analysis system.
4. Harmonise and promote international acceptance of non-animal testing methods for regulatory toxicity testing requirements.
5. Redirect funds from animal studies to the development of non-animal methods.



Table of Contents

I. Introduction	5
II. Limited Predictive Value of Research Using Animals	6
III. The Need for a Paradigm Shift	7
IV. Opportunities for Economic Advancement	7
V. Regulatory Opportunities for Humane Toxicity Assessment	8
VI. Public Opinion and Animal Sentience	9
VII. Leadership	9
VIII. Plan for Action: Recommendations to Modernise Scientific Research and Assessment	11
1. Immediately eliminate animal use in areas for which animals have already been shown to be poor and unreliable predictors for humans and have impeded progress.	11
2. Conduct critical scientific reviews to identify the areas in which the use of animals can be ended immediately.	11
3. Implement an ethical harm-benefit analysis system.	12
4. Harmonise and promote international acceptance of non-animal testing methods for regulatory toxicity testing requirements.	12
5. Redirect funds from animal studies to the development of non-animal methods.	12
References	14
Appendices	17



I. Introduction



The Indian Department of Science and Technology's (DST) gross expenditure on research and development (R&D) has consistently increased over the years and more than quadrupled from Rs 24,117.24 crores in 2004–2005 to Rs 1,04,864.03 crores in 2016–2017.¹ A percentage of this funding is used for animal experimentation, even though an increasing number of studies show – and more and more scientists acknowledge – that the results of experiments on animals are often not reproducible or translatable to humans. The failure of animal testing is also evident in the fact that more than two decades of drug discovery in India have not led to a single new chemical entity that has entered national and global markets from India, although a few molecules have been out-licensed to pharmaceutical companies globally.²

The US National Institutes of Health (NIH), the world's largest funder of biomedical research, reports that "failure rates [for novel drugs] occur in about 95 percent of human studies", even though these drugs showed success in preclinical experiments using animals.³ A 2015 investigation concluded that between 50 and 89 per cent of all preclinical research, a large part of which involves animal testing, could not be reproduced. At the most conservative US estimate, the abundant failure to reproduce preclinical research results in approximate annual spending of \$28 billion on misleading experimentation.⁴

Acceptance of non-animal techniques in one region or country is an open door to international harmonisation

and the wider statutory elimination of animal experiments. Over the past two decades in particular, significant progress has been seen in the development, validation, implementation, and regulatory acceptance of non-animal technology for the assessment of human health endpoints such as skin irritation and corrosion, serious eye damage, skin sensitisation, skin absorption, and phototoxicity. We've also seen an end to notoriously cruel international test guidelines such as the Organisation for Economic Co-operation and Development (OECD) Test No 401, also known as the Lethal Dose 50 (LD₅₀) test. Opportunities exist to increase and harmonise the use of validated non-animal test methods for regulatory assessment, and by taking

them, we can achieve better protection of human health and the environment within the appropriate legal framework.

In order to work towards this goal, we present in this report a roadmap for replacing the use of animals in experimentation. We identify a number of strategic priorities and append further information regarding areas of both regulatory (government-required) and non-regulatory research where there are opportunities for the immediate and near-future replacement of animal use. We have also included information outlining areas in which further development, validation, and implementation of non-animal methods are required.



II. Limited Predictive Value of Research Using Animals



A great deal of scholarly research in the last 15 years shows that animal studies are flawed and divert both monetary and intellectual resources from methodologies better suited to curing human disease. There are many factors at play in the failure of animal experimentation to predict human outcomes reliably.⁵ Critically, intrinsic biological and genetic differences between species contribute significantly to problems in extrapolating results from non-human animals to humans, even in the best controlled and best-executed study designs.

A stunning 2014 analysis published in *The BMJ* found that – contrary to public perception – studies using animals have not furthered knowledge in the field of human health or led to the development of treatments for conditions affecting humans.⁶ The authors note:

If research conducted on animals continues to be unable to reasonably predict what can be expected in humans, the public’s continuing endorsement and funding of preclinical animal research seems misplaced.

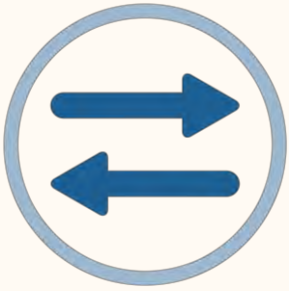
The difficulties in applying data derived from animals to human patients are compounded by the confinement and unnatural conditions of laboratory life,

which thwart animals’ ability to engage in natural behaviour.⁷ This deprivation contributes to their stress and alters their physiology and neurobiology, causing them to exhibit various psychopathologies.^{8,9,10} Importantly, the fact that animals in laboratories have altered physiology and neurobiology means that they will not be good “models” for their counterparts in the wild. A mouse in a laboratory will not respond to a drug in the same way that a mouse in a field would. One then has to ask, how does this biologically distinct mouse reliably represent the biology of human beings?

The opposite is also true: therapies that have not worked well in animals have

sat useless on the shelf while patients have gone without life-saving treatment. For example, penicillin was first tested in rabbits in 1929, but as it had no apparent effect in this species, it was ignored for more than a decade – costing countless human lives. The first human clinical trials weren’t conducted until the 1940s.^{11, 12} Researchers later remarked on the good fortune that it was not first tested in guinea pigs, for whom the antibiotic is lethal. Had experimenters seen this result, penicillin may have never been tried in humans.^{13,14}





III. The Need for a Paradigm Shift

Research involving animals is impeding the development of treatments and cures for human ailments. Many within the scientific community have begun to advocate for change.

In support of using an evidence-based approach to accelerating the delivery of useful drugs to the patients who need them, 15 Vanderbilt University researchers published a 2017 article calling for the elimination of experiments using animals where there is clear evidence that animal “models” are not useful or predictive of human disease.¹⁵ As another

example, *The Turkish Journal of Gastroenterology* officially banned the publication of studies involving experiments on animals from its pages. Journal editor Dr Hakan Şentürk wrote that the new policy represents “growing concern about the lack of applicability of animal research to humans.”¹⁶

Significantly, a move away from animal-based research

will allow for substantial growth in the science and technology sectors and for a faster return on investment in drug research and development.¹⁷ An evolution of research funding priorities toward human-relevant methods will get treatments to the patients who need them more safely and likely in less time.^{18,19}

IV. Opportunities for Economic Advancement

By mandating a move away from animal experimentation and towards advanced scientific methods, India has the opportunity to expand job growth rapidly in science and technology and reduce health-care costs for the entire population. The country is among the top 12 biotechnology hot spots in the world and ranks third in the Asia-Pacific region, mainly because of its more than 600 core biotechnology companies and 2,600 biotech start-ups.

India also has the second-highest number of US Food and Drug Administration (FDA)–approved manufacturing plants outside the US and is currently home to more than 523 FDA-approved drug-manufacturing facilities. The Indian biotechnology

industry that was valued at \$64 billion in 2019 is expected to reach \$150 billion by 2024–2025.^{20,21}

As Meigs and colleagues report in their review, “Animal Testing and Its Alternatives – the Most Important Omics Is Economics”, “an economy of

alternative approaches has developed that is outperforming traditional animal testing”.²² Using the traditional process, bringing a new drug to market may cost up to \$2 billion and take as long as 15 years.²³ The high cost of R&D may be transferred to patients who



are compelled to pay increasingly unmanageable prices for prescription drugs.²⁴ With the use of human-relevant technology in place of expensive, time-consuming, and inaccurate animal experiments, the cost of drug discovery has the potential to decrease dramatically.

The market for human-based *in vitro* technology for biomedical research and testing is growing rapidly. According to a report by Grand View Research, Inc, “The global *in-vitro* toxicology testing market is expected to reach USD 44.7 billion by 2022 growing at an estimated CAGR [compound annual growth rate] of 10.5% from 2015 to 2022 This expected rise in demand can be ascribed to novel and promising technologies in analytical laboratories.”²⁵ For example, in the US, the Boston-based start-up Emulate, Inc, raised \$36 million in financing to expand its organ-on-a-chip technology, which is being used by AstraZeneca, Roche, Merck, Johnson & Johnson, and others to predict the safety and efficacy of drug candidates more accurately.^{26,27} New technology will streamline drug development, making the process safer, cheaper, and more effective.

V. Regulatory Opportunities for Humane Toxicity Assessment

The past quarter-century has seen a revolution in the way in which chemicals are tested – non-animal tests are rapidly replacing animal tests. This is the result of our better understanding of biological processes and the emergence of new technology, which has



allowed for the development of testing methods that can look directly at cellular mechanisms rather than at the crude, inscrutable results that come from using animals. It is also the result of public pressure and, as explained below, dissatisfaction among scientists with the results from animal tests. Concurrently, there is growing recognition among regulators and the regulated community that animal tests do not adequately protect either human health or the environment and that “the current approach is time-consuming and costly, resulting in an overburdened system that leaves many chemicals untested, despite potential human exposure to them”.²⁸

In 2007, the US National Academies of Sciences, Engineering, and Medicine published a landmark report titled “Toxicity Testing in the 21st Century: A Vision and a Strategy”. The report states that advances in toxicogenomics, bioinformatics, systems biology, epigenetics, and computational toxicology could transform toxicity testing from a system based on whole-animal testing to one founded primarily on *in vitro* methods that evaluate changes in biologic processes using cells, cell lines, or cellular components, preferably of human origin. The proposed changes will generate better data on the potential risks humans face from environmental chemicals, building a stronger scientific foundation that can improve regulatory decisions to mitigate those risks and reducing the time, money, and number of animals used for testing.²⁹



VI. Public Opinion and Animal Sentience

Public opposition to animal research is a major factor driving policy change. A 2009 YouGov survey conducted in six EU countries found overwhelming opposition to animal experiments – 84 per cent of respondents were in favour of prohibiting all experiments in which animals would be subjected to severe pain and suffering.³⁰ Public support for investment in non-animal methods is also high – 74 per cent of respondents to a UK survey backed increased efforts to develop alternatives to animal use.³¹



Given the growing recognition of animal sentience, public opposition to animal experimentation is not surprising. In 2012, a prominent international group of neuroscientists issued *The Cambridge Declaration on Consciousness*, which definitively stated that “humans are not unique in possessing the neurological substrates that generate consciousness” and that, like humans, “[n]on-human

animals have the ... capacity to exhibit intentional behaviours”.³²

More than 150 academics, intellectuals, and writers have also backed a report by the Oxford Centre for Animal Ethics that condemns experiments on animals as both morally and scientifically indefensible. “The deliberate and routine abuse of innocent, sentient animals involving harm, pain, suffering, stressful

confinement, manipulation, trade, and death should be unthinkable. Yet animal experimentation is just that: the ‘normalisation of the unthinkable’,” write the report’s authors. They conclude that experimenting on animals contradicts what we now know about animals’ ability to experience not only pain but also shock, fear, foreboding, trauma, anxiety, stress, distress, anticipation, and terror.³³



VII. Leadership

There is movement internationally that reflects the growing consensus in the scientific community that using animals in basic biomedical research or for regulatory assessment requirements is neither ethical nor efficacious.

In 2016, the Dutch government announced its plan to phase out toxicology tests for chemicals, food ingredients, pesticides, veterinary medicines, and vaccines by 2025. This was

after the Dutch National Committee for the Protection of Animals Used for Scientific Purposes stressed the need for a paradigm shift away from procedures on animals. Its

report on the Netherlands’ transition to non-animal research included objectives for the country to become an international leader in the field of innovation without animals in applied and



translational research.³⁴ This led to the initiation, in 2017, of the Transition Programme for Innovation without the use of animals (TPI), which aims to bring together regulators, scientists, funding bodies, and industry and offer them a platform for identifying and developing innovative activities within their fields that will increase the pace of the transition towards animal-free innovation. The TPI is supervised by the Minister of Agriculture, Nature and Food Quality. In 2019, the US Environmental Protection Agency announced that it would eliminate all funding of and requests for tests on mammals by 2035, reduce testing by 30% by 2025, provide funding for non-animal test method development, and hold an annual conference to discuss the advancement of non-animal testing.³⁵

In order to advance animal-free testing, the Indian

Council of Medical Research (ICMR) published a paper titled “Need for Alternatives to Animals in Experimentation: An Indian Perspective”, which encourages the use of a 21st century toolbox of human-relevant, non-animal techniques to make India self-reliant in the development of non-animal technologies. The paper sheds light on the current status of non-animal testing in the country, identifies gaps, and presents a roadmap for addressing the remaining gaps.³⁶ ICMR also plans to establish a Centre of Excellence in Human Pathway-Based Biomedicine and Risk Assessment in Hyderabad for the advancement of human-specific approaches in medical research and product safety testing.

The current COVID-19 pandemic presents a unique opportunity to set new and improved standards for

testing the safety and efficacy of new therapeutics. Currently, regulatory agencies and governing bodies in India³⁷ and around the world are demonstrating that regulations requiring extensive animal testing before human clinical trials are unnecessary barriers to introducing lifesaving drugs. For example, the Indian Central Drugs Standard Control Organisation (CDSCO) has approved open randomised clinical trials to study the efficacy and safety of convalescent plasma therapy.³⁸ Moreover, to encourage the development of a vaccine or treatment for COVID-19, CDSCO has made the allowance that “[d]ata requirement for animal toxicity study, clinical study, stability study etc. may be abbreviated, deferred, or waived on case to case basis”.³⁹





VIII. Plan for Action: Recommendations to Modernise Scientific Research and Assessment

There is a need and an abundance of opportunities for India to shift the regulatory testing and biomedical research paradigm towards innovative animal-free techniques and become a world leader in the application of such methods. The country has the necessary academic and industrial strength to develop and employ new non-animal forms of technology, which could position it as a global powerhouse in this area. Implementation of the following strategies will generate rapid, economical, and reproducible data; improve regulatory decision-making; reduce the rate of clinical trial failures; and reduce the ethical burden of using animals in experiments.

1. Immediately eliminate animal use in areas for which animals have already been shown to be poor and unreliable predictors for humans and have impeded progress.

Multiple reviews have documented the overwhelming failure of animal use to benefit human health in specific areas, including neurodegenerative diseases, neuropsychiatric disorders, cardiovascular disease and stroke, cancer, diabetes and obesity, inflammation and immune responses, HIV/AIDS research, addiction studies, trauma research, and medical training. As such, animal experiments in these research areas should be ended as soon as possible and replaced with more effective and efficient non-animal research methods. Please find appended further elaboration and recommendations on these areas.

2. Conduct critical scientific reviews to identify the areas in which the use of animals can be ended immediately

For those areas of investigation where there is still some question as to whether the use of animals is beneficial, a thorough systematic review should be conducted to determine the efficacy of using animals. Systematic reviews, which critically analyse multiple research studies, are the first step in assessing the effectiveness of animal research. Some countries, such as the Netherlands, require that systematic reviews be conducted before animal studies can receive funding. Furthermore, Article 58 of Directive 2010/63/EU mandates that the European Commission conduct periodic reviews concerning the use of animals in scientific procedures, thus providing a clear mechanism for advancing the replacement of animals in scientific procedures.

It is recommended that the Committee for the Purpose of Control and Supervision of Experiments on Animals (CPCSEA) meticulously maintain and publish information on the number of animals used in experiments and the results of these experiments. Moreover, CPCSEA and funding agencies such as the DST, ICMR, and Department of Biotechnology (DBT) should conduct critical scientific analyses of animal research and funding proposals by determining their scientific relevance and reject those in areas where non-animal methods exist.



3. Implement an ethical harm-benefit analysis system.

Directive 2010/63/EU on the protection of animals used for scientific purposes requires that applications to conduct research using animals be evaluated to ensure full use of available alternative techniques and test methods as well as consideration of whether the expected outcome of the research can justify the level of pain, distress, and suffering likely to be experienced by animals.⁴⁰ While these project evaluations are generally conducted through government bodies, they at least provide a means by which ethical evaluations can take place.

Likewise, in order to improve the robustness of the regulatory system, the UK government's Animals in Science Committee has recommended that the prospective harm-benefit analysis should be improved and that societal concerns about animal research should be explored and addressed. Furthermore, the committee recommended that methods to avoid those procedures predicted to cause severe pain, distress, and lasting harm should be explored – the ultimate goal being the elimination of these types of procedures in their entirety.

Section 17(1) of The Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960, requires “that animals are not subjected to unnecessary pain or suffering before, during or after the performance of experiments on them”.⁴¹ However, the current system does not adequately determine an animal's suffering in experiments, and therefore, this assessment is not possible.

4. Harmonise and promote international acceptance of non-animal testing methods for regulatory toxicity testing requirements.

The regulatory acceptance of non-animal techniques in one region or country is an open door to international harmonisation and the wider statutory elimination of animal testing methods. As a signatory to the OECD Mutual Acceptance of Data, India must accept the data generated by other OECD member countries in order to avoid duplicating the generation of toxicity data. The ICMR paper noted, “[Human-derived, three-dimensional] models are rapidly evolving and replacing animal studies either to reduce or minimize animal usage in research. In addition, regulatory agencies in the western world are very receptive to the evolving novel, non-animal technologies to replace animal studies. Collaborative efforts between regulatory agencies, academia and industry in the western countries are simply revolutionizing the development of human-derived, non-animal technologies, not only for less animal dependence but also to improve the successful translational outcomes in humans.”⁴²

We advocate that national and international regulatory bodies and standards organisations liaise with industry, research agencies, and relevant NGOs worldwide to establish and promote clear paths to the validation and harmonisation of non-animal techniques for regulatory testing requirements.

5. Redirect funds from animal studies to the development of non-animal methods.

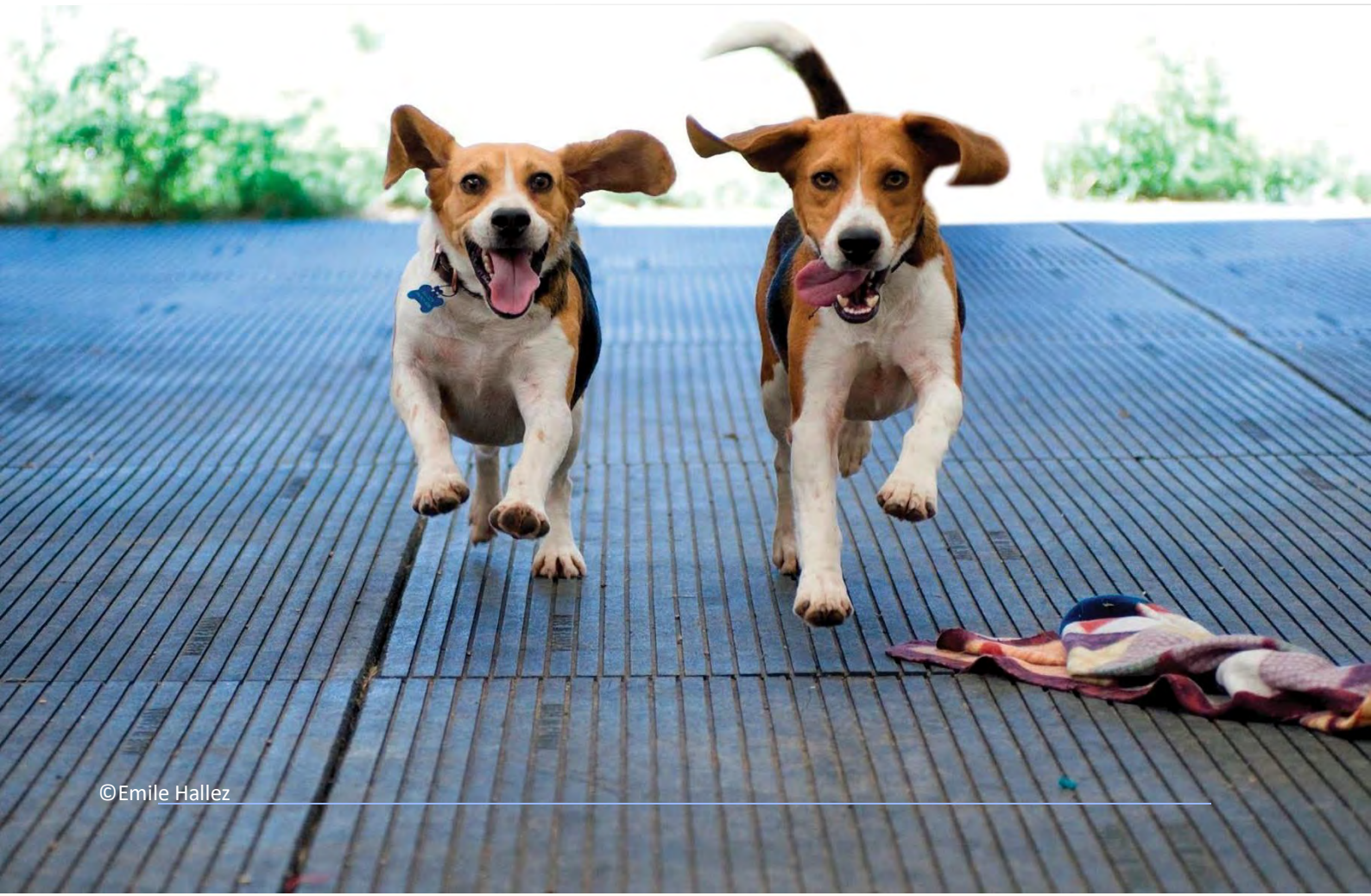
Indian researchers are involved in the advancement of animal-free tests. For example, various protocols have been standardised for efficient generation of three-dimensional spheroids using hepatic cell lines⁴³ and human umbilical cord mesenchymal stem cells⁴⁴ derived hepatospheroids as *in vitro* models for routine drug metabolism and hepatotoxicity testing – and three-dimensional bio-printed tissues and organs such cartilage, liver, and skin are being successfully generated.^{45,46,47} *In silico* models have also been routinely employed for assessing the ecotoxicological risk of a wide



range of chemicals^{48,49,50} and for identifying and designing molecules as inhibitors or vaccines against various therapeutically important drug targets.⁵¹ A predictive, comprehensive system biology tool, eSkIN, has been developed by the Indian Council of Science and Industrial Research – Institute of Genomics and Integrative Biology (CSIR-IGIB) and Pune-based firm Persistent System to ascertain the efficacy and adverse effects of chemicals used by cosmetics and pharmaceutical companies.⁵²

For these benefits to be realised, these models must be scientifically validated, rapidly scaled up for industrial use, and fully integrated into the pharmaceutical and chemical development pipelines. An ICMR paper states, “It is important that the Government encourages the creation of ‘Centers of Excellence (COE)’ where ‘Alternatives to Animals’ research in India can be compared and compete with the elite COE in western countries. ... Funding for research focusing on human-based biology, rather than ‘improved’ animal models, should be prioritized.” The authors add, “Government funding agencies should fund private sectors with these kinds of innovations in alternatives to animal technology startups to give the necessary boost for many of the concepts to grow to a prototype stage.”⁵³

National and international institutes must take the next step and end the funding of crude experiments that have failed to provide effective treatments and cures. With greater investment in innovative non-animal methods and bold policy initiatives, far more promising cures and treatments for humans can be developed. This will also alleviate the almost unimaginable suffering of millions of animals.



References

- ¹Government of India. Ministry of Science & Technology. Department of Science & Technology. Research & Development Statistics at a Glance, 2017-18. <http://www.nstmis-dst.org/Pdfs/Statistics-Glance-2017-18.pdf>. Published December 2017. Accessed 12 May 2020.
- ²Differding E. The drug discovery and development industry in India – two decades of proprietary small-molecule R&D. *ChemMedChem*. 2017;12(11):786-818.
- ³National Center for Advancing Translational Sciences (NCATS). About the NCATS. <https://ncats.nih.gov/about>. Updated 9 November 2018. Accessed 12 May 2020.
- ⁴Freedman LP, Cockburn IM, Simcoe TS. The economics of reproducibility in preclinical research. *PLOS Biol*. 2015;13(6):e1002165.
- ⁵Messina M, Wu AH. Perspectives on the soy-breast cancer relation. *Am J Clin Nutr*. 2009;89(5):1673S-1679S.
- ⁶Pound P, Bracken MB. Is animal research sufficiently evidence-based to be a cornerstone of biomedical research? *BMJ*. 2014;348:g3387.
- ⁷Milani-Nejad N, Janssen PM. Small and large animal models in cardiac contraction research: Advantages and disadvantages. *Pharmacol Ther*. 2014;141(3):235-249.
- ⁸Barter P, Rye KA. Cholesteryl ester transfer protein inhibition to reduce cardiovascular risk: Where are we now? *Trends Pharmacol Sci*. 2011;32(12):694-699.
- ⁹Chandrasekera PC, Pippin JJ. The human subject: An integrative animal model for 21st century heart failure research. *Am J Transl Res*. 2015;7(9):1636-1647.
- ¹⁰Menon NV, Tay HM, Pang KT, *et al*. A tunable microfluidic 3D stenosis model to study leukocyte-endothelial interactions in atherosclerosis. *APL Bioengineering*. 2018;2:016103.
- ¹¹Fleming A. On the antibacterial action of cultures of a penicillium, with special reference to their use in the isolation of B. influenzae. *Br J Exp Pathol*. 1929;10(3):226-236.
- ¹²Greek R, Hansen LA. The strengths and limits of animal models as illustrated by the discovery and development of antibacterials. *Biol Sys*. 2013;2(2):109.
- ¹³Florey H. The advance of chemotherapy by animal experiment. *Conquest*. 1953;41:12.
- ¹⁴Koppanyi T, Avery MA. Species differences and the clinical trial of new drugs: A review. *Clin Pharmacol Ther*. 1966;7:250-270.
- ¹⁵Pulley JM, Jerome RN, Zaleski NM, *et al*. When enough is enough: Decision criteria for moving a known drug unto clinical testing for a new indication in the absence of preclinical efficacy data. *Assay Drug Dev Technol*. 2017;15(8):354-361.
- ¹⁶Şentürk H. Moving beyond animal models. *Turk J Gastroenterol*. 2015;26:A-IX.
- ¹⁷Meigs L, Smirnova L, Rovida C, *et al*. Animal testing and its alternatives – the most important omics is economics. *ALTEX*. 2018;35(3):275-305.
- ¹⁸Kramer LA, Greek R. Human stakeholders and the use of animals in drug development. *Business and Society Review*. 2018;123(1):3-58.
- ¹⁹Piesing M. How tech could spell the end of animals in drugs testing. *The Guardian*. <https://www.theguardian.com/science/2014/aug/23/tech-end-animals-drugs-testing>. Published 23 August 2014. Accessed 12 May 2020.
- ²⁰Invest India. National Investment Promotion and Facilitation Agency. <https://www.investindia.gov.in/sector/biotechnology>. Updated 18 February 2020. Accessed 12 May 2020.
- ²¹Make in India. Biotechnology. <https://www.makeinindia.com/sector/biotechnology>. Accessed 12 May 2020.
- ²²Meigs *et al*.
- ²³NCATS.
- ²⁴Siddiqui M, Rajkumar SV. The high cost of cancer drugs and what we can do about it. *Mayo Clin Proc*. 2012;87(10):935-943.
- ²⁵GlobeNewswire. In vitro toxicology testing market to rise at an estimated CAGR of 10.5% from 2015 to 2022 worldwide: Grand View Research, Inc. <https://www.globenewswire.com/news-release/2016/06/07/846558/0/en/In-vitro-Toxicology-Testing-Market-To-Rise-At-An-Estimated-CAGR-Of-10-5-From-2015-To-2022-Worldwide-Grand-View-Research-Inc.html>. Published 7 June 2016. Accessed 12 May 2020.
- ²⁶Vinluan F. Emulate adds \$36M to expand “organ chip” drug research technology. Xconomy. <https://xconomy.com/boston/2018/06/19/emulate-adds-36m-to-expand-organ-chip-drug-research-technology>. Published 19 June 2018. Accessed 12 May 2020.



- ²⁷Barrile R, van der Meer AD, Park H, *et al.* Organ-on-chip recapitulates thrombosis induced by an anti-CD154 monoclonal antibody: Translation potential of advanced microengineered systems. *Clin Pharmacol Ther.* 2018;104(6):1240-1248.
- ²⁸National Academies of Sciences, Engineering, and Medicine. Report calls for new directions, innovative approaches in testing chemicals for toxicity to humans. <http://www8.nationalacademies.org/onpinews/newsitem.aspx?RecordID=11970>. Published 12 June 2007. Accessed 12 May 2020.
- ²⁹National Research Council. Toxicity Testing in the 21st Century: A Vision and a Strategy. <https://www.nap.edu/catalog/11970/toxicity-testing-in-the-21st-century-a-visionand-a>. Accessed 12 May 2020.
- ³⁰Statista. Einstellung der Bevölkerung ausgewählter europäischer Länder zu Tierversuchen. <https://de.statista.com/statistik/daten/studie/252053/umfrage/investitionen-von-kosmetikherstellern-fuer-tierversuchsfreie-forschung/>. Published 2007. Accessed 15 November 2018.
- ³¹Ipsos MORI. Attitudes to animal research in 2016. <https://www.ipsos.com/ipsos-mori/en-uk/attitudes-animal-research-2016>. Published 15 September 2016. Accessed 12 May 2020.
- ³²Low P. *The Cambridge Declaration on Consciousness*. <http://fcmconference.org/img/CambridgeDeclarationOnConsciousness.pdf>. Published 7 July 2012. Accessed 12 May 2020.
- ³³Linzey A, Linzey C. Normalizing the unthinkable: The ethics of using animals in research. <http://www.oxfordanimaethics.com/wpcms/wp-content/uploads/Normalising-the-Unthinkable-Report.pdf>. Published 2015. Accessed 12 May 2020.
- ³⁴Netherlands National Committee for the Protection of Animals Used for Scientific Purposes. Transition to non-animal research: On opportunities for the phasing out of animal procedures and the stimulation of innovation without laboratory animals. <https://www.ncadierproevenbeleid.nl/documenten/rapport/2016/12/15/ncad-opinion-transition-to-non-animal-research>. Published 15 December 2016. Accessed 12 May 2020.
- ³⁵US Environmental Protection Agency. Administrator wheeler signs memo to reduce animal testing, awards \$4.25 million to advance research on alternative methods to animal testing. <https://www.epa.gov/newsreleases/administrator-wheeler-signs-memo-reduce-animal-testing-awards-425-million-advance>. Published 10 September 2019. Accessed 12 May 2020.
- ³⁶Swaminathan S, Kumar V, Kaul R. Need for alternatives to animals in experimentation: An Indian perspective. *Indian J Med Res.* 2019;149(5): 584-592. <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC6702685/>. Accessed 12 May 2020.
- ³⁷Government of India. Directorate General of Health Services. CDSCO. 2020. https://cdsco.gov.in/opencms/opencms/system/modules/CDSCO.WEB/elements/download_file_division.jsp?num_id=NTc2OQ. Accessed 12 May 2020.
- ³⁸Duan K, Liu B, Li C, *et al.* Effectiveness of convalescent plasma therapy in severe COVID-19 patients. *PNAS.* 2020;117(17):9490-9496.
- ³⁹Government of India. Directorate General of Health Services. CDSCO. 2020.
- ⁴⁰Official Journal of the European Union. Directive 2010/63/EU of the European Parliament and of the Council of 22 September 2010 on the protection of animals used for scientific purposes. Article 38. <https://eur-lex.europa.eu/LexUriServ/LexUriServ.do?uri=OJ:L:2010:276:0033:0079:EN:PDF>. Published 22 September 2010. Accessed 12 May 2020.
- ⁴¹Government of India. The Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960. https://indiacode.nic.in/bitstream/123456789/11237/1/the_prevention_of_cruelty_to_animals_act%2C_1960.pdf. Accessed 12 May 2020.
- ⁴²Swaminathan *et al.*
- ⁴³Sarkar J, Kumar A. Thermo-responsive polymer aided spheroid culture in cryogel based platform for high throughput drug screening. *Analyst.* 2016;141(8):2553-67.
- ⁴⁴Fernandes S, Talwadekar M, Agarwal R, *et al.* Generation and characterization of human iPSC line from CD34+ cells isolated from umbilical cord blood belonging to Indian origin. *Stem Cell Research.* 2017;18:60-3.
- ⁴⁵Dey, S. IIT-Delhi has a new 3D bioprinting innovation & it might change the future of knee surgeries. The Better India. <https://www.thebetterindia.com/102746/iit-delhi-3d-bioprinted-cartilage/>. Published 30 May 2017. Accessed 12 May 2020.



⁴⁶Business Standard. Bengaluru start-up prints 3D tissue that functions like human liver. https://www.business-standard.com/article/companies/bio-tech-startup-pandorum-tech-becomes-first-in-india-to-develop-artificial-liver-tissue-115122200737_1.html. Published 23 December 2015. Accessed 12 May 2020.

⁴⁷Velayanikal, M. 3D bioprinting startup puts its skin in the game. Livemint. <https://www.livemint.com/companies/news/3d-bioprinting-startup-puts-its-skin-in-the-game-11576453802729.html>. Updated 16 December 2019. Accessed 12 May 2020.

⁴⁸Singh KP, Gupta S, Kumar A, *et al.* Multispecies QSAR modeling for predicting the aquatic toxicity of diverse organic chemicals for regulatory toxicology. *Chem Res Toxicol.* 2014;27(5):741-53.

⁴⁹Basant N, Gupta S, Singh KP. Predicting toxicities of diverse chemical pesticides in multiple avian species using tree-based QSAR approaches for regulatory purposes. *J Chem Inf Model.* 2015;55(7):1337-48.

⁵⁰Singh *et al.*

⁵¹Shah P, Saquib M, Sharma S, *et al.* 3D-QSAR and molecular modeling studies on 2, 3-dideoxy hexenopyranosid-4-uloses as anti-tubercular agents targeting alpha-mannosidase. *Bioorg Chem.* 2015;59:91-6.

⁵²Jyoti, A. eSKIN next big thing in cosmetic testing. *The Pioneer.* <https://www.dailypioneer.com/2017/india/eskin-next-big-thing-in-cosmetic-testing.html>. Published 6 September 2017. Accessed 12 May 2020.

⁵³Swaminathan *et al.*



Appendices

Please find below further detail on opportunities to replace animals in the following areas of biomedical research and training, forensic sciences, toxicity assessment, and laboratory production methods. Also included is information regarding the expertise of the scientists who work for PETA and its international affiliates.

Table of Contents

Glossary	18	Toxicity Assessment	40
		Exposure-Based Assessment	40
Basic and Applied Biomedical Research	19	Skin Irritation/Corrosion	40
Cancer	19	Eye Irritation/Corrosion	41
Cardiovascular Disease	20	Skin Sensitisation	42
Diabetes	21	Pyrogenicity	43
HIV/AIDS	23	Tobacco and E-Cigarette Testing	44
Inflammation and Immunology	24	Genotoxicity	45
Nerve Regeneration	25	Acute Systemic Toxicity	46
Neurodegenerative Diseases	27	Acute Oral Toxicity	46
Neuropsychiatric Disorders	29	Acute Dermal Toxicity	46
Sepsis	30	Acute Inhalation Toxicity	47
Stroke	32	Carcinogenicity	47
Substance Abuse	34	Endocrine Disruption	48
Trauma	35	Repeat Dose, Reproductive, and Developmental Toxicity	49
Training and Forensic Enquiries	37	Aquatic Toxicity Testing	49
Forensic Sciences	37	Laboratory Production Methods	51
Medical Training	38	Biologic Drugs	51
Microsurgery Training	38	Antibody Production	52
Trauma Training	38	Foetal Bovine Serum	53
		Scientific Advisory Capabilities of PETA and Its International Affiliates	55
		References (Appendices)	56



Glossary

3Rs	replacement, reduction, and refinement (of animal use)	ISO	International Organization for Standardization
AD	Alzheimer's disease	JaCVAM	Japanese Center for the Validation of Alternative Methods
ADHD	attention deficit hyperactivity disorder	LAL	Limulus amoebocyte lysate test
AIDS	acquired immune deficiency syndrome	MAT	monocyte activation test
AOP	adverse outcome pathway	MND	motor neurone disease
ATLS	Advanced Trauma Life Support	NICEATM	NTP Interagency Center for the Evaluation of Alternative Toxicological Methods
BCOP	bovine corneal opacity and permeability	NIH	National Institutes of Health
CTA	cell transformation assay	NOS	nitric oxide synthase
DPRA	direct peptide reactivity assay	NRU	neutral red uptake
ECHA	European Chemicals Agency	NTP	National Toxicology Program
EDQM	European Directorate for the Quality of Medicines & HealthCare	OECD	Organisation for Economic Co-operation and Development
EDSP	Endocrine Disruptor Screening Program	PD	Parkinson's disease
EMA	European Medicines Agency	PDAC	pancreatic ductal adenocarcinoma
EPA	Environmental Protection Agency	Ph Eur	European Pharmacopoeia
EURL	European Union Reference Laboratory	REACH	Registration, Evaluation, Authorisation and Restriction of Chemicals
ECVAM	for Alternatives to Animal Testing	RhCE	reconstructed human cornea-like epithelium
FBS	foetal bovine serum	RHE	reconstructed human epidermis
GEMM	genetically engineered mouse model	RPT	rabbit pyrogen test
GHS	Globally Harmonized System of Classification and Labelling	SA	structural alert
h-CLAT	human cell line activation test	SCCS	Scientific Committee on Consumer Safety
HD	Huntington's disease	SCI	spinal cord injury
HIV	human immunodeficiency virus	SCHEER	European Commission Scientific Committee on Health, Environmental and Emerging Risks
hPL	human platelet lysate	SIV	simian immunodeficiency virus
IATA	integrated approach to testing and assessment	STAIR	Stroke Therapy Academic Industry Roundtable
ICCVAM	Interagency Coordinating Committee on the Validation of Alternative Methods	STE	short time exposure
IET	Institution of Engineering and Technology	T2DM	type 2 diabetes mellitus
IFV	Influenza virus	TER	transcutaneous electrical resistance
		TZD	thiazolidinedione
		WoE	weight of evidence



Basic and Applied Biomedical Research

Detailed below are opportunities to end the non-regulatory use of animals immediately in a number of specific areas of biomedical research.

Cancer

Recommendation: End the use of animals immediately

Oncology drugs have the lowest “likelihood of approval” among all disease categories. A survey of 4,451 drugs made by 835 companies between 2003 and 2011 found that only 6.7 per cent of cancer drugs were approved after entering the first phase of clinical trials, even though they were all successful in preclinical testing. A 2018 analysis of data collected between 2000 and 2015 shows that the success rate for oncology drugs dropped to 3.4 per cent,¹ suggesting that the problem is getting worse. The authors admit that the “current animal models (e.g., xenograft tumor models in mice) can be poor predictors of clinical outcomes in humans”.² Even though study design and other logistical issues can be problematic, cancer physicians at McMaster University in Ontario state the following:

[M]ost fatalities in fact originate from molecular mechanisms of the drug(s) tested...
Crucial genetic, molecular, immunologic and cellular differences between humans and mice prevent animal models from serving as effective means to seek for a cancer cure.³

Following an analysis of 1,110 mouse xenograft tumour models, which involve the transplantation of human tumour cells into mice, scientists and physicians from Harvard University, Massachusetts Institute of Technology, the Dana-Farber Cancer Institute, and other respected institutions reached a conclusion that challenged the ability of xenograft models to predict patients’ response to therapy. They found that transplanting human cancer cells into these mice altered the genetic composition of those cells in ways that would be unlikely to happen in humans. That, in turn, altered the responses that the cells had to chemotherapy drugs,⁴ invalidating one of the foundational animal models for human cancer research.

There are numerous examples of the ways in which rodent models have misled cancer researchers. For brevity, we will present three cases. Scientists now know that endogenous bile acids, if dysregulated, can induce DNA damage and several forms of cancer, such as colon cancer, in humans. However, previous experiments on rats show that bile acids are not carcinogenic on their own. The profiles of bile acids, metabolism of bile acids (by the liver and gut microbiome), and colon epithelial cell accumulated turnover rate (adjusted by age) are all different between rodents and humans, contributing to the discrepancy.⁵

Another example of the disconnect between human cancer and rodent cancer research is the formerly proposed link between soya and breast cancer. It is now recognised that isoflavones in soya may be protective against several types of cancer, such as breast and prostate cancers,⁶ particularly if people are exposed to it early in life.⁷ However, it was observed that genistein, a major isoflavone in soya, induces oestrogen-sensitive tumours in some animals used in studies, including rodents. The inconsistency was later explained to be due to differences in phase II metabolism of genistein in rodents, whose level of unconjugated, and hence active, genistein is about 20 to 150 times higher than that of humans (depending on the strain). Additionally, rodent models had low endogenous oestrogen levels and different metabolic profiles compared to humans, and high experimental levels of isoflavones were used in those initial studies.⁸



Rodents are not suitable for radiation-induced carcinogenesis research, including for thyroid cancer. The nuclear architecture and spatial positioning of genes involved in radiation-induced injury are drastically different between rodent and human thyroid cells.⁹ Similarly, rodents are not suitable for research into pancreatic ductal adenocarcinoma (PDAC). As some scientists have pointed out, “Although it may seem obvious that there are important differences between men and mice, this is often overlooked by those modeling human disease. ... The potential for species differences to be relevant is greatest in models that use nonhuman PDACs, such as genetically engineered mouse models (GEMMs) and syngeneic xenografts.”¹⁰

Given the many shortcomings described above as well as the astonishingly low translational success rate of cancer research, despite the popularity of using rodents in such research, it is clear that they are not good models for any type of human cancer experimentation. Therefore, it is wise to move away from rodent models and focus on human-relevant methods.

The prestigious Institution of Engineering and Technology (IET) global Harvey Engineering Research Prize was recently awarded to Portuguese scientist Rui L Reis for his work using tissue engineering to create reliable 3-dimensional (3-D) engineered functional cancer disease models. According to IET, his innovative research will “help to predict the efficacy of novel cancer drugs and potential therapies, avoiding a range of unnecessary animal tests, and preclinical and clinical trials of doomed to fail new drugs”.¹¹

Other recent, human-relevant cancer research includes the development of a human blood vessel-on-a-chip to aid in the advancement of new cancer therapies that may inhibit new blood vessel formation to slow tumour growth,¹² the study of patient-derived human brain organoids to develop personalised therapies for deadly glioblastomas,¹³ the use of a tumour microenvironment-on-a-chip to create precision medicine tailored to individual patients and specific cancer types,¹⁴ and the application of 3-D printing to producing precise replicas of tumours using patients’ own cells in the bioink.¹⁵ In addition, by sequencing DNA and RNA in human skin cells, researchers at the University of California–San Francisco have analysed which signalling pathways are disrupted in the evolution of melanoma.¹⁶

Former National Cancer Institute Director Dr Richard Klausner stated the following:

The history of cancer research has been a history of curing cancer in the mouse. We have cured mice of cancer for decades – and it simply didn’t work in humans.¹⁷

Cancer is a highly variable, individualised disease that will require individualised treatment to overcome.¹⁸ Scientists using non-animal methods for cancer research are faced with a smaller translational hurdle, since they are able to use patients’ own cancer cells and because all human-relevant methods are grounded in human – instead of rodent – biology.

Cardiovascular Disease

Recommendation: End the use of animals immediately

Cardiotoxicity is a primary reason that drugs fail in clinical trials. Experts point out the “lack of concordance between the effects of compounds in animals (or animal-derived tissues) and those in humans”,¹⁹ that “substantial differences in drug responsiveness between species can limit the effectiveness of predicting clinical outcome from animal toxicity testing”,²⁰ and the many known species-related differences in cardiac contractile function and calcium handling.²¹ In a co-authored review, scientists from Stanford University, the US Food and Drug Administration, and the biopharmaceutical company AbbVie refer to testing cardiotoxicity in animal models as a “black box” approach.²²



The properties of calcium-handling proteins and their composition differ in the hearts of rats, mice, rabbits, dogs, and humans, and rodents and humans do not have the same profiles or functions of contractile proteins.²³ This makes the profile of ventricular repolarisation and susceptibility of arrhythmia different, leading to varied drug responses. A meta-analysis evaluating 11 measured functional parameters of the heart, comparing rodents with humans, concluded that only one (systolic pressure) was within an acceptable range for comparison between the two species.²⁴ Rodents are also resistant to atherosclerosis, a major cause of many cardiovascular diseases, owing to their lack of cholesteryl ester transfer protein.²⁵

For heart failure research, “insights gleaned from animal-based research efforts have shown poor translation in terms of deciphering human heart failure and developing effective therapies”, and “lack of concordance between animal models and human disease state has been acknowledged as a major contributing factor [to this translational failure]”.²⁶ It is clear that human-relevant *in vitro* and *in silico* methods are much more suitable for cardiotoxicity testing and cardiovascular research in general.

The global stem cell biotechnology company Novoheart is using a platform called MyHeart™ composed of engineered human cardiac tissues, which has been able to “detect the devastating arrhythmogenic hazards of certain ‘anti-arrhythmic’ drugs that had previously caused fatalities in human patients despite passing through the flawed process of animal testing for FDA approval”.²⁷ Scientists in Singapore and New York are using organ-on-a-chip models of blood vessels and beating heart tissue, respectively, to model human atherosclerosis and test human reactions to various drug compounds.^{28,29} Worcester Polytechnic Institute’s Marsha Rolle, a tissue engineer, has created functional blood vessels from human cells to “replicate what happens when [human blood vessels are] diseased”.³⁰ In a news release, she noted that the 10-year average for developing new medications is “exacerbated by the fact that animal testing, which is the way most new drugs are tested, is not always an accurate indicator of how human blood vessels will respond to the same drugs”.³¹

Other recent advancements in human tissue engineering for cardiovascular research include the ability of scientists to control the electrical pace of lab-grown heart cells using light,³² the use of plant-derived cellulose framework as scaffolding to build networks of human veins,³³ and the development of an *in vitro* 3-D model of human early heart development that “could serve as an embryotoxicity screening assay in drug discovery, regulation, and prescription for healthy fetal development”.³⁴ This 3-D “organogenesis-in-a-dish” model could provide a way to determine drug safety in pregnant women.

Computer modelling is also rapidly advancing human cardiovascular research. Recently, Clemson University Assistant Professor Ethan Kung was given a prestigious National Science Foundation grant for his work “aimed at reducing human and animal testing and addressing concerns that the skyrocketing cost of developing new devices and surgeries is unsustainable”. His research merges numerical computer models with experimental data to create modern cardiovascular biochemical models.³⁵ University of Oxford researchers have demonstrated that *in silico* methods are more accurate than animal models at predicting the cardiotoxicity of certain drugs.³⁶

Diabetes

Recommendation: End the use of animals immediately

From 1984 to 2014, more than 50 papers were published per month describing experiments on rodent models of type 2 diabetes mellitus (T2DM).³⁷ Considering these numbers, we now know a great deal about diabetes, or metabolic disturbances that look like diabetes, in rodents, but “many details of human T2DM pathogenesis remain unclear, and means of preventing disease progression remain elusive”.³⁸ Rodent studies were used to identify thiazolidinedione (TZD) drugs as possible therapeutics for humans with T2DM or insulin dysfunction.



Unfortunately, the studies did not predict that TZDs would increase the risk of cardiovascular death in these patients by 64 per cent; in fact, they provided contradictory evidence.³⁹

T2DM is a disease of glucose misregulation that leads to broad physiological effects. Rodents differ from humans on every tier of glucose regulation, from the level of nucleic acids to differences in proteins, pathways, cells, tissues, and organs. The two species also differ in terms of disease progression at the organism level and, dramatically, in environmental exposure and autonomy of lifestyle.^{40,41} “Because mice rely principally on the liver for glucose homeostasis, while humans rely on skeletal muscle where transport mechanisms and biochemical pathways differ, mice may not be expected to be analogous to [T2DM] patients in regards to mechanisms of glucose metabolism or its dysfunction.”⁴² Despite these clear discrepancies, diabetes research in animals continues while more relevant, human-based methods are often ignored.

Many genetic models of T2DM are based on leptin or leptin-receptor deficiency, even though neither of these represent an important contributor to T2DM in humans.⁴³ Mice who have been genetically modified to lack select insulin-signalling genes are also poor models. For example, mice with a complete deletion of the insulin receptor die within a few days of birth, while humans with this rare condition can survive until age 2.⁴⁴ Overall, observed phenotypes in these and similar animal models of diabetes are only “secondary to genetic mutations that do not reflect disease etiology in humans”.⁴⁵

Human-relevant alternatives to the use of animals in diabetes research include human imaging, *in vitro* technology using human heterologous cell lines, human induced pluripotent stem cells, organotypic 3-D cell culture, the use of human organs *ex vivo*, post-mortem human tissue, non-invasive human imaging, epidemiological and human genetic studies – including nutrigenomics and nutrigenetics – as well as *in silico* modelling.^{46,47} For example, scientists at Glasgow Caledonian University recently used human cells from a tissue bank to generate wound-healing models for diabetic patients, who have difficulty with wound healing and controlling skin infections.⁴⁸ Additionally, the US Food and Drug Administration has approved a closed-loop insulin pump developed using *in silico* modelling as a substitute for animal testing, providing just one example of how “[r]ealistic computer simulation is capable of providing invaluable information about the safety and the limitations of closed-loop control algorithms, guiding clinical studies, and out-ruling ineffective control scenarios in a cost-effective manner”.⁴⁹

In their recent publication, Ali, Chandrasekera, and Pippin discuss a wealth of relevant methods for studying diabetes, stressing the need to focus on human biology for human diabetes research:

As we continue to uncover major species differences in factors affecting glucose biology – such as cell division, stimulus-secretion coupling and autocrine–paracrine interactions ... it is now becoming unquestionable that **new information should be derived solely from human primary cells, tissues and organs**, obtained from nonpatient controls and patients in the various progressive stages of T2DM. ... If the ultimate goal of the diabetes research community is to understand disease mechanisms that will lead to better T2DM prevention and therapeutic outcomes for patients, then the best way to achieve that goal is by prioritising human-centred research [emphasis added].⁵⁰



HIV/AIDS

Recommendation: End the use of animals immediately

The failures of animal experiments to translate into useful human application of HIV/AIDS vaccines were recognised more than 20 years ago when, in 1995, the US National Institutes of Health (NIH) instituted a moratorium on the breeding of chimpanzees, the most commonly used animal in HIV/AIDS research at the time, acknowledging the failure of studies using the species to produce clinically useful data in this field. Following NIH's acknowledgement that chimpanzees aren't human-relevant surrogates for this research, experimenters began to use other non-human primate species, notably macaques.

Because macaques are unreceptive to HIV, experimenters who wanted to use them shifted their focus to studying simian immunodeficiency virus (SIV), even though it is known that SIV isn't related to the most widespread HIV virus, HIV-1, but rather is a relative of the rarer and less pathogenic HIV-2.⁵¹ The genetic homology between HIV and SIV is only 55 per cent, and SIV is less genetically diverse than HIV.^{52,53} Owing to differences in surface proteins and other molecular markers, antibodies that neutralise SIV have no effect on HIV, and vice versa,⁵⁴ making them useless in HIV research. Importantly, the dose of SIV administered to non-human primates in experiments is much higher than the typical amount of HIV-1 to which a human is exposed during sexual transmission.⁵⁵ AIDS researcher Mark Girard has stressed, "Extrapolating from vaccine protection results in non-human primate [SIV/SHIV] studies to efficacy in man may be misleading."⁵⁶

Immune system and genetic variances between humans and non-human primates weaken non-human primate HIV/AIDS research. Here are some examples:

- Non-human primates have more leukocyte antigen genes and therefore wider variety in antigen recognition than do humans.⁵⁷
- Non-human primate T cells contain molecules called siglecs, which act as "brakes" on the immune system, preventing hyper-responsiveness. The absence of siglecs in human T cells dramatically affects how humans respond to infection and treatment.⁵⁸
- The primate TRIM5 α gene codes for a restriction factor that affects responsiveness to retroviruses such as SIV, giving some non-human primates greater resistance to infection, a function mostly lost in human TRIM5 α .⁵⁹
- Even in chimpanzees, humans' closest non-human relatives, transcript expression in the liver differs by 40 per cent,⁶⁰ a species difference that becomes more pronounced following the varying translation of these transcripts into proteins.

For these reasons and more, HIV/AIDS vaccine research involving non-human primates has been called "[one of the most notable failures in animal experimentation translation](#)".⁶¹

Because of broad failures in non-human primate HIV/AIDS research, experimenters have recently shifted some focus to a species even more genetically removed from humans: the mouse. The "humanised" mouse model for HIV/AIDS research is a mouse who has been partially repopulated by human immune cells, allowing the animals to be infected with HIV-1. However, humanised mice are limited in their longevity with the disease and retain murine major histocompatibility complex antigens, "complicating immune response interpretations".⁶² Not surprisingly, the use of "humanised" mice has also failed to generate useful results for clinical HIV/AIDS treatment.

Considering the differences between an animal laboratory environment and human society, it is clear that animal experiments will never capture the complexity of this human disease. Animals used in experiments are kept in mostly pathogen-free conditions, and cofactors that may be present in human patients, such as other



microbial infections, are absent, significantly altering the acquisition and course of the virus.⁶³ Additionally, researchers at Emory University in Atlanta state, “HIV persistence is a very complex virological and immunological phenomenon, with infection of several cell types in a wide array of anatomic tissues that are all regulated differently,”⁶⁴ and recognise that human *in vitro* models are needed to replicate this human disease and develop treatment. Thinking progressively about non-animal methods, UK scientists have said, “Existing animal models predicting clinical translations are simplistic, highly reductionist and, therefore, not fit for purpose,” and that clinical attrition data “focusses the attention back on to early target selection/lead generation, but it also questions the suitability of current animal models with respect to congruency with and extrapolation of findings for human hosts”.⁶⁵

Scientists admit that even after costly and unreliable animal experiments, human data is still needed to determine whether a drug is fit for the clinical setting. Rao and Alving of the US Military HIV Research Program state that “human clinical trials still appear to be the only reliable way to determine whether an HIV vaccine candidate will have activity or efficacy in humans”.⁶⁶ In a comprehensive review of preclinical and clinical data, Jarrod Bailey reported that of 85 candidate vaccines that were tested in 197 clinical trials, zero were successful; some drugs even increased the risk of HIV infections compared to the placebo.⁶⁷ A current search of ClinicalTrials.gov will return more than 700 AIDS vaccine trials, and still, none has been successful.

Recently, scientists from Australia, France, Italy, and the UK have been studying the immune cells of individuals called “HIV controllers”, who can become infected with HIV but are able to control the virus’s spread without any intervening therapy.⁶⁸ The hope is that immune cells from HIV controllers can be transferred to HIV-infected patients to help them fight the virus. This promising research is human-specific and requires human-specific testing methods. As Nobel laureate Sydney Brenner declared, “We don’t have to look for model organisms anymore because we are the model organism.”⁶⁹ Similarly, in 2007, the associate editor of *The BMJ* stated, “When it comes to testing HIV vaccines, only humans will do.”⁷⁰

Inflammation and Immunology

Recommendation: End the use of animals (particularly mice) immediately

Because of the development of tools allowing for manipulation of the mouse genome, the mouse is the most commonly used research subject worldwide. However, it should be no surprise that with this rampant use comes substantial evidence that mice are not the same as humans and that there are certain fields, in particular, in which the dramatic differences in physiology between the two species disqualify the use of mice as research subjects. One of the most noted fields in this category is immunology.

In 2004, a compelling review was published in *The Journal of Immunology* outlining the many differences between mouse and human immune systems, including in the anatomy of lymphoid tissue, ratios of white blood cell types, antimicrobial peptide profiles, cytokine profiles and functions, mechanisms for crosstalk between the adaptive and innate immune systems, antibody subtypes, development and regulation of lymphocytes, and activation of clotting factors.⁷¹ Since then, several other analyses have been published detailing the many differences between human and mouse immunology.

A 2014 study found fundamental differences between the species in the innate immune response, stating, “[W]hile in human blood mechanisms of immune resistance are highly prevailed, tolerance mechanisms dominate for the defense against pathogenic microorganisms in mouse blood.”⁷² Logically, these differences make sense: we humans “do not live with our heads a half-inch off the ground”,⁷³ and we have considerably longer lifespans and a larger body size than do mice.^{74,75} As concisely stated by Leist and Hartung, “[H]umans are definitely no 70-kg mice.”⁷⁶ Despite the glaring contrast, mice continue to be used for immunological research.



The use of mice as a model of influenza virus (IFV) infection has been heavily criticised: “There are ... a number of drawbacks of the [mouse] model that make it unsuitable for addressing certain virological questions and can render data obtained in mice difficult to translate to the human situation.”⁷⁷ Viral infection is species-specific, and mice cannot naturally catch human IFV. To bypass this problem, experimenters have altered both the strain of mice and the viruses used. The BALB/c mouse, for example, is an inbred strain and is highly susceptible to viral infection because of the lack of MX1 gene, which codes for Mx1 protein that can selectively inhibit IFV replication.⁷⁸ The lethal dose of a deadly IFV strain (H5N1) is about 100 times lower in BALB/c mice compared to their cousins in the wild.⁷⁹ BALB/c mice do not possess genetic heterogeneity nor proper immune function for virology research.

The viruses used in animal studies are often adapted through serial passage in target hosts (mice, in this case) for easy infection.⁸⁰ This is because human IFV receptors (α 2,6-linked sialic acids) are not abundant in the upper airways of mice, who have a different receptor (α 2,3-linked sialic acids).⁸¹ Through serial passage, the virus can adapt to the new host and become distinct from the kind that affects humans predominantly.

There are many more differences between mice and humans in terms of IFV disease progression. For example, mice get hypothermia rather than fever following infection.⁸² They do not cough or sneeze.⁸³ Moreover, the virus does not transmit between mice.⁸⁴ Additionally, we now know that gut microbiota are intimately linked to the immune system,⁸⁵ and studies have demonstrated drastic differences between the microbiomes of humans and mice. For example, 85 per cent of bacterial species in mice don't exist in humans.⁸⁶ The aforementioned evidence supports the inapplicability of mouse immunity to human immunity.

Considering the obvious failure of mice as surrogates in the study of human immune systems, investment in human-relevant *in vitro* and *in silico* models is needed. Advances in data collection and computer analyses have allowed for the development of human-relevant multiscale models that “can consistently integrate immunological data generated at several scales, and can be used to describe and optimize therapeutic treatments of complex immune diseases”.⁸⁷

Vanderbilt University researchers have used a dual-chamber blood-brain barrier microfluidic device called the NeuroVascular Unit to study the human blood-brain barrier's response to neuroinflammation.⁸⁸ German scientists developed a computer model that gives them the capability to assess, for the first time, the electrophysiological consequence of the acidosis in human immune cells accompanying most forms of inflammation.⁸⁹ Additionally, a University of Tennessee mathematician, along with surgical and immunological specialists at the University of Pittsburgh, used a mechanistic mathematical model to characterise human immune responses during organ transplantation.⁹⁰

A review summarising the progress of immune-competent human skin disease models recognises the failures of animal studies to translate into effective treatments for diseases such as fibrosis, psoriasis, cancer, contact allergy, and autoimmune diseases, due, in part, to the immunological nature of these conditions. The authors go on to describe how co-culture, 3-D organotype systems and organ-on-a-chip technology will “enable human models of well-controlled complexity, yielding detailed, reliable data; thus providing a fitting solution for the drug development process”.⁹¹

Nerve Regeneration

Recommendation: End the use of animals immediately

Many neuroprotective agents have been developed that are successful in treating spinal cord injury (SCI) in animal models, but clinical trials have been disappointing. Neurologist Aysha Akhtar has described three major reasons for this failure: “differences in injury type between laboratory-induced SCI and clinical SCI, difficulties



in interpreting functional outcome in animals, and inter-species and interstrain differences in pathophysiology of SCI".⁹² In their systematic review of the use of animal models to study nerve regeneration in tissue-engineered scaffolds, Angius and colleagues noted, "The large majority of biomaterials used in animal models have not progressed for approval to be tested in clinical trials in spite of the almost uniform benefit described in the experimental papers."⁹³ The authors lamented the low quality of described animal experiments, in that necessary detail and rationale had been omitted, making it difficult to compare data.

For example, methylprednisolone, a routinely used treatment for acute SCI, has generated inconsistent results in animal models. A systematic review examining 62 studies of the drug on a wide variety of species, from rodents to monkeys, found that 34 per cent of the studies reported beneficial results, 58 per cent no effect, and 8 per cent mixed findings.⁹⁴ The results were inconsistent both among and within species, even within strains. Furthermore, the variability in results remained even when many of the study design and procedure variables were controlled. The authors pointed out numerous intrinsic differences between, and limitations of, each species/model and suggested that as a result of these immutable inter- and intra-species differences, no human-relevant animal model can be developed. They concluded that the "research emphasis should be on the development and use of validated human-based methods".⁹⁵

Among species, rats are particularly unsuitable for nerve repair or regeneration research. Experts have pointed out three major problems with rat models in this field:

- (1) The majority of nerve regeneration data is now being generated in the rat, which is likely to skew treatment outcomes and lead to inappropriate evaluation of risks and benefits.
- (2) The rat is a particularly poor model for the repair of human critical gap defects due to both its small size and its species-specific neurobiological regenerative profile.
- (3) Translation from rat to human has proven unreliable for nerve regeneration, as for many other applications.⁹⁶

More specifically, the inconsistencies between animal models and the clinical situation include the following:

- (1) healthy animals versus sick patients;
- (2) short versus long gap lengths (the clinical need for *large* gap repairs, while 90% of *in vivo* studies are in rats and rabbits where gap lengths are usually ≤ 3 cm);
- (3) animal models that almost always employ *mixed sensory-motor* autografts for repairing mixed defects, versus clinical repairs that almost always involve *sensory* autografts (usually sural nerve) for repairing mixed defects;
- (4) protected anatomical sites in animal models, versus repairs that must often cross articulating joints in humans; and
- (5) inbred, highly homogeneous animal strains and ages, versus diverse patient populations and ages: It is well recognized that animal models fail to mimic the human condition in terms of the *uniformity* of animal subjects used.⁹⁷

University of Florida biomedical engineers Mobini and colleagues add, "We are incapable of truly mimicking human neural injuries in animal models because of the extensive anatomical, functional, molecular, immunological, and pathological differences between humans and frequently studied animals."⁹⁸ Human-relevant methods such as human stem cells and clinical research can bypass these limitations and should be the focus.

Human-relevant methods for studying nerve injury and regeneration have been reviewed by a number of research groups and include human organoids, microfluidics, engineered human tissue scaffold moulds, bioprinting, and other *in vitro* uses of human cells. *Ex vivo* models, such as those that use 3-D engineered scaffolds, bioreactors, neurospheres, and organoids, allow for more controlled studies on specific parameters



than do animal experiments.⁹⁹ Bioprinting can use bioinks containing human cells and materials to construct heterogeneous tissue models in a single step and with great consistency,¹⁰⁰ an aspect of nerve regeneration research that has been particularly lacking in animal models.¹⁰¹

Shrirao and colleagues at Rutgers University recommend microfluidic devices, which are “adaptable for modeling a wide range of injuries” and provide advantages over traditional *in vivo* and *in vitro* experiments by “allowing researchers to (1) examine the effect of injury on specific neural components, (2) fluidically isolate neuronal regions to examine specific effects on subcellular components, and (3) reproducibly create a variety of injuries to model TBI and SCI”.¹⁰² Mobini and colleagues note that microfluidics, or lab-on-a-chip devices, offer advantages in precision, scalability, and cost-effectiveness when compared to traditional cell culture or animal experiments and that these are currently on the market and available for neural regenerative medicine research.¹⁰³

Neurodegenerative Diseases

Recommendation: End the use of animals immediately

There is sufficient literature documenting the failings of various animal models of neurodegenerative diseases, including Alzheimer’s (AD), Parkinson’s (PD), Huntington’s (HD), and motor neurone disease (MND), to write a lengthy appendix for each disease. However, since many of the same limitations of animal models prohibit translation across these conditions, they will be discussed briefly as a whole. For one, all these diseases are human-specific, meaning that none of them occurs naturally in other animals. No animal model has been developed that recapitulates all aspects of a particular neurodegenerative disease.¹⁰⁴ For AD research, the clinical failure rate for new drugs is 99.6 per cent.¹⁰⁵ This includes the recent failure of AstraZeneca and Eli Lilly’s lanabecestat, which was hailed as extremely promising, due to futility.¹⁰⁶ There have been no new discoveries that slow the progression of AD for 12 years.¹⁰⁷

In a bioinformatic analysis comparing transcriptional signatures of human AD, PD, HD, and MND with mouse models of these diseases, Stanford scientists made the following findings:

[M]ost available mouse models of neurodegenerative disease fail to recapitulate the salient transcriptional alterations of human neurodegeneration and ... even the best available models show significant and reproducible differences compared to human neurodegeneration. Although the reasons for the poor transcriptional performance of mouse models varied, the unifying theme was the failure of mouse models to exhibit the variety and severity of diverse defects observed in human neurodegeneration.¹⁰⁸

These molecular discrepancies underscore the artificial ways in which such models are created. Physical and chemical lesioning and systemic administration of toxins are often used. These are acute stressors, not long-term degenerative processes, and as such, they initiate events in animal models that are not present in human patients. The acute and immediate nature of particular disease models, such as the 6-OHDA and MPTP models of PD and the 3-NP model of HD, fail to capture the progressive nature of the disorders that they aim to mimic. In addition, it is commonplace for scientists to use young animals, both rodents and primates, to “model” diseases associated with ageing,¹⁰⁹ further reducing the likelihood that their observations will be of use to humans.

Genetically modified mouse models of neurodegenerative disease exhibit an inconsistent range of pathological and behavioural phenotypes, in part because of the transgenes used, inconsistencies in transgene insertion and expression, and mouse background strains.¹¹⁰ The most commonly used genetic mouse model of MND, the



SOD1 model, is based on a gene that accounts for only 3 per cent of MND cases in the human population.¹¹¹ Literature reviews have concluded that findings from this model have not translated into any effective human therapy for MND, that “a biased estimation of treatment efficacy in animals may lead to unnecessary (and possibly harmful) clinical trials in humans”,¹¹² and that “animal models are not an ideal system for studying [amyotrophic lateral sclerosis (MND)] or for developing drug therapies”.¹¹³ In PD, even non-human primate studies do not “constitute a valid scientific modality for the complete understanding of PD and for the development of future neuromodulation therapeutic strategies”.¹¹⁴

As in much of biomedical research, animal subjects suffer greatly when they are used to mimic neurodegenerative disease. In an analysis of published studies on animal models of HD, 51 studies referenced experiments “in which animals were expected to develop motor deficits so severe that they would have difficulty eating and drinking normally”;¹¹⁵ however, only three out of 51 reported making adaptations to the animals’ housing to facilitate food and water intake. The authors of this analysis concluded that experimenters are not following the 3Rs principle (replacement, reduction, and refinement of animal use) and, in their failure to do so, are compromising not only animal welfare but also the relevance of their studies to HD.¹¹⁶

As animal studies fall short, scientists and policymakers are realising that research strategies should be more human-relevant. Following a review of AD research, an interdisciplinary panel recommended that funding be allocated away from animal studies and towards more promising techniques involving patient-derived induced pluripotent stem cell models, “omic” technology (genomics, proteomics, etc.), *in silico* models, neuroimaging, and epidemiological studies.¹¹⁷ For advancements in human blood-brain barrier research, which will greatly benefit scientific progress in developing treatments for human neurodegenerative disease, please see the section on [Stroke](#).

The following are highlights in cutting-edge, human-relevant AD research:

- Scientists at the University of Texas Southwestern Medical Center have discovered a “Big Bang” of AD, identifying the genesis of tau pathology in the disease, not by experimenting on animals but by extracting proteins from human brains and isolating single molecules.¹¹⁸
- Thanks to developments in human brain imaging, scientists at the University of Cambridge were able to trace tau protein in human brains.¹¹⁹ Chemists there also used mathematical modelling to understand the role of cholesterol in the aggregation of amyloid proteins.¹²⁰
- Patient-derived stem cells were used by Hungarian and Danish scientists to compare neurons from the brains of patients with sporadic AD to those with the familial form of the disease, discovering key similarities and differences between the two pathologies and concluding that stem cell technology is suitable for modelling both forms of the disease.¹²¹
- At the Karolinska Institute in Sweden, researchers identified a molecular fingerprint for dementia present in the synapses of brains collected post mortem from patients and subject to proteomic analyses.¹²²

Biological engineering is also transforming MND research. A team of researchers in the Hickman Hybrid Systems Lab at the University of Central Florida have developed a human neuromuscular junction-on-a-chip, the first of its kind, which can be used for toxicity testing of drugs designed to treat neuromuscular diseases, such as MND and spinal muscular atrophy.¹²³ When the researchers tested three known drugs on this model, the results matched live human data. Scientists at Harvard University and Lawrence Livermore National Library are also using brain-on-a-chip technology to study how neurons communicate and how exposure to certain chemicals may affect the human brain over time.^{124,125}

For many years, animal experimenters have tormented monkeys, mice, dogs, and other animals in an effort to create drugs to treat these devastating diseases; however, since other animals don’t get these human diseases, experimenters have manipulated their genomes in order to force certain symptoms. The results, after decades



of tests, include more than 100 failed drugs, an untold number of animal deaths, and the continued suffering of human victims of the disease. For these patients, a switch to human-relevant methods is long overdue.

Neuropsychiatric Disorders

Recommendation: End the use of animals immediately

Animal models of neuropsychiatric disorders such as depression, schizophrenia, bipolar disorder, anxiety, and attention deficit spectrum disorders lack two critical aspects of model validity: (1) construct validity, meaning that the mechanistic underpinnings creating the observed symptoms in animals are different from those that lead to the disorder in humans, and (2) face validity, meaning that animals lack the ability to “recapitulate important anatomical, biochemical, neuropathological, or behavioural features of a human disease.”¹²⁶ No single animal model is able to replicate all aspects of a particular condition, and features of human behaviour representing hallmarks of these disorders cannot be produced or properly assessed in animals.

Human depression, for example, is characterised, in part, by a generalised feeling of sadness, hopelessness, and despair. In an effort to measure “despair” in rodents, the most commonly used behavioural test is the forced swim test, in which a rat or mouse is placed in a container of water with no way to escape and no place to rest out of the water. Naturally, the rodent will spend some time swimming and trying to find a way out of the stressful situation but will eventually become immobile and float. The time spent swimming may be extended by giving the animal some forms of human antidepressant drugs, a finding that led some scientists to assert that less time spent immobile was a sign that animals were less “depressed” and that more time spent immobile meant they were more “depressed,” as if they had “given up” and were in despair.

However, as Molendijk and de Kloet discuss, immobility in the forced swim test is simply animals’ adaptation to their situation and should not be used to determine their mood.¹²⁷ Individual animals who are quicker to float also save their energy and are less likely to sink, meaning that those who pick up on this sooner and spend less time struggling are simply learning this adaptive behaviour more readily. Furthermore, the immobility response occurs after treatment with drugs that do not have antidepressant effects at all, such as caffeine and other miscellaneous drugs,^{128,129} and is sometimes not observed after treatment with drugs that do.¹³⁰ Time spent swimming versus floating is also influenced by an animal’s strain as well as experimental variances, such as water depth and temperature.^{131,132,133} Nevertheless, thousands of published papers ignore these warnings and use the forced swim test to make erroneous conclusions about an animal’s mood.¹³⁴

Experiments on neuropsychiatric conditions in animals are of poor quality. In a survey of 121 animal studies claiming to investigate attention deficit hyperactivity disorder (ADHD), only five were found to be in any way relevant to the hypotheses of the human medical papers in which they were cited. The authors of the survey concluded that “animal research has contributed very little to contemporary understanding of ADHD”.¹³⁵ A similar failure of animal studies to translate into a clinical setting has been noted with bipolar depression research,¹³⁶ and animal studies have been cited as the primary source of attrition (failure of drugs) in neurobehavioral clinical trials.¹³⁷ Significant differences in physiology between humans and other animals likely account for a large percentage of failed translation. For example, the gene encoding tyrosine hydroxylase, the enzyme involved in the formation of dopamine, was found to be regulated in an entirely different manner in humans from the way it is in mice.¹³⁸ Misregulation of tyrosine hydroxylase has been implicated in several psychiatric illnesses, such as bipolar disorder and schizophrenia.

To quote Dutch animal behaviourists van der Staay, Arndt, and Nordquist, “If evidence accumulates that the intended goal/purpose cannot be reached, then one should consider abandoning further development of the model.”¹³⁹ This group also points out that in all cases, “benefits must outweigh the ethical costs of the animals. These costs include pain and suffering, distress and death”.¹⁴⁰ Funds should be allocated to more relevant,



human-based experimental models, such as computational modelling using already well-defined biomarkers¹⁴¹ and the use of patient-specific stem cells for personalised medicine, which “affords the ability to generate neuronal cell-based models that recapitulate key aspects of human disease”¹⁴² and can be used in drug discovery. Complex diseases like schizophrenia are ideal disorders “to model through stem cell approaches due to ... heterogeneous, complex genetics that are hard to recapitulate in animal models”.¹⁴³

Recent developments in the field of human neuropsychiatric research include the following examples:

- A research group at the University of Michigan used induced pluripotent stem cells from bipolar and nonbipolar individuals to grow patient-specific neurons and glial cells. They found that cells from bipolar people were genetically and behaviourally distinct from those from non-bipolar people and that they responded differently to a commonly used therapeutic. The group is now further characterising these cells and testing other treatments.¹⁴⁴
- German neuroscientists are using virtual reality to simulate anxiety-causing events in humans.¹⁴⁵
- In Australia, researchers performed gene expression studies in post-mortem human brains, and their analyses indicated that schizophrenia may be related to the developmental complexity of the human brain.¹⁴⁶
- Scientists at the Albert Einstein College of Medicine used neurons derived from human induced pluripotent stem cells, along with the gene-editing tool CRISPR-Cas9, to identify misregulated genes following the knock-out of a gene implicated in autism and other disorders.¹⁴⁷
- A team at the Salk Institute for Biological Studies used a human cellular model of bipolar disorder to pinpoint key features of the disease, such as hyperexcitability of bipolar neurons and differences in responsiveness to lithium.¹⁴⁸
- At the University of São Paulo, induced pluripotent stem cells were derived from samples collected from three patients with autism spectrum disorder. By generating mixed cell cultures, researchers were able to study the interplay between neurons and astrocytes and pinpoint interleukin-6 as a potential mediator of autism-specific neural defects.¹⁴⁹

In addition to the lack of applicability of animal neuropsychiatric models to the human condition, animals used in this research suffer immensely. To induce “depression”, experimenters subject them to uncontrollable pain through electric shocks or chronic stressors such as restraining them for extended periods of time, starving them or denying them water, tilting their cages, forcing them to live in wet bedding, shaking them, or disrupting their circadian rhythms. Animals are often made to live in complete isolation from members of their species, bullied and physically assaulted by other animals, deprived of parental care, and subjected to genetic or surgical manipulations in an effort to induce a depressed or altered mental state. Owing to the psychological distress inherent in animals provoked to display neuropsychiatric disease tendencies and the inapplicability of the results to humans, we recommend that the use of animals in such studies be ended immediately.

Sepsis

Recommendation: End the use of animals immediately

Sepsis is estimated to affect more than 30 million people worldwide each year. Although the incident rate varies by country, the incidence of severe sepsis to the point of organ dysfunction in the European Union has been estimated at 90.4 cases per 100,000 population, as opposed to 58 per 100,000 for breast cancer.¹⁵⁰ Mice are the animals most commonly used in sepsis research – not because they make good models of human sepsis but because they’re cheap, plentiful, small, and docile.¹⁵¹ The difficulty in reliably translating results from mice to humans is believed to be the primary cause of the failure of practically all human trials of sepsis therapies.



In 2013, *Proceedings of the National Academy of Sciences of the United States of America (PNAS)* published a landmark study that had been 10 years in the making and involved the collaboration of 39 researchers from institutions across North America, including Stanford University and Harvard Medical School. Dr Junhee Seok and his colleagues compared data obtained from hundreds of human clinical patients with results from experiments on animals to demonstrate that when it comes to serious inflammatory conditions such as sepsis, burns, and trauma, humans and mice are not similar in their genetic responses.¹⁵²

NIH Director Dr Francis Collins authored an article about these results, lamenting the time and resources spent developing 150 drugs that had successfully treated sepsis in mice but failed in human clinical trials. He called this disaster “a heartbreaking loss of decades of research and billions of dollars”.¹⁵³ The *PNAS* paper reveals that in humans, many of the same genes are involved in recovery from sepsis, burns, and trauma but that it was “close to random” which mouse genes might match these profiles. Collins explains it as follows:

Mice, however, apparently use distinct sets of genes to tackle trauma, burns, and bacterial toxins – when the authors compared the activity of the human sepsis-trauma-burn genes with that of the equivalent mouse genes, there was very little overlap. No wonder drugs designed for the mice failed in humans: they were, in fact, treating different conditions!¹⁵⁴

Even before this landmark study, the criticism of mouse models had been documented in more than 20 peer-reviewed scientific papers. The mice used in sepsis experiments are young, inbred, and of the same age and weight, and they live in mostly germ-free settings; in contrast, it is mostly infant and elderly humans, who live in a variety of unsterilised, unpredictable environments, who develop sepsis.^{155,156} When experimenters induce the condition in mice, the onset of symptoms occurs within hours to days, whereas it takes place within days to weeks in humans. Mice are not typically provided with the supportive therapy that human patients receive, such as fluids, vasopressors, and ventilators.¹⁵⁷ Unlike humans, mice are rarely given pain relief,¹⁵⁸ another difference that undermines data of already questionable value, as pain affects other physiological processes.

The “gold standard” method of inducing sepsis in mice is through caecal ligation and puncture. However, mice’s responses to this procedure vary depending on age, sex, strain, laboratory, the size of needle used, and the size of the incision, which makes results incomparable between laboratories.¹⁵⁹ In addition, the procedure causes the formation of an abscess, whose effects may disguise or be disguised by the effects of the sepsis itself.¹⁶⁰ This means that an intervention that appears to be beneficial for sepsis may actually be beneficial only because of its effects on the abscess.

Rats, dogs, cats, pigs, sheep, rabbits, horses, and non-human primates, including baboons and macaques, have also been used in sepsis experimentation. None of these species reproduces all the physiologic features of human sepsis. The pulmonary artery pressure responses of pigs and sheep differ from those of humans, so this aspect of sepsis cannot be compared between these species.¹⁶¹ Furthermore, baboons and mice are less sensitive to a species of bacteria commonly used to induce sepsis in experimental settings.¹⁶²

Fortunately, researchers do not have to use animals to study and find treatments for sepsis in humans. In 2015, an expert working group consisting of veterinarians, animal technologists, and scientists issued a report on the implementation of the 3Rs in sepsis research.¹⁶³ The group noted several methods that could be used instead of animal models, such as *in vitro* cell culture models for studying sepsis mechanisms, systems and computation biology for laying out the inflammatory processes occurring during sepsis, 3-D cell culture models for exploring human disease progression and infectious disease mechanisms, synthetic human models to recreate human disease-related cell types and tissues, and human genomic information to discover how sepsis affects individuals differently and which groups may be more at risk. The authors state that genomic information “will complement or even replace the need for mouse models in disease discovery and drug development”.¹⁶⁴



The following are examples of recent developments in human-relevant sepsis research:

- Scientists at Emory University and the Georgia Institute of Technology have engineered a microfluidic vascularised bleeding model that allows them to test the effects of therapies on clot and plug formation in human blood.¹⁶⁵
- Because the clinical trajectory of sepsis can be drastically different for every individual, University of Chicago researchers propose that human genetic algorithms “can serve as a guide on the path towards true ‘precision control’ of sepsis”.¹⁶⁶
- Physicians from Cincinnati Children’s Hospital support using microfluidic devices to study sepsis in infants, whose cells could be captured from a very small amount of blood.¹⁶⁷
- Researchers from the Harvard TH Chan School of Public Health, Brigham and Women’s Hospital, and the University of Sheffield compared public datasets of the blood transcriptome profiles of adults and children with sepsis, populations that have different mortality rates from the disease. This led them to identify 10 candidate drugs that had never been linked to sepsis before.^{168,169}
- By analysing blood from patients with sepsis, a German group identified a specific microRNA as an independent risk factor for mortality and a biomarker for discriminating between sepsis and infection.¹⁷⁰

In fact, there may have already been a breakthrough in sepsis research. Physicians have recently had impressive results by treating sepsis patients with an intravenous vitamin C combination.¹⁷¹ One patient whose chance of dying from sepsis was nearly 100 per cent was well enough to leave the intensive care unit within seven days of receiving this treatment.¹⁷² An estimated 10 to 20 per cent of intensive care specialists around the world have already started using this therapy, and studies involving 13 hospitals are underway to confirm its efficacy.¹⁷³ Importantly, these successes have been achieved using only human patients, not mice or other animals, and many patients were helped tremendously in the process.

Stroke

Recommendation: End the use of animals immediately

According to researchers at the Institute for Stroke and Dementia Research in Munich, “More than 1000 neuroprotective compounds have been tested in rodent models with the aim to improve stroke outcome. ... Indeed, many agents reduced brain damage (in most cases measured as decreased infarct volume) in rodent models of experimental stroke. Out of these candidates approximately 50 neuroprotective agents were tested in more than 100 clinical stroke trials, but none has improved outcome in clinical stroke patients.”¹⁷⁴

Many factors contribute to this failure, such as flaws in experimental designs, publication bias, disease-management inconsistencies between animal models and clinical populations, and physiological differences between species. Experts in the field admit that “animal models of stroke mimic at best less than 25 percent of all strokes”.¹⁷⁵ The Stroke Therapy Academic Industry Roundtable (STAIR) published its first recommendations in 1999, but the success rate of clinical trials has not improved. One drug, NXY-059, which fulfilled the STAIR criteria, failed in clinical trials.¹⁷⁶ This illustrates the need to shift away from animal models and focus on human-centred methods.

In a 2017 review,¹⁷⁷ Clemens Sommer, MD, of the University Medical Center at Johannes Gutenberg University Mainz, details the following aspects of animal experimentation that limit the translatability of animal-based stroke research to the clinical setting:



- Most animals studied in stroke research have lissencephalic, or smooth, brains, unlike the gyrencephalic brains of humans.
- The expression of certain signalling molecules differs between rodents and humans in three types of brain cell – neurons, astrocytes, and microglia – both at baseline and in response to oxygen deprivation.
- In humans, ischaemic damage to the white matter of the brain is important in the prognosis of stroke, but white matter content in humans is much higher than in other animals. “While in humans the percentage of white matter accounts for 60%, it decreases to about 35% in dogs, 20% in rabbits, 15% in rats and is as low as 10% in mice,”¹⁷⁸ meaning that a major factor in stroke outcomes for humans cannot be accurately compared in animal models.
- Blood vessels in the brain have a different anatomy in humans compared to other animals; even strains of rodents differ in their vascular framework. These “functional differences may have deeper implications concerning the pathophysiology of the ischemic cascade”.¹⁷⁹
- In humans, the gene for the neurotransmitter nitric oxide synthase 2 (NOS2) is regulated differently than it is in mice. NOS is important, since nitric oxide may be an essential gas-signalling molecule during stroke.¹⁸⁰
- As discussed elsewhere in this report, immune system differences between humans and other species are drastic. Sommer describes this as follows:

[T]he percentage of neutrophils in mice and rats is about 10–20% compared to 50–70% in humans, while the opposite situation is seen for lymphocytes, which comprise about 50–100% in rodents compared to 20–40% in humans, respectively. Moreover, there is only a minimal intersection of whole-genome mRNA and microRNA expression in leukocytes from rodents versus humans at both baseline and after stroke, raising the question whether rodents are acceptable models at all for the human immune system after stroke.¹⁸¹

- The RNA profile of a mouse brain is more similar to that of other tissues in a mouse’s body, such as the lungs, liver, and heart, than it is to that of a human brain.¹⁸²
- Ischaemic stroke typically occurs in heterogeneous elderly patients with comorbid conditions, whereas animal stroke experiments are predominantly carried out in young, healthy, male, inbred animals.

Kaya and colleagues made the following observation:

In animal studies, prolonged survival and neurological improvement rates are not documented realistically. Histopathological findings and treatment effects are rarely adequate to reveal the mechanisms in behavioral and functional improvement. There is great difference between animal experiments and clinical practice in terms of outcome evaluation. The cerebral infarct area is used in animal experiments while neurological function and quality of life are more important in humans.¹⁸³

On the other hand, human-based models of stroke do not suffer from these deficiencies. Instead, they allow for high-throughput analyses and are “increasingly important” for “testing novel potentially neuroprotective pharmaceuticals”.¹⁸⁴ Scientists from the Department of Molecular and Cellular Physiology at Louisiana State University have written that a “key benefit of *in vitro* systems is the opportunity to work with human cells, as such Werth *et al.*, utilized the brain slice method in human cortical slices to provide the first direct evidence of glutamate receptor involvement in ischemic injury in the human brain”.¹⁸⁵

Thanks to technological advances, including accurate 3-D representations of multiple neuronal cell types and structures of the human brain, researchers are able to overcome some of the previously limiting factors of human *in vitro* brain research. As part of a \$70 million NIH programme, an interdisciplinary team of researchers at Vanderbilt University have engineered a blood-brain barrier-on-a-chip, which they are using to study human brain inflammation induced by various compounds.¹⁸⁶ Similarly, the Seattle-based biotechnology company Nortis was recently awarded a federal grant to develop its predictive preclinical living model of the blood-brain



barrier as an alternative “to traditional pharmaceutical drug development testing on laboratory animals”, which will “reduce costs and minimize clinical trial failures”.¹⁸⁷ Disruption of the blood-brain barrier following a stroke¹⁸⁸ is a critical factor to consider in attempting to move a potential therapeutic compound from a patient’s bloodstream to the brain. Scientists at the University of California–Irvine opine that “[blood-brain barrier]-on-a-chip models offer tremendous potential for recreating microvasculature in the laboratory that will allow controlled study of the mechanics of [blood-brain barrier] permeability and immune infiltration as they relate to the process of stroke”,¹⁸⁹ particularly those that employ human cells, such as human induced pluripotent stem cells, which “can be used to create clinically relevant models for [central nervous system] disease”.¹⁹⁰

A report authored by 42 scientists following a US National Institute of Neurological Disorders and Stroke workshop on translational stroke research concluded, “With increased availability of human cell lines/tissues, organoids, and inducible pluripotent stem cell technologies and high-throughput assays, *in vitro* strategies, in combination with data from animal models, may hold increasing prominence in future drug development strategies.”¹⁹¹ Animal models will never be able to recapitulate the nature of human stroke nor the human-specific inflammatory response that follows. Considering that in the US, someone suffers a stroke every 40 seconds and that someone dies of one every four minutes,¹⁹² we cannot afford to spend our limited resources on substandard animal-based research.

Substance Abuse

Recommendation: End the use of animals immediately

Fundamental aspects of non-human animals make them inappropriate for the study of human addiction. First, the use of and addiction to drugs of abuse in humans is a vastly complex experience, one that has been impossible to mimic using animals in a laboratory setting.¹⁹³ It has been argued that attempts to model human disorders such as addiction in non-human animals, especially rodents, are “overambitious” and that the “‘validity’ of such models is often limited to superficial similarities, referred to as ‘face validity’ that reflect quite different underlying phenomena and biological processes from the clinical situation.”¹⁹⁴

Second, the pharmacokinetic actions of drugs are different among species. For example, “the rate of metabolism of MDMA [street name: Ecstasy, E, or Molly] and its major metabolites is slower in humans than rats or monkeys, potentially allowing endogenous neuroprotective mechanisms to function in a species specific manner”.¹⁹⁵ Pharmacokinetic differences between humans and “model” animals likely explain why the neurotoxicity seen in rodents after MDMA administration has not been observed in the clinical setting.¹⁹⁶ Since MDMA is being explored because of not only its illegal use as a recreational drug but also its potential use as a therapeutic, accurate knowledge regarding its safety in humans is paramount.

Third, serious flaws in experimental design of addiction experiments greatly skew interpretation of their results. In the human experience with drugs, the user chooses to consume the addictive substance. They choose it over other substances or activities that they may find rewarding. Animals in laboratories are typically not given this option. When they are, the vast majority of them will choose an alternative reward, such as sugar, over the drug of abuse.¹⁹⁷ This holds true for primates as well as mice and rats.¹⁹⁸ Even in animals with very heavy previous drug use, only about 10 per cent would continue to give themselves a drug when they had the option to make another rewarding choice.¹⁹⁹ In a review on the “validation crisis” in animal models of drug addiction, French neuroscientist and addiction researcher Serge Ahmed asserts that the lack of choice offered to animals in these experiments elicits “serious doubt” about “the interpretation of drug use in experimental animals”.²⁰⁰



The non-human animal has been called a “most reluctant collaborator” in studying alcohol addiction and noted to have a “determined sobriety” that the experimenter must fight against in order to overcome “their consistent failure to replicate the volitional consumption of ethanol to the point of physical dependency”.²⁰¹ National Institute of Mental Health researchers reason that “it is difficult to argue that [drug self-administration by rodents] truly models compulsion, when the alternative to self-administration is solitude in a shoebox cage”.²⁰²

Despite the prevalence of addiction research conducted on animals, “drugs that effectively curb opioid or psychostimulant addiction by promoting abstinence and preventing relapse have yet to be developed” and “very little clinical development is currently ongoing”.²⁰³ The data from animal studies was promising in certain drug classes, but these have either failed to be effective in human trials or not been tolerated well by humans, a negative outcome that was not predicted by animal trials.²⁰⁴

Non-invasive human research methods can provide us with answers to the questions that non-human animals, in their distaste for drugs of abuse, are fundamentally unable to answer. Rutgers University Robert Wood Johnson Medical School researchers recently authored a review article describing how the use of human induced pluripotent stem cells can provide a “unique opportunity to model neuropsychiatric disorders like [alcohol use disorders] in a manner that ... maintains fidelity with complex human genetic contexts. Patient-specific neuronal cells derived from [induced pluripotent stem] cells can then be used for drug discovery and precision medicine”.²⁰⁵

Human-relevant, non-animal research on alcohol use disorder is being carried out by scientists at the University of Connecticut, who recently used stem cells donated by alcoholic and non-alcoholic subjects to study the effects of alcohol on a specific receptor in the brain that is targeted by alcohol. Their results were at odds with some of the findings from animal experiments.²⁰⁶ At Rutgers, scientists used patient-derived cells to generate neural cell types specific to individuals in which they could study alcohol’s effects on various aspects of cell physiology. Their results demonstrated a role for neuronal inflammation in the pathophysiology of alcohol use disorder.²⁰⁷ Others are using human induced pluripotent stem cells to study the effects of alcohol on the human liver.²⁰⁸

In addition, the funds used to support ineffective and wasteful animal substance-abuse studies could instead be used to aid effective and directly human-relevant drug prevention, rehabilitation, and mental health-care programmes.

Trauma

Recommendation: End the use of animals immediately

After rodents, pigs are the species most commonly used in trauma experimentation. However, notable species-specific differences between pigs and humans render results from this research unintelligible. For example, pigs’ coagulation activity differs from that of humans, making it difficult to achieve a state of coagulopathy, or the inability to clot, in pigs. In instances of human trauma, coagulopathy represents part of the “lethal triad” for patients and is a great concern for researchers and physicians.²⁰⁹ In addition, there are differences in the administration of mechanical ventilation and drugs such as vasopressin and heparin in research.^{210,211} Importantly, as with mice and humans, immune responses are different between pigs and humans.

Trauma is extremely heterogeneous: patients differ in age, gender, ethnicity, medical history, alcohol and drug use, and the presence of other injuries, making the production of an appropriate animal model difficult,²¹² if not impossible. In studies of traumatic brain injury, all promising therapeutics identified in animals have failed



in human clinical trials.²¹³ There is a significant amount of discussion regarding the limitations of animal models of trauma and haemorrhagic shock, which is summarised in this excerpt from a review by Combes:

Scientific problems with the animal models include the use of crude, uncontrolled and non-standardised methods for traumatising, an inability to model all key trauma mechanisms, and complex modulating effects of general anaesthesia on target organ physiology. Such effects depend on the anaesthetic and influence the cardiovascular system, respiration, breathing, cerebral haemodynamics, neuroprotection, and the integrity of the blood-brain barrier. Some anaesthetics also bind to the NMDA brain receptor with possible differential consequences in control and anaesthetised animals. There is also some evidence for gender-specific effects. Despite the fact that these issues are widely known, there is little published information on their potential, at best, to complicate data interpretation and, at worst, to invalidate animal models. There is also a paucity of detail on the anaesthesiology used in studies, and this can hinder correct data evaluation.²¹⁴

Fortunately, it has been shown that computer simulation can accurately replicate real-life trauma and predict patient outcomes.²¹⁵ For example, scientists at the University of Pittsburgh used a computer model to examine the relationship between spinal cord injury and pressure ulcers in human patients and found that a certain treatment was effective at reducing inflammation and tissue damage.²¹⁶ This Pittsburgh group also used data-driven and mechanistic modelling to discover that the inflammatory response of patients who survive traumatic brain injury is different from that of individuals who do not survive, information that “may point to both novel mechanistic insights and clinically translational applications”.²¹⁷

In addition to the already-mentioned human-relevant methods that can be used to study molecular aspects of the side effects of and comorbidities related to trauma, clinical research remains invaluable in this field and informs mathematical and computer modelling. German researchers conducted a study of 35,232 patients over the course of 12 years and revealed a reduction in intubation rates, ventilation, and systemic complications such as sepsis.²¹⁸ A study conducted at the US Army Institute of Surgical Research used data from more than 250 human experiments to model mechanistically the physiology that underlies blood loss and shock in humans suffering from haemorrhage. The authors describe the study as follows:

Unlike an animal model, we introduce the utilization of lower body negative pressure as a noninvasive model that allows for the study of progressive reductions in central blood volume similar to those reported during actual hemorrhage in conscious humans to the onset of hemodynamic decompensation (i.e. early phase of decompensatory shock), and is repeatable in the same subject. Understanding the fundamental underlying physiology of human hemorrhage helps to test paradigms of critical care medicine, and identify and develop novel clinical practices and technologies for advanced diagnostics and therapeutics in patients with life-threatening blood loss.²¹⁹

As a result of the heterogeneity of the causes and outcomes of trauma, and because of physiological and immunological differences among species, only human-relevant research methods are suitable for informing human trauma research.



Training and Forensic Enquiries

Detailed below are opportunities to end the use of animals immediately in forensic research and biomedical education.

Forensic Sciences

Recommendation: End the use of animals immediately

Forensic science is a unique research area and deserves serious ethical scrutiny, as its goal is to understand crime-related issues, rather than improving human health or life conditions, and the experimental methods are often horrific and conducted without anaesthesia. Italian scientists Cattaneo and colleagues explain that there is a “moral obligation to pursue and respect this [responsibility to take care of other animal species], especially where mankind’s actual survival is not at risk”.²²⁰

The use of animals in forensic research was heavily criticised as early as 1992, when Bernard Knight asserted that “painful, sometimes mutilating experiments on conscious animals” in order to obtain “tenuous potential benefit to some medico-legal problem” cannot be condoned, particularly when one considers that such works “are not regularly used in routine forensic practice” and just “gather dust in university libraries”.²²¹ He also observed that “a vast amount of published material using animal experimentation seems to have little practical relevance, other than to expand the curriculum vitae and the career prospects of the researcher”.²²²

In 2015, Cattaneo and colleagues published a meta-analysis and review examining 404 forensic science articles and found that 69.1 per cent “concerned studies involving animals sacrificed exclusively for the sake of the experiment” and that “killing still frequently includes painful methods such as blunt trauma, electrocution, mechanical asphyxia, hypothermia, and even exsanguination; of all these animals, apparently only 60.8% were anesthetized”.²²³ In 2018, another meta-analysis was conducted by South African researchers Calvin Gerald Mole and Marise Heyns, who examined 204 original forensic science studies, using 5,050 animals, which were conducted between 2012 and 2018.²²⁴ In these, animals, including rats, pigs, mice, rabbits, sheep, and cows, were drowned, electrocuted, cut, beaten, and made to ingest acid, among other cruel procedures. Mole and Heyns conclude that not enough is being done in forensic science research to uphold basic ethical principles of research and to adhere to the 3Rs.

Cruelty aside, Cattaneo and colleagues stress, “[T]he history of forensic sciences has provided us with much evidence of the inapplicability of data obtained from studies performed on animal models,”²²⁵ given the anatomical, physiological, and genetic differences between species. Mole and Heyns suggest that “much of the reported animal tissue use in the traumatic research articles in the current study could be minimized using human tissue obtained at medico-legal autopsy” and that “[m]edico-legal autopsies may be an underutilized resource for scientific research specimens”.²²⁶

In addition, there are a plethora of alternative methods, such as manikins, simulators, artificial materials, and *in vitro* technology, and “applying alternative methods rather than using animals has provided, in the forensic field, important and reproducible results”.²²⁷ Taken together, the ethical problems and scientific and practical issues associated with animal experimentation as well as the abundant and readily available alternative methods signify that forensic research is a prime area for animal use to end immediately.



Medical Training

Recommendation: End the use of animals immediately

Animals have traditionally been used in biomedical education to teach human physiology and pharmaceutical principles, study human anatomical form and function, and practise human surgical procedures. Yet the following recent developments have contributed to a paradigm shift in this field: improvements in human-patient simulation and computer-assisted learning technology that teaches biomedical education as well as or better than animal dissection and experimentation,²²⁸ rising public opposition to animal use in laboratories,²²⁹ increasing animal laboratory cost burdens,²³⁰ and a renewed focus by the medical community on improving patient safety and reducing clinical errors through simulation-based training.²³¹

Medical experts have recommended a transition from an animal-based pedagogy to “a robust curriculum composed of didactics, task trainers, virtual reality, cadavers, computer software, high-fidelity patient simulators, and supervised clinical work”.²³² Unlike animal-based laboratories, these non-animal training methods accurately model human anatomy, physiology, and pharmaceutical intervention and can effectively prepare students for the workplace. Further benefits include allowing students to repeat medical procedures until proficiency is achieved, improving provider confidence and transference of learned skills to clinical practice, and allowing educators to receive real-time objective performance feedback.²³³

Microsurgery Training

There now exists an array of low- and high-fidelity non-animal methods that researchers have developed for the effective teaching of a wide variety of basic and advanced microsurgical skills to novice and expert physicians and that have been endorsed as replacements for live-animal use. These include task trainers and perfused human cadavers that can teach procedures such as anastomoses, resection of artificial tumours, bypasses, and aneurysm creation, dissection, and clipping.

For example, a study from the University of Toronto comparing the microsurgical anastomosis skills of surgical residents trained on live rats versus those trained on a silicone model found that, following identical initial training on inanimate models, the latter group was as proficient at performing single-layer, microsurgical anastomoses as those trained on live animals. The authors concluded, “[T]raining with low-fidelity bench models is as effective as training with high-fidelity, live animal models for the acquisition of technical skill among surgical trainees.”²³⁴

A systematic review of microsurgical training methods supported these findings:

It would appear from the best available evidence that simulated microsurgery training on low fidelity models can be as effective as on high fidelity models. ... In the UK and elsewhere, the mainstay of microsurgical simulated training has historically been exposure to an in vivo rat microsurgery course, but generally this at a far too early stage in training where the bridge with clinical hands-on exposure to relevant cases cannot be made, and without repetition.²³⁵

Trauma Training

A study published by a US Air Force team compared the self-efficacy reported by military trainees taught emergency procedures on human simulators versus those taught using live animals and found equivalent results in both groups, concluding that “the belief in the superiority of animal training may just be a bias” and that “if the goal for trainers is to produce individuals with high self-efficacy, artificial simulation is an adequate modality compared with the historical standard of live animal models”.²³⁶ The lead author published a separate letter in the same medical journal stating, “We have entered into an age where artificial simulator models are



at least equivalent to, if not superior to, animal models. ... [T]he military should make the move away from all animal simulation when effective equivalent artificial simulators exist for a specific task. For emergency procedures, this day has arrived.”²³⁷

Non-animal methods are used exclusively instead of animals for military trauma training by nearly 80 per cent of NATO member states,²³⁸ and the US Coast Guard has become the first branch of the US Armed Forces to end the use of animals for this practice.²³⁹ These developments confirm that animal use for trauma training is neither necessary nor justified.

Efforts to replace animals with human simulators in military trauma training have gained many prominent supporters, including, recently, The New York Times Editorial Board²⁴⁰ as well as numerous medical and veterans organisations representing more than 255,000 physicians and doctors-in-training, which have former US Surgeons General among their leadership.²⁴¹

In the civilian sector, the American College of Surgeons has affirmed that human simulators can replace the use of animals in Advanced Trauma Life Support (ATLS) training, and national ATLS programmes in numerous countries have made this transition and ended animal use for this purpose.²⁴²

Given the non-animal training methods already available, we recommend that the use of animals for military and civilian trauma training and microsurgery training be ended immediately.



Toxicity Assessment

Detailed below are opportunities to end or significantly reduce the use of animals for the toxicity assessment of substances in the context of regulatory toxicity requirements. Also described are areas in which greater support is required to develop innovative methods that are relevant for the assessment of human health endpoints.

Please note that where tests are required for regulatory purposes, the OECD website (www.OECD.org) should be consulted for the most recent versions of test guidelines and guidance documents.

Exposure-Based Assessment

Recommendation: Immediately promote the use of exposure-based waiving as an opportunity to reduce the use of animals dramatically

Exposure-based waiving will reduce animal testing by shifting the focus of regulatory decision-making from a hazard-based to an exposure-based approach. This strategy employs “fit-for-concern” assessments rather than simple “box-ticking” by exploring safety based on real concerns and avoiding characterising hazards not relevant to human safety. The pesticide industry is actively seeking ways to promote exposure-based waiving for the assessment of their products.

Further work and collaboration by all involved stakeholders will be necessary to determine whether exposure-based waiving can be accepted and approved by regulatory authorities and the public.

Skin Irritation/Corrosion

Recommendation: Immediately eliminate the use of animals for skin irritation/corrosion testing

Skin irritation and corrosion tests for chemicals are required or recommended by multiple regulatory agencies. In these tests, rabbits are shaved, test substances are applied to their exposed skin, and they are observed for up to 14 days to assess the degree of skin damage. The tests can cause permanent skin damage, ulcers, bleeding, bloody scabs, and scarring. There is no requirement that animals be provided with pain-relieving drugs during this prolonged process.

Despite years of use, animal-based skin irritation studies have never been properly validated. Evidence exists that they are highly variable, of limited reliability, and generally poor predictors of human skin reactions. For example, a comparison of data from rabbit tests and four-hour human skin patch tests for 65 substances found that 45 per cent of classifications of chemical irritation potential based on animal tests were incorrect.²⁴³

The Organisation for Economic Co-operation and Development (OECD) has developed an integrated approach to testing and assessment (IATA) for skin irritation using *in vitro* skin irritation and corrosion methods that avoids or minimises animal use.²⁴⁴



- **OECD Test No 439: *In Vitro* Skin Irritation: Reconstructed Human Epidermis (RHE) Test Method:** May be used for the hazard identification of irritant chemicals (substances and mixtures), in accordance with the UN Globally Harmonized System of Classification and Labelling (GHS), as category 2, category 3, or non-classified chemicals. May be used as a stand-alone test or in a tiered testing strategy.
- **OECD Test No 430: *In Vitro* Skin Corrosion: Transcutaneous Electrical Resistance (TER) Test Method:** May be used for the identification of non-corrosive and corrosive test chemicals in accordance with the GHS.
- **OECD Test No 431: *In Vitro* Skin Corrosion: RHE Test Method:** May be used for the identification of corrosive chemical substances and mixtures. May also distinguish between severe and less severe skin corrosives.
- **OECD Test No 435: *In Vitro* Membrane Barrier Test Method for Skin Corrosion:** Allows for the subcategorisation of corrosive chemicals into the three GHS subcategories of corrosivity.

Recently, OECD TG 439 was validated for use in assessing the ability of medical device extracts to cause skin irritation, and the ISO 10993 guidance is currently being updated to include this test.²⁴⁵²⁴⁶ A number of the above methods are currently undergoing evaluation in a joint effort by the US Environmental Protection Agency (EPA), industry, and the US NTP Interagency Centre for the Evaluation of Alternative Toxicological Methods (NICEATM) for use with pesticide products. This evaluation consists of side-by-side comparison and analysis of existing *in vitro* and *in vivo* data generated by pesticide companies for their products. Depending on the outcome of these efforts, additional work may be needed to validate the use of these methods with certain classes of chemicals that were not covered during OECD validation efforts.

Additionally, there are opportunities available to waive these tests based on criteria described in the OECD guidance document on considerations for the waiving or bridging of mammalian acute toxicity tests.²⁴⁷

Eye Irritation/Corrosion

Recommendation: Immediately eliminate the use of animals for eye irritation/corrosion testing

To assess eye irritation and corrosion using the Draize eye irritancy test, a chemical substance is applied to rabbits' eyes and the degree of damage is monitored over a 14-day period. Rabbits may endure eye swelling, discharge, ulceration, haemorrhaging, cloudiness, or blindness. The Draize test was developed 75 years ago, and advanced replacements have since been developed and validated. Furthermore, an analysis of 491 chemicals with at least two rabbit eye tests showed that there was a 73 per cent (for category 1), 32.9 per cent (for category 2A), 15.5 per cent (for category 2B), and 93.9 per cent (for no category) probability of obtaining the same GHS classification more than once.²⁴⁸ Importantly, these results showed that there was a 10.4 per cent chance that a chemical once identified as category 1 would later be identified as no category. The majority of category 2A and 2B chemicals were classified differently in repeat testing: 59.4 per cent of category 2A chemicals and 80.2 per cent of category 2B chemicals were classified as no category in a second test.

While no single *in vitro* test can predict the full range of serious eye damage/irritation categories, it is possible to categorise a test substance using only one method. A top-down approach is used when chemicals are expected, based on existing information, to have a high irritancy potential or induce serious eye damage. Conversely, a bottom-up approach may be used when chemicals are expected, based on existing information, not to cause sufficient eye irritation to require a classification. An OECD guidance document on an IATA of serious eye damage and irritation was published in 2017.²⁴⁹



- **OECD Test No 491: Short Time Exposure (STE) *In Vitro* Test Method.** May be used to identify chemicals causing serious eye damage (GHS category 1) or not requiring classification (GHS no category). May also allow the classification of irritants as minimal, moderate, or severe.
- **OECD Test No 492: Reconstructed human Cornea-like Epithelium (RhCE) Test Method (EpiOcular™, MatTek).** May be used to identify chemicals not classified for eye irritation or causing serious eye damage (GHS no category).
- **OECD Test No 460: Fluorescein Leakage Test Method.** May be used to identify chemicals causing serious eye damage (GHS category 1) or not requiring classification (GHS no category). Recommended as an initial step within a top-down approach to identifying ocular corrosives or severe irritants.
- **OECD Test No 437: Bovine Corneal Opacity and Permeability (BCOP) Test Method.** May be used to identify chemicals causing serious eye damage (GHS category 1) or not requiring classification. Validated by the Interagency Coordinating Committee on the Validation of Alternative Methods (ICCVAM), the European Union Reference Laboratory for Alternatives to Animal Testing (EURL ECVAM), and the Japanese Center for the Validation of Alternative Methods (JaCVAM).
- **OECD Test No 438: Isolated Chicken Eye Test Method.** May be used to identify chemicals causing serious eye damage (GHS category 1) or not requiring classification. Validated by ICCVAM, EURL ECVAM, and JaCVAM. Recommended as the first step within a top-down or bottom-up testing strategy.

These methods are generally validated for use with cosmetics and industrial chemicals that fall under the Registration, Evaluation, Authorisation and Restriction of Chemicals (REACH) regulation, and there may be limitations for some methods with certain types of chemicals (e.g. surfactants, solids, etc.). None of the current OECD-approved assays is recommended for directly determining category 2 eye irritants in a regulatory setting, but category 2 can be inferred if a substance is demonstrated not to be category 1 (severe eye damage) or no category. There is a vital need for validation of a non-animal method that can directly predict category 2 (irritant) substances for use in a regulatory setting.

The EPA currently accepts the use of *in vitro* methods for the determination of eye irritation and corrosion when classifying antimicrobial cleaning products and other pesticide products on a case-by-case basis, and it has published a guidance document describing the testing framework that industry can use for this endpoint.²⁵⁰ Also, the agency, in collaboration with the PETA International Science Consortium Ltd. (the Science Consortium), NICEATM, and industry members, is currently engaged in evaluating these methods for use with agrochemical formulations through a side-by-side comparison of *in vitro* and *in vivo* data. This project is expected to be completed in 2020.

India, as per the modifications in the Drugs and Cosmetics (Amendment) Act, 2017 accepts the OECD-validated *in vitro* methods for eye irritation for all the products under its mandate.

Additionally, there are opportunities available to waive these tests based on criteria described in the OECD guidance document on considerations for waiving or bridging of mammalian acute toxicity tests.²⁵¹

Skin Sensitisation

Recommendation: Immediately eliminate the use of animals for skin sensitisation testing

The assessment of skin sensitisation involves measuring the likelihood that a substance will cause an allergic reaction if applied to the skin. In animals, such assessments have previously been based on applying a test substance to the shaved skin of guinea pigs or to the ears of mice, who are later killed. Fortunately, for industrial chemicals and drugs, the regulatory requirement to test for skin sensitisation can be fully replaced with a combination of *in vitro* and *in chemico* assays that each address a different key event in the adverse



outcome pathway (AOP) for this endpoint.²⁵² The methods distinguish between sensitisers and non-sensitisers and are recommended to be used in an IATA.

- **OECD Test No 442C: In Chemico Skin Sensitisation: Direct Peptide Reactivity Assay (DPRA).** The DPRA addresses the molecular initiating event of the skin sensitisation AOP.
- **OECD Test No 442D: In Vitro Skin Sensitisation Assays Addressing the AOP Key Event on Keratinocyte Activation.** This test guideline addresses the second key event of the skin sensitisation AOP.
- **OECD Test No 442E: In Vitro Skin Sensitisation Assays Addressing the Key Event on Activation of Dendritic Cells on the Adverse Outcome Pathway for Skin Sensitisation.** This method addresses the third key event of the skin sensitisation AOP.

A recent study showed that non-animal approaches to predicting skin sensitisation are as good as or better than the mouse test when compared to human data.^{253,254} While none of the methods is endorsed for potency determination, several approaches – for instance, the human cell line activation test (h-CLAT) – show promise in this regard.²⁵⁵ Further efforts are underway to explore this potential.

The OECD has published a guidance document on the reporting of defined approaches to be used within IATA for skin sensitisation.²⁵⁶ In general, the methods can be used to test cosmetics and industrial chemicals. The EPA accepts the use of non-animal approaches to testing single chemicals and is conducting a validation study with a goal of expanding this policy to formulations in the near-term future.²⁵⁷ Likewise, the UK accepts *in vitro* methods for addressing the potential of pesticides to cause skin sensitisation for plant-protection products.²⁵⁸ Additionally, there is an effort underway to validate non-animal skin sensitisation methods to replace the ISO 10993–required guinea pig skin sensitisation test for assessing medical device biocompatibility.²⁵⁹ There are opportunities to waive these tests based on criteria described in the OECD guidance document on considerations for waiving or bridging of mammalian acute toxicity tests.²⁶⁰

Pyrogenicity

Recommendation: Immediately eliminate the use of animals for pyrogenicity assessment

Before drugs and medical devices can be marketed, regulators require testing to demonstrate that they are not contaminated with substances that trigger a fever response. These substances, collectively termed pyrogens, are chemically and structurally diverse but incite fever in humans through a common mechanism: peripheral blood monocytes and macrophages detect pyrogens and release pro-inflammatory cytokines that induce a rise in body temperature.

The rabbit pyrogen test (RPT) requires that rabbits be injected with a test substance and subsequently restrained for three hours, during which changes in their body temperature are monitored rectally. In Europe alone, more than 100,000 rabbits are used each year in the RPT,²⁶¹ even though it has never been formally validated for its relevance to humans and its results can vary depending on the animal's stress level. There are also differences in pyrogen sensitivity among species, and the test is incompatible with certain drug classes.²⁶²

The Limulus amoebocyte lysate test (LAL), also called the bacterial endotoxins test, detects only bacterial endotoxins and no other pyrogens. It requires the use of haemolymph from captured horseshoe crabs. After the biomedical bleeding process, up to 30 per cent of the crabs die. Those who live are less likely to survive in the wild.²⁶³ A synthetic version of the LAL, in which the haemolymph is replaced by a recombinant reagent (the recombinant factor C assay), is available, but sensitivity is still limited to bacterial endotoxins.

Since 2010, the monocyte activation test (MAT) has been validated and included in the *European Pharmacopoeia (Ph Eur)* as a test for assessing pyrogen contamination.²⁶⁴ It mimics the innate human fever



response *in vitro*, exposing human whole blood or isolated human monocytes to test articles followed by tests to detect pro-inflammatory cytokines released during exposure, and it is compatible with drugs and medical devices.²⁶⁵ It avoids the aforementioned problems with the RPT and LAL tests, and case studies document instances in which the MAT detected pyrogen contamination in products that had passed the RPT and LAL but caused fever in human patients.²⁶⁶

Regulators in the EU, India, and the US accept the MAT, and the pharmacopoeias used in these regions all allow its use following product-specific validation. Nevertheless, animal tests are still used, despite their well-documented limitations.²⁶⁷ To eliminate the use of animals in pyrogen tests, regulatory authorities and standards organisations must make increased effort to integrate and harmonise a preference for the MAT in international testing requirements and to encourage drug and device manufacturers to use and submit data from the MAT in their product dossiers. In September 2018, participants at a workshop organised by the PETA International Science Consortium and NICEATM discussed non-animal approaches to medical device pyrogen testing. Publication of the resulting report is forthcoming.²⁶⁸

Following a survey of pyrogen test users, the European Directorate for the Quality of Medicines & HealthCare (EDQM) revised the *Ph Eur* general chapter on the MAT to improve the method's usability and to emphasise that it is considered a replacement for animal-based pyrogen tests.^{269,270} This endorsement is repeated in statements from the European Medicines Agency.²⁷¹ The International Organization for Standardization (ISO) is revising its guidance to allow use of the MAT when evaluating medical device pyrogen contamination, but the revision process has moved slowly.²⁷² In the 8th edition of *Indian Pharmacopoeia*, the Indian Pharmacopoeia Commission revised the pyrogen testing general chapter, introduced the monograph on MAT, and replaced the RPT with the LAL.²⁷³ Drug and device manufacturers report discomfort with regulatory ambiguity about the applicability of the MAT as a stand-alone pyrogen test, and the RPT and LAL will continue to be used until this is resolved.

Tobacco and E-Cigarette Testing

Recommendation: Immediately eliminate the use of animals for developing and testing tobacco and e-cigarette products

Around the world, animals are used to test existing tobacco products and for the development of new ones, such as e-cigarettes. In such tests, rats may be squeezed into narrow tubes, immobilised, and forced to inhale toxic substances for up to six hours each day for several years.

The European Commission Scientific Committee on Health, Environmental and Emerging Risks (SCHEER) appropriately states that, in light of the European Union (EU) policy banning animal studies for chemicals to be used in voluntary products such as cosmetics, animal studies are not endorsed to assess the safety of tobacco additives.²⁷⁴ In addition, Belgium, Estonia, Germany, Slovakia, and the United Kingdom already prohibit animal tests for tobacco products because of ethical concerns.^{275,276,277,278,279}

The hazard assessment of tobacco products increasingly employs innovative non-animal methods, including the exposure of cell and tissue cultures to whole cigarette smoke or e-cigarette vapour at the air-liquid interface, cell transformation assays (CTAs), and genomic analyses.^{280,281,282,283} These techniques have been used to investigate cytotoxicity, genotoxicity, inflammation, and gene expression. They are more relevant to actual human exposure than are animal tests that have historically under-predicted the hazards of tobacco.



Genotoxicity

Recommendation: In light of existing non-animal methods and WoE approaches, the use of animals in genotoxicity testing can be dramatically reduced

Currently, the assessment of genotoxicity typically follows a step-wise approach, beginning with a core battery of *in vitro* tests that may be followed up by *in vivo* studies if the *in vitro* results are positive. The major endpoints that must be evaluated are gene mutation, structural chromosomal aberrations, and numerical chromosomal aberrations. In its “Strategy to Avoid and Reduce Animal Use in Genotoxicity Testing”, EURL ECVAM recommends the Ames test to identify gene mutations, combined with the *in vitro* micronucleus test to identify both structural and numerical chromosomal aberrations.²⁸⁴ If a substance produces negative results in both tests, it can be categorised as having no genotoxic potential and no further testing is indicated. If a substance produces positive results in either test, certain regulatory applications currently specify *in vivo* tests as the next step. This is because while *in vitro* tests are highly sensitive, producing false negative results at a low rate, they are less specific, producing false positive results at a higher rate. The number of false positive results can be reduced by using p53-competent human cells, evaluating cytotoxicity based on cell proliferation, and testing at reduced maximum concentrations.²⁸⁵ These considerations have been incorporated into recent revisions of OECD test guidelines.

- **OECD Test No 490: *In Vitro* Mammalian Cell Gene Mutation Tests Using the Thymidine Kinase Gene.** Two distinct assays can be used to detect gene mutations induced by chemical substances.
- **OECD Test No 487: *In Vitro* Micronucleus Test.** This test can be used to detect micronuclei in the cytoplasm of interphase cells that have undergone cell division during or after exposure to the test substance.
- **OECD Test No 471: Bacterial Reverse Mutation Test.** This test uses amino acid–requiring *Salmonella typhimurium* and *Escherichia coli* to detect point mutations by base substitutions or frameshifts.
- **OECD Test No 473: *In Vitro* Mammalian Chromosomal Aberration Test.** This test identifies chemical substances that cause structural chromosomal aberrations in cultured mammalian somatic cells.
- **OECD Test No 476: *In Vitro* Mammalian Cell Gene Mutation Test Using *Hrpt* and *xrpt* Genes.** These tests can detect gene mutations induced by chemicals.

To undertake a better assessment of the genotoxic potential of substances that produce positive results in the core battery, additional *in vitro* tests can be used in place of *in vivo* tests. In its “Notes of Guidance for the Testing of Cosmetic Ingredients and Their Safety Evaluation”, the European Commission’s Scientific Committee on Consumer Safety (SCCS) recommends using a micronucleus test on 3-dimensional (3-D) reconstructed human skin or a comet assay either in mammalian cells or on 3-D reconstructed human skin.²⁸⁶ However, negative results produced in these alternative tests do not necessarily rule out genotoxic potential. In such cases, expert judgement as well as mechanistic investigations may be helpful in evaluating the WoE. For example, *in vitro* toxicogenomics-based tests can provide information on the mode of action of potential genotoxicants by identifying global gene expression changes.

Validation studies of the micronucleus test and comet assay on 3-D reconstructed human skin are currently being conducted and thus providing further opportunities for phasing out the use of animals for genotoxicity testing.²⁸⁷



Acute Systemic Toxicity

Recommendation: In light of existing non-animal methods and weight-of-evidence (WoE) approaches, the use of animals for acute systemic toxicity testing can be dramatically reduced

To determine the danger of acute exposure to a product or chemical, a substance is administered to animals in extremely high doses through force-feeding (oral), skin contact (dermal), and/or forced inhalation. In this test, the dose at which half the animals would be killed – called the lethal dose 50 (LD₅₀), or lethal concentration 50 (LC₅₀) for inhalation testing – is calculated. Animals may endure severe abdominal pain, diarrhoea, convulsions, seizures, paralysis, or bleeding from the nose, mouth, or genitals before they ultimately die or are killed. The LD₅₀ and its adaptations have never been scientifically validated, and their accuracy in predicting chemical effects in humans remains questioned. One analysis of the variability of the acute oral toxicity animal test showed that there is 78 or 74 per cent accuracy in obtaining the same EPA or GHS classification, respectively, if the same chemical is tested more than once.²⁸⁸

Regulatory authorities may issue waivers for acute toxicity testing in animals if certain criteria are met. The OECD has published guidance for waiving or bridging acute toxicity testing,²⁸⁹ and the EPA has published similar guidance for pesticides and pesticide products.²⁹⁰ This includes the use of existing data for read-across and the consideration of the physicochemical properties of the test substance.

Acute Oral Toxicity

NICEATM and ICCVAM organised a project to develop predictive models for acute oral systemic toxicity.²⁹¹ The outcome was consensus quantitative structure-activity relationship (QSAR) models for the prediction of acute oral toxicity to meet various regulatory needs, which were presented at an April 2018 workshop.²⁹² The models are being optimised and will be posted on the NICEATM and EPA websites.

EURL ECVAM's strategy to replace, reduce, and refine the use of animals in the assessment of acute mammalian systemic toxicity focuses on the *in vitro* 3T3 neutral red uptake (NRU) cytotoxicity assay, which can be used in a WoE approach to support the identification of non-classified substances.²⁹³ *In vitro* tests such as the 3T3 NRU and normal human keratinocyte assays that measure basal cytotoxicity can also be useful in determining starting doses in animal tests. EURL ECVAM is currently working to improve confidence in the 3T3 NRU through the use of QSARs and by accounting for target organ information and the lack of metabolism in 3T3 cells.^{294,295,296} In addition, it has proposed an approach to identifying non-classified substances using information from 28-day repeated dose toxicity studies, thereby avoiding acute systemic toxicity testing.²⁹⁷

In its "Guidance on Information Requirements and Chemical Safety Assessment", the European Chemicals Agency (ECHA) advises that an *in vivo* acute oral toxicity study can potentially be avoided if a registrant has relevant data, which are used in a WoE approach.²⁹⁸ In cases in which the WoE adaptation leads to the assumption of low/no expected acute oral toxicity (>2000 mg/kg bw/d), the registrant can avoid unnecessary animal testing pursuant to REACH Articles 13(1) and 25(1).²⁹⁹

Acute Dermal Toxicity

Testing by the dermal route of exposure can be waived if data on oral toxicity are available. The EPA and NICEATM analysed the relative contributions of data from acute oral and dermal toxicity tests to pesticide hazard classification and labelling. Finding that the dermal data provided little to no added value in regulatory decision-making, the EPA published guidance allowing registrants to submit waiver requests.³⁰⁰ In addition, dermal studies can be waived for substances that are non-classified by the oral route and not absorbed dermally. The European Commission recently amended REACH Annex VIII so that substances that are non-classified by the oral route do not require dermal data.



Acute Inhalation Toxicity

Testing by the inhalation route of exposure can be waived if substances demonstrate low volatility and are not aerosolised or otherwise made respirable under conditions of use. In addition, promising research efforts are underway to develop non-animal methods for acute inhalation toxicity.^{301,302} A recent series of webinars (www.piscltd.org.uk/inhalation-webinars) and a workshop hosted by the Science Consortium and NICEATM presented several approaches that could eventually replace animal testing for this endpoint.^{303,304}

Carcinogenicity

Recommendation: In light of existing non-animal methods and WoE approaches, the use of animals in carcinogenicity testing can be dramatically reduced

The OECD carcinogenicity study (Test No 451) currently requires that testing be conducted on rats (or other species when justified) for the majority of their life (up to two years for rodents). The test requires the use of 50 animals of each sex per dose, and a minimum of three doses and control for each study, which equates to a minimum total of 400 rats or mice per chemical. However, the National Toxicology Program, the primary organisation conducting the rodent cancer bioassay in the US, has reportedly increased the size of the dose group from 50 animals to 200 animals per dose, thus using a minimum of 1,600 animals per carcinogenicity study.³⁰⁵ An updated guideline has been published to combine the one-year chronic study with the carcinogenicity study as reported in OECD Test No 453, sparing a minimum of 80 rodents per chemical.

While carcinogenicity studies are still routinely conducted, the test has been under scientific scrutiny since the early 1970s for its lack of ability to predict human outcomes. Several reviews have been conducted over the past three decades to highlight the overall lack of reliability in the carcinogenicity study.^{306,307,308,309,310,311,312,313,314,315,316,317,318,319} Two assumptions underlay the bioassay: (1) rodent carcinogens are human carcinogens, and (2) high-dose chemical exposure in rodents is indicative of an environmentally relevant dose.³²⁰ Both have been proved incorrect by 50 years' worth of carcinogenicity data.

In an assessment of 202 pesticide evaluations from the EU review programme, it has been demonstrated that the mouse carcinogenicity study contributed little or nothing to either derivation of an acceptable daily intake for assessment of chronic risk to humans or hazard classification for labelling purposes.³²¹ In terms of pesticide approvals, the authors showed that the mouse study did not influence a single outcome. An additional study reported that data collected from 182 pharmaceutical chemicals show that little value is gained from the carcinogenicity study when compounds lack certain histopathologic risk factors, hormonal perturbation, and positive genetic toxicity results.³²² This study highlights the opportunity to use a WoE approach to determine whether the carcinogenicity study can be waived for chemicals that meet certain criteria.

In vitro CTAs recapitulate a multistage process that closely models *in vivo* carcinogenesis, and they have the potential to detect both genotoxic and non-genotoxic carcinogens. In its recommendation on the CTA based on the Bhas 42 cell line, EURL ECVAM notes that information on the transforming potential of substances generated by CTAs may be sufficient for decision-making.³²³ In a validation study, the Bhas 42 CTA was tested with 98 substances, including carcinogens and non-carcinogens; for predicting carcinogenicity, its performance was equivalent or superior to conventional genotoxicity assays.³²⁴ As the protocols were transferable and reproducible between laboratories, they are recommended for routine use. In addition, because the Bhas 42 CTA is based on a cell line rather than primary cells, no animals are required.

In its guidance document on the Bhas 42 CTA, the OECD recommends that it be used as part of a testing strategy rather than as a stand-alone assay. When combined with other information, such as genotoxicity data, structure-activity analysis, and toxicokinetic information, CTAs in general – and the Bhas 42 CTA specifically –



can contribute to the assessment of carcinogenic potential and may provide an alternative to the use of *in vivo* testing.³²⁵

The structural alerts (SAs) rulebase has recently been expanded with a large number of new SAs for non-genotoxic carcinogenicity and has been incorporated into the OECD QSAR Toolbox version 4.2.³²⁶ Additionally, the EPA has published a computer system, OncoLogic™, to evaluate chemicals for carcinogenic potential,³²⁷ and commercial options are also available, such as the Lhasa Carcinogenicity Database, MultiCASE, UL Cheminformatics, and Leadscope. Ultimately, the identification of DNA-reactive chemicals with the Ames test or genotoxic SAs can potentially be combined with the identification of non-genotoxic carcinogens using non-genotoxic SAs, leaving CTAs to model most of what is left unexplained in a WoE approach. There is an effort underway at the OECD level to generate an IATA for non-genotoxic carcinogens.³²⁸

Endocrine Disruption

Recommendation: In light of existing non-animal methods and WoE approaches, the use of animals in endocrine testing can be dramatically reduced

In the 1990s, the EPA's Endocrine Disruptor Screening Program (EDSP) was established to screen approximately 10,000 chemicals for their effects on the human body's hormone systems and on wildlife. The programme has the potential to use millions of animals in testing. In order to reduce the number of animals used and rapidly and effectively screen such a high volume of chemicals, the agency has turned to several non-animal methods.

Its Toxicity Forecaster (ToxCast) ranks and prioritises chemicals using more than 700 high-throughput screening assays, which cover a variety of high-level cell responses and approximately 300 signalling pathways, as well as computational toxicology approaches. Data have already been generated on thousands of chemicals of interest to the EPA.

ToxCast is being used successfully for these purposes. After a comparative study of ToxCast oestrogen pathway assay results and uterotrophic assay results,³²⁹ the EPA announced that it will accept ToxCast data as an alternative to at least one animal test – the uterotrophic assay – that screens for effects on the oestrogen pathway.³³⁰ The agency is working to finalise the use of ToxCast data as an alternative to the rat Hershberger assay, which screens for effects on the androgen pathway.

The thyroid pathway has more complexity than either the oestrogen or the androgen pathways. Although ToxCast is showing promising results, more research is required in this area, and use of this system to replace tests on animals is still several years away. There are complementary efforts at the international level. An OECD scoping document for *in vitro* approaches to the thyroid signalling pathway was published in 2014.³³¹ The OECD Molecular Screening Group's *in vitro* Thyroid Subgroup is working to bring relevant *in vitro* thyroid assays to the attention of OECD member countries and provide recommendations for their development and use. More research and development is needed to obtain non-animal approaches to screening for thyroid disruption potential in humans and wildlife populations.



Repeat Dose, Reproductive, and Developmental Toxicity

Recommendation: Immediately fund and support the development of innovative non-animal methods for assessing repeat dose, reproductive, and developmental toxicity

In repeat dose toxicity studies, animals are exposed repeatedly to substances for one to three months in order to measure the effects of multiple chemical exposures. Chemicals are usually administered to animals using an oral gavage.

Reproductive toxicity studies measure a chemical's effects on reproductive organs and fertility, while developmental toxicity studies measure a chemical's effect on developing offspring during pregnancy.

While the assessment of repeat dose toxicity is a standard requirement in human safety evaluation, no non-animal methods are currently accepted for regulatory purposes. The European Commission's Detection of Endpoints and Biomarkers of Repeated Dose Toxicity Using *In Vitro* Systems (DETECTIVE) project was one of the six research projects funded under the Safety Evaluation Ultimately Replacing Animal Testing (SEURAT-1) cluster umbrella. The aim of the project was to set up a screening pipeline of high-content, high-throughput, and "-omics" technology to identify and investigate human biomarkers in cellular models for repeat dose *in vitro* testing. In addition, the EU-ToxRisk project integrates advancements in cell biology, -omics technology, systems biology, and computational modelling to define the complex chains of events that link chemical exposure to toxic outcome. The project focuses on repeat dose systemic toxicity and developmental and reproductive toxicity.

None of the *in vivo* methods used for testing reproductive and developmental toxicity have been validated for their relevance to humans.³³² There are considerable limitations surrounding the *in vivo* methods, with a predictivity of only around 60 per cent and large interspecies variations.^{333,334}

EURL ECVAM has investigated the validation of *in vitro* reproductive toxicity test methods and is leading the development of an AOP for an aspect of reproductive toxicity, i.e. PPAR γ activation leading to impaired fertility.^{335,336} The EU FP6 project, ReProTect, has also investigated possible strategies to cover the entire mammalian reproductive cycle, resulting in a series of published works.³³⁷ Furthermore, the ChemScreen FP7 project has been designed to generate a rapid screening system that is relatively simple and cost-effective.³³⁸

The EPA's National Center for Computational Toxicology is also exploring the potential for chemicals to disrupt prenatal development through the use of its virtual embryo model, v-Embryo™, which integrates *in vitro* and *in silico* modelling approaches.³³⁹ While the field is gradually moving towards IATA strategies in order to cover the majority of possible mechanisms, much more research is required.

Aquatic Toxicity Testing

Recommendation: In light of existing non-animal methods and WoE approaches, the use of animals in aquatic toxicity testing can be substantially reduced

Aquatic toxicity tests are conducted to measure the effects of chemicals on the environment and wildlife. In 2011, nearly 180,000 fish were used for toxicological and other safety assessments in the EU.³⁴⁰ As assessment of aquatic toxicity is required in various regulatory frameworks, strategies to replace testing using aquatic animals are urgently needed.



Several non-animal alternatives to the use of live animals are available now. In 2018, two OECD test guidelines for *in vitro* intrinsic clearance using cryopreserved rainbow trout hepatocytes³⁴¹ and rainbow trout liver S9 subcellular fraction³⁴² and an associated guidance document³⁴³ were adopted. Liver intrinsic clearance values can be used either for physiologically based toxicokinetic models for fish bioaccumulation or for extrapolation to an *in vivo* biotransformation rate. The latter can be used with *in silico* models for prediction of bioconcentration factors. Thus, although these test guidelines require the use of fish to obtain primary cells, they can contribute to replacing the use of fish in OECD Test No 305 on bioaccumulation in fish.³⁴⁴

To reduce the number of juvenile and adult fish used in acute aquatic toxicity testing, ECHA will accept data from the Fish Embryo Acute Toxicity Test³⁴⁵ in a WoE approach³⁴⁶ on a case-by-case basis.

A promising cytotoxicity assay using the RTgill-W1 cell line has been developed for the determination of acute aquatic toxicity testing.³⁴⁷ This *in vitro* assay has the potential to reduce or even replace the use of fish in the acute fish toxicity test.³⁴⁸ A ring trial on transferability and both intra- and inter-laboratory reproducibility of the assay organised by the Swiss Federal Institute of Aquatic Science and Technology has been completed,³⁴⁹ and a Standard Operating Procedure has been adopted by the ISO.³⁵⁰ A project to develop an OECD test guideline on the fish cell line acute toxicity test using the RTgill-W1 cell line assay has been included in the work plan of the OECD Test Guideline Programme in 2019. Adoption of the test guideline is planned for April 2020.



Laboratory Production Methods

Detailed below are opportunities to end the use of animal-derived products for scientific or medical purposes and to reduce significantly the use of animals for the production of drugs and vaccines.

Biologic Drugs

Recommendation: In light of existing non-animal methods and WoE approaches, the use of animals can be dramatically reduced in the production and evaluation of biologic drugs

Many vaccines and other biologic drugs are produced or tested for quality, identity, safety, and efficacy in experiments that require the use of large numbers of animals. These procedures often cause severe suffering before the animals die or are killed. New technology has enabled the production and testing of biologics without animals, but experience has shown that validation and regulatory acceptance of these methods have not guaranteed their use.^{351,352,353,354} Activities intended to phase out the use of animals in this context must ensure that regulatory authorities and industry commit to (1) making the transition to non-animal biologic production platforms, (2) ensuring that available non-animal methods are consistently used in place of animal-based tests, and (3) developing non-animal replacements for quality, identity, safety, and efficacy tests for all biologics.

Production platforms are available that replace animal-derived substances with recombinant, cell-based equivalents. Antitoxins, for example, have been produced historically by hyper-immunising horses and other large mammals and isolating the resulting immunoglobulins from animals' blood. These animal-derived immunoglobulins can be replaced with recombinant human antitoxin expressed in cell culture. Several recombinant antitoxins have been licensed for marketing, and more are in development.³⁵⁵ With adequate funding and support from regulators, all biologics of animal origin, including antibodies (described above), can and should be replaced in a similar fashion in order to resolve issues inherent in using antibodies derived from animals.

Non-animal quality tests are available, but no formal mechanism exists to ensure that barriers to their implementation are resolved in a timely manner.³⁵⁶ In some instances, manufacturers report difficulty meeting the technical criteria for using validated non-animal methods (as with the *in vitro* *Leptospira* vaccine potency tests).³⁵⁷ In other instances, international regulators have yet to agree on technical criteria for using non-animal methods (as with the *in vitro* rabies vaccine potency test).³⁵⁸ In the absence of formal oversight of the implementation process, these barriers are left to be resolved informally through workshops and decentralised problem-solving by consortia of interested parties. For companies seeking to use validated non-animal methods, this approach is prohibitively expensive and slow. As a consequence, industry adoption of non-animal methods remains limited, despite the documented reduction in animal use when they are implemented successfully.³⁵⁹ Additional barriers to the implementation of currently available alternative tests have been discussed at length in the literature for erysipelas, clostridial, and tetanus vaccines and for recombinant therapeutic hormones.³⁶⁰ Accelerating and standardising processes that facilitate the use of these existing replacement methods is crucial.

Regulatory leadership will ensure international regulatory and industrial coordination on best practices to remove these barriers. Regulatory authorities must establish harmonised manufacturing consistency



requirements, as tightly controlled manufacturing consistency policies are the foundation of many animal-replacement strategies.^{361,362}

Antibody Production

Recommendation: Immediately eliminate the use of animal-derived antibodies in scientific applications

Affinity reagents such as antibodies are essential tools used in research to bind to a molecule to identify it or influence its activity. Every year, tens of thousands of animals are injected with viruses, bacteria, or other foreign substances and then killed for the antibodies that their bodies produce in response. Animals used in antibody production are subjected to a number of invasive and painful procedures, including antigen injection and repeated blood or ascites collection, before being killed. In the ascites method of antibody production, animals have been reported to be unable to eat, walk, or breathe properly. A number of countries, such as Australia, Canada, Germany, the Netherlands, Switzerland, and the United Kingdom, have restricted or banned the production of antibodies via the ascites method because of animal-welfare concerns.³⁶³

Growing concern about the lack of quality and reproducibility of animal-derived antibodies, which often show poor specificity or fail to recognise their targets, is also evident in the literature. In a February 2015 *Nature* commentary, 109 academic and industry scientists joined Andrew Bradbury of the Los Alamos National Laboratory in the US and Andreas Plückthun, head of the Department of Biochemistry at the University of Zurich, to call for an international shift to the use of recombinant antibodies for reasons that include increased reliability and reduced lot-to-lot variability in affinity reagents.³⁶⁴ Bradbury and Plückthun note that they believe that poorly characterised antibodies were in large part to blame in a study in which the scientific results of only six out of 53 landmark preclinical studies could be replicated. In addition, a May 2015 *Nature* news feature reports that antibodies may be the laboratory tool most commonly contributing to the “reproducibility crisis”.³⁶⁵ Furthermore, a systematic analysis of 185 commercially available hybridoma monoclonal antibodies found that one-third were not reliably monospecific, and the authors recommended replacing the use of animal-derived monoclonal antibodies with sequence-defined recombinant antibodies as a straightforward and cost-effective solution to this serious problem.³⁶⁶ This issue is not limited to monoclonal antibodies. Because only 0.5 to 5 per cent of the antibodies in a polyclonal reagent bind to their intended target, and polyclonal reagents have significant batch-to-batch variation, in 2015, 111 academic and industry scientists called for polyclonal antibodies to be phased out of research completely.³⁶⁷

In addition to the lack of scientific reliability and the animal-welfare concerns, there are significant economic issues related to using animal-derived antibodies. It is estimated that \$800 million is wasted annually worldwide on unreliable antibodies.³⁶⁸ Thus, there are potential cost savings associated with the more reproducible research that would result from using higher-quality affinity reagents.

Non-animal affinity reagents, such as recombinant antibodies and aptamers, can be used in all applications in which traditional antibodies are used, including in basic research, regulatory testing, and clinical applications. They are commercially available and, with appropriate resources, can be developed by researchers in their own laboratories.^{369,370} The numerous scientific advantages of non-animal affinity reagents over animal-derived antibodies include high affinity and specificity, shorter generation time, reduced immunogenicity, the ability to control selection conditions, and the ability to be generated against unstable, toxic, immunosuppressant, and non-immunogenic antigens.³⁷¹

International efforts have highlighted the importance of a large-scale transition from animal-derived antibodies to animal-free affinity reagents. In December 2018, a working group of the Scientific Advisory Committee of EURL ECVAM reviewed the scientific validity and benefits of using animal-free technology to produce affinity



reagents, concluding that the use of animal-free affinity reagents would improve scientific reproducibility and that scientists should work towards the replacement of animal-derived antibodies.³⁷² In the U.S., experts and organizations, including NICEATM and the PETA International Science Consortium, are working to increase access to animal-free affinity reagents. In December 2019, NICEATM and the Science Consortium convened a meeting to outline a pathway to improve the quality and reproducibility of research and testing by accelerating their production and use. Steps to overcome hurdles to a comprehensive shift from animal-derived to animal-free, sequence-defined affinity reagents that were identified at the meeting are described in the article “Increasing the use of animal-free recombinant antibodies”.³⁷³ More information on sources of animal-free affinity reagents, webinars, publications, and the scientific, economic, and ethical advantages of replacing animal-derived antibodies with animal-free options is available at www.piscltd.org.uk/our-work/antibodies/.

An EU-wide ban on the *in vivo* production of monoclonal antibodies using the ascites method should be introduced, in line with the one that has been in place in the Netherlands for more than 20 years, and the EU should further move to eliminate the import of animal-derived monoclonal antibodies and the use of animals in the hybridoma method.³⁷⁴ In order to expedite such a ban, we recommend that member states and research funding bodies provide grant opportunities for the generation and implementation of non-animal affinity reagents.

Foetal Bovine Serum

Recommendation: Immediately eliminate the use of foetal bovine serum in scientific applications

Foetal bovine serum (FBS) is a supplement for cell culture media that provides an undefined mixture of macromolecules that function to maintain cell viability and facilitate cell metabolism, growth, proliferation, and spreading in culture. When pregnant cows are slaughtered, a large-gauge needle is used to draw the blood from the beating heart of the foetus. Because the unborn calves are not anaesthetised at the time of blood collection, they likely experience pain. It has been estimated that 600,000 litres of FBS are produced globally each year, which translates to the use of up to 1.8 million bovine foetuses for this purpose.³⁷⁵

Additionally, a number of scientific concerns are associated with the use of FBS, including batch variation leading to reproducibility issues for *in vitro* studies using FBS, the unknown composition of the serum, and the risk of contamination by animal proteins or pathogens, which is especially problematic in the manufacture of biologics for human therapies. Dutch organisations hosted workshops in 2003 and 2009 that called for the transition from FBS to non-animal serum supplements in cell culture.^{376,377} A third workshop on FBS and alternatives was held in 2016, organised by the SET Foundation and the Deutscher Tierschutzbund (German Animal Welfare Federation).³⁷⁸ The workshop report recommends increased funding and continued development of serum-free culture models and the use of serum-free media when establishing new cell lines. Because a universal chemically defined serum-free culture medium is not yet available and there is high demand for different cell types, the report recommends the use of human platelet lysate (hPL) as a replacement for FBS when a serum-free medium is not available.

Animal component-free and chemically defined serum-free media are available for some cell types. For others, researchers still need to optimise the concentration of each supplement to replace FBS. For these cell types, hPL, which is obtained from donated human platelets, contains growth factors essential for cell growth and proliferation and is a superior alternative to FBS for culturing cells.

Listings of commercially available products and FBS-free media recipes published in scientific literature are available on the Science Consortium’s website (www.piscltd.org.uk/fbs/) and in the Fetal Calf Serum-Free



Database (<https://fcs-free.org/>). Expert presentations on replacing FBS in cell culture media while maintaining robust cell growth and cellular functions are also available at www.piscltd.org.uk/fbs.

Government and regulatory agencies should move expediently to restrict the production and use of FBS when non-animal media or supplements are available. They should also provide funding for the development and optimisation of non-animal, serum-free medium. For cell types in which non-animal supplement concentrations have not yet been optimised and hPL cannot be used, they should require exemptions to be obtained before FBS can be produced or used. To obtain exemptions, measures should be taken to seek non-animal alternatives, and a plan to make the transition to non-animal media or supplements should be implemented.



Scientific Advisory Capabilities of PETA and Its International Affiliates

The Dutch government consulted with PETA scientists before making its decision to phase out certain experiments using animals. PETA and its international affiliates stand ready to offer our assistance in whatever capacity might be required.

The PETA International Science Consortium Ltd. promotes and funds non-animal research methods and coordinates the scientific and regulatory expertise of its members, the international PETA affiliates. With an eye towards championing the best non-animal methods and reducing animal testing, the Science Consortium and its members are actively involved in the development, validation, global implementation, and harmonisation of non-animal test methods. Briefly, the Science Consortium is an accredited ECHA stakeholder and a member of the EURL ECVAM stakeholder forum and regularly comments on OECD test guidelines as a member of the International Council on Animal Protection in OECD Programmes (ICAPO).

The scientists who work for PETA and its international affiliates have a proven track record of productively assisting many Fortune 100 corporations as well as regulatory and government agencies. This assistance includes providing expert opinions, regulatory advice, and technical support in a broad range of fields. Given the breadth and depth of our expertise, we believe that we can make a valuable contribution to developing and implementing a strategic plan for the future of biomedical research and regulatory testing.



References (Appendices)

- ¹Wong CH, Siah KW, Lo AW. Estimation of clinical trial success rates and related parameters. *Biostatistics*. 2018;kxx069.
- ²Hay M, Thomas DW, Craighead JL, Economides C, Rosenthal J. Clinical development success rates for investigational drugs. *Nat Biotechnol*. 2014;32(1):40-51.
- ³Mak IW, Evaniew N, Ghert M. Lost in translation: Animal models and clinical trials in cancer treatment. *Am J Transl Res*. 2014;6(2):114-118.
- ⁴Ben-David U, Ha G, Tseng YY, *et al*. Patient-derived xenografts undergo mouse-specific tumor evolution. *Nat Genet*. 2017;49(11):1567-1575.
- ⁵Bernstein H, Bernstein C, Payne CM, Dvorakova K, Garewal H. Bile acids as carcinogens in human gastrointestinal cancers. *Mutat Res*. 2005;589(1):47-65.
- ⁶Setchell KD, Brown NM, Zhao X, *et al*. Soy isoflavone phase II metabolism differs between rodents and humans: Implications for the effect on breast cancer risk. *Am J Clin Nutr*. 2011;94(5):1284-1294.
- ⁷Messina M, Wu AH. Perspectives on the soy-breast cancer relation. *Am J Clin Nutr*. 2009;89(5):1673S-1679S.
- ⁸Setchell *et al*.
- ⁹Gandhi M, Nikiforov YE. Suitability of animal models for studying radiation-induced thyroid cancer in humans: Evidence from nuclear architecture. *Thyroid*. 2011;21(12):1331-1337.
- ¹⁰Logsdon CD, Arumugam T, Ramachandran V. Animal models of gastrointestinal and liver diseases. The difficulty of animal modeling of pancreatic cancer for preclinical evaluation of therapeutics. *Am J Physiol Gastrointest Liver Physiol*. 2015;309(5):G283-G291.
- ¹¹The Institution of Engineering and Technology (IET). Press release from 29 November 2017. <https://www.theiet.org/media/press-releases/press-releases-2017/29-november-2017-350-000-prize-for-portuguese-scientist-s-tissue-engineering-research-to-predict-efficacy-of-cancer-drugs/>. Published 29 November 2017. Accessed 07 May 2020.
- ¹²Pauty J, Usuba R, Cheng IG, *et al*. A vascular endothelial growth factor-dependent sprouting angiogenesis assay based on an *in vitro* human blood vessel model for the study of anti-angiogenic drugs. *EBioMedicine*. 2018;27:225-236.
- ¹³Begley S. Brain organoids get cancer, too, opening a new frontier in personalized medicine. *STAT*. <https://www.statnews.com/2017/12/01/brain-organoids-glioblastoma/>. Published 1 December 2017. Accessed 10 July 2018.
- ¹⁴Ozcelikkale A, Shin K, Noe-Kim V, *et al*. Differential response to doxorubicin in breast cancer subtypes simulated by a microfluidic tumor model. *J Control Release*. 2017;266:129-139.
- ¹⁵CELLINK. CELLINK featured in Business Insider: Sweden's hottest biotech startup is now 3D printing tumors to help cure cancer. <https://cellink.com/cellink-featured-business-insider-swedens-hottest-biotech-startup-now-3d-printing-tumors-help-cure-cancer/>. Published 10 January 2018. Accessed 20 May 2019.
- ¹⁶Shain AH, Joseph NM, Yu R, *et al*. Genomic and transcriptomic analysis reveals incremental disruption of key signaling pathways during melanoma evolution. *Cancer Cell*. 2018;34(1):45-55.
- ¹⁷Cimons M, Getlin J, Maugh II TH. Cancer drugs face long road from mice to men. *Los Angeles Times*. <http://articles.latimes.com/1998/may/06/news/mn-46795>. Published 6 May 1998. Accessed 11 July 2018.
- ¹⁸Verma M. Personalized medicine and cancer. *J Pers Med*. 2012;2(1):1-14.
- ¹⁹Gintant G, Sager PT, Stockbridge N. Evolution of strategies to improve preclinical cardiac safety testing. *Nat Rev Drug Discov*. 2016;15(7):457-471.
- ²⁰del Álamo JC, Lemons D, Serrano R, *et al*. High throughput physiological screening of iPSC-derived cardiomyocytes for drug development. *Biochim Biophys Acta*. 2016;1836(7B):1717-1727.
- ²¹Ibid.
- ²²Gintant *et al*.
- ²³Milani-Nejad N, Janssen PM. Small and large animal models in cardiac contraction research: Advantages and disadvantages. *Pharmacol Ther*. 2014;141(3):235-249.
- ²⁴Ibid.
- ²⁵Barter P, Rye KA. Cholesteryl ester transfer protein inhibition to reduce cardiovascular risk: Where are we now? *Trends Pharmacol Sci*. 2011;32(12):694-699.
- ²⁶Chandrasekera PC, Pippin JJ. The human subject: An integrative animal model for 21st century heart failure research. *Am J Transl Res*. 2015;7(9):1636-1647.
- ²⁷Novoheart Holdings Inc. Novoheart strengthens North American presence opening new R&D location at the world-class Cove Facility, UC Irvine, California. Marketwired.com. <http://www.marketwired.com/press-release/novoheart-strengthens-north-american-presence-opening-new-r-d-location-world-class-cove-tsx-venture-nvh-2238284.htm>. Published 25 October 2017. Accessed 11 July 2018.
- ²⁸Menon NV, Tay HM, Pang KT, *et al*. A tunable microfluidic 3D stenosis model to study leukocyte-endothelial interactions in atherosclerosis. *APL Bioengineering*. 2018;2:016103.



- ²⁹Schiller B. This human heart-on-a-chip lets us test drugs on actual human tissue – not animals. FastCompany.com. <https://www.fastcompany.com/40518390/this-human-heart-on-a-chip-lets-us-test-drugs-on-actual-human-tissue-not-animals>. Published 22 January 2018. Accessed 11 July 2018.
- ³⁰Gaudin S. Engineering diseased blood vessels to more accurately test new medications. Worcester Polytechnic Institute. <https://www.wpi.edu/news/engineering-diseased-blood-vessels-more-accurately-test-new-medications>. Published 7 June 2018. Accessed 11 July 2018.
- ³¹Ibid.
- ³²Savchenko A, Cherkas V, Liu C, et al. Graphene biointerfaces for optical stimulation of cells. *Sci Adv*. 2018;4(5):eaat0351.
- ³³Gershlak JR, Hernandez S, Fontana G, et al. Crossing kingdoms: Using decellularized plants as perfusable tissue engineering scaffolds. *Biomaterials*. 2017;125:13-22.
- ³⁴Hoang P, Wang J, Conklin BR, Healy KE, Ma Z. Generation of spatial-patterned early-developing cardiac organoids using human pluripotent stem cells. *Nat Protoc*. 2018;13(4):723-737.
- ³⁵Alongi P. Cardiovascular treatments could reach patients faster with new Clemson University research. The Newsstand, Clemson University. <http://newsstand.clemson.edu/mediarelations/cardiovascular-treatments-could-reach-patients-faster-with-new-clemson-university-research/>. Published 30 April 2018. Accessed 11 July 2018.
- ³⁶Passini E, Britton OJ, Lu HR, et al. Human *in silico* drug trials demonstrate higher accuracy than animal models in predicting clinical pro-arrhythmic cardiotoxicity. *Front Physiol*. 2017;8:668.
- ³⁷Chandrasekera PC, Pippin JJ. Of rodents and men: Species-specific glucose regulation and type 2 diabetes research. *ALTEX*. 2014;31(2):157-176.
- ³⁸Ibid.
- ³⁹Bunner AE, Chandrasekera PC, Barnard ND. Knockout mouse models of insulin signaling: Relevance past and future. *World J Diabetes*. 2014;5(2):146-159.
- ⁴⁰Chandrasekera, Pippin 2014.
- ⁴¹Bunner et al.
- ⁴²Ibid.
- ⁴³Wang B, Chandrasekera PC, Pippin JJ. Leptin- and leptin receptor-deficient rodent models: Relevance for human type 2 diabetes. *Curr Diabetes Rev*. 2014;10(2):131-145.
- ⁴⁴Bunner et al.
- ⁴⁵Wang et al.
- ⁴⁶Chandrasekera, Pippin 2014.
- ⁴⁷Ali Z, Chandrasekera PC, Pippin JJ. Animal research for type 2 diabetes mellitus, its limited translation for clinical benefit, and the way forward. *Altern Lab Anim*. 2018;46(1):1-10.
- ⁴⁸Physicians Committee for Responsible Medicine. Using skin cells to model diabetes in humans. <https://www.pcrm.org/news/ethical-science/using-skin-cells-model-diabetes-humans>. Published 20 November 2017. 20 November 2018.
- ⁴⁹Kovatchev BP, Breton M, Man CD, Cobelli C. *In silico* preclinical trials: A proof of concept in closed-loop control of type 1 diabetes. *J Diabetes Sci Technol*. 2009;3(1):44-55.
- ⁵⁰Ali et al.
- ⁵¹Haigwood NL. Update on animal models for HIV research. *Eur J Immunol*. 2009;39(8):1994-1999.
- ⁵²Antony JM, MacDonald KS. A critical analysis of the cynomolgus macaque, *Macaca fascicularis*, as a model to test HIV-1/SIV vaccine efficacy. *Vaccine*. 2015;33(27):3073-3083.
- ⁵³Centlivre M, Combadière B. New challenges in modern vaccinology. *BMC Immunol*. 2015;16:18.
- ⁵⁴Haigwood.
- ⁵⁵Jülg B, Barouch DH. Novel immunological strategies for HIV-1 eradication. *J Virus Erad*. 2015;1(4):232-236.
- ⁵⁶Girard M, Habel A, Chanel C. New prospects for the development of a vaccine against human immunodeficiency virus type 1. An overview. *C R Acad Sci III*. 1999;322(11):959-966.
- ⁵⁷Kumar N, Chahroudi A, Silvestri G. Animal models to achieve an HIV cure. *Curr Opin HIV AIDS*. 2016;11(4):432-441.
- ⁵⁸Nguyen DH, Hurtado-Ziola N, Gagneux P, Varki A. Loss of Siglec expression on T lymphocytes during human evolution. *Proc Natl Acad Sci U S A*. 2006;103(20):7765-7770.
- ⁵⁹Song B, Javanbakht H, Perron M, Park DH, Stremlau M, Sodroski J. Retrovirus restriction by TRIM5alpha variants from Old World and New World primates. *J Virol*. 2005;79(7):3930-3937.
- ⁶⁰Gilad Y, Oshlack A, Smyth GK, Speed TP, White KP. Expression profiling in primates reveals a rapid evolution of human transcription factors. *Nature*. 2006;440(7081):242-245.
- ⁶¹Akhtar A. The flaws and human harms of animal experimentation. *Camb Q Healthc Ethics*. 2015;24(4):407-419.
- ⁶²Haigwood.
- ⁶³Antony, MacDonald.
- ⁶⁴Kumar et al.
- ⁶⁵Matthews H, Hanison J, Nirmalan N. "Omics"-informed drug and biomarker discovery: Opportunities, challenges and future perspectives. *Proteomes*. 2016;4(3):28.
- ⁶⁶Rao M, Alving CR. Adjuvants for HIV vaccines. *Curr Opin HIV AIDS*. 2016;11(6):585-592.
- ⁶⁷Bailey J. An assessment of the role of chimpanzees in AIDS vaccine research. *Altern Lab Anim*. 2008;36(4):381-428.
- ⁶⁸Galperin M, Farenc C, Mukhopadhyay M, et al. CD4⁺ T cell-mediated HLA class II cross-restriction in HIV controllers. *Sci Immunol*. 2018;3(24):eaat0687.
- ⁶⁹Ledford H. Translational research: The full cycle. *Nature*. 2008;453(7197):843-845.
- ⁷⁰Tonks A. Quest for the AIDS vaccine. *BMJ*. 2007;334:1346-1348.



- ⁷¹Mestas J, Hughes CCW. Of mice and not men: Differences between mouse and human immunology. *J Immunol*. 2004;172(5):2731-2738.
- ⁷²Zschaler J, Schlorke D, Arhhold J. Difference in innate immune response between man and mouse. *Crit Rev Immunol*. 2014;34(5):433-454.
- ⁷³Mestas, Hughes.
- ⁷⁴Ibid.
- ⁷⁵Zschaler *et al*.
- ⁷⁶Leist M, Hartung T. Inflammatory findings on species extrapolations: Humans are definitely no 70-kg mice. *Arch Toxicol*. 2013;87(4):563-567.
- ⁷⁷Bouvier NM, Lowen AC. Animal models for influenza virus pathogenesis and transmission. *Viruses*. 2010;2(8):1530-1563.
- ⁷⁸Staheli P, Grob R, Meier E, Sutcliffe JG, Haller O. Influenza virus-susceptible mice carry Mx genes with a large deletion or a nonsense mutation. *Mol Cell Biol*. 1988;8(10):4518-4523.
- ⁷⁹Tumpey TM, Szretter KJ, Van Hoeven N, *et al*. The Mx1 gene protects mice against the pandemic 1918 and highly lethal human H5N1 influenza viruses. *J Virol*. 2007;81(19):10818-10821.
- ⁸⁰Bouvier NM, Lowen AC. Animal models for influenza virus pathogenesis and transmission. *Viruses*. 2010;2(8):1530-1563.
- ⁸¹Ibricevic A, Pekosz A, Walter MJ, *et al*. Influenza virus receptor specificity and cell tropism in mouse and human airway epithelial cells. *J Virol*. 2006;80(15):7469-7480.
- ⁸²Majde JA, Bohnet SG, Ellis GA, *et al*. Detection of mouse-adapted human influenza virus in the olfactory bulbs of mice within hours after intranasal infection. *J Neurovirol*. 2007;13(5):399-409.
- ⁸³Bouvier, Lowen.
- ⁸⁴Lowen AC, Mubareka S, Tumpey TM, García-Sastre A, Palese P. The guinea pig as a transmission model for human influenza viruses. *Proc Natl Acad Sci U S A*. 2006;103(26):9988-9992.
- ⁸⁵Wu HJ, Wu E. The role of gut microbiota in immune homeostasis and autoimmunity. *Gut Microbes*. 2012;3(1):4-14.
- ⁸⁶Nguyen TLA, Vieira-Silva S, Liston A, Raes J. How informative is the mouse for human gut microbiota research? *Dis Model Mech*. 2015;8(1):1-16.
- ⁸⁷Cappuccio A, Tieri P, Castiglione F. Multiscale modeling in immunology: A review. *Brief Bioinform*. 2016;17(3):408-418.
- ⁸⁸Brown JA, Codreanu SG, Shi M, *et al*. Metabolic consequences of inflammatory disruption of the blood-brain barrier in an organ-on-chip model of the human neurovascular unit. *J Neuroinflammation*. 2016;13(1):306.
- ⁸⁹Ehling P, Meuth P, Eichinger P, *et al*. Human T cells in silico: Modelling their electrophysiological behaviour in health and disease. *J Theor Biol*. 2016;404:236-250.
- ⁹⁰Day JD, Metes DM, Vodovotz Y. Mathematical modeling of early cellular innate and adaptive immune responses to ischemia/reperfusion injury and solid organ allotransplantation. *Front Immunol*. 2015;6:484.
- ⁹¹Bergers LIJC, Reijnders CMA, van den Broek LJ, *et al*. Immune-competent human skin disease models. *Drug Discov Today*. 2016;21(9):1479-1488.
- ⁹²Akhtar AZ, Pippin JJ, Sandusky CB. Animal models in spinal cord injury: A review. *Rev Neurosci*. 2008;19(1):47-60.
- ⁹³Angius D, Wang H, Spinner RJ, Gutierrez-Cotto Y, Yaszemski MJ, Windebank AJ. A systematic review of animal models used to study nerve regeneration in tissue-engineered scaffolds. *Biomaterials*. 2012;33(32):8034-8039.
- ⁹⁴Akhtar AZ, Pippin JJ, Sandusky CB. Animal studies in spinal cord injury: A systematic review of methylprednisolone. *Altern Lab Anim*. 2009;37(1):43-62.
- ⁹⁵Ibid.
- ⁹⁶Kaplan HM, Mishra P, Kohn J. The overwhelming use of rat models in nerve regeneration research may compromise designs of nerve guidance conduits for humans. *J Mater Sci Mater Med*. 2015;26(8):226.
- ⁹⁷Ibid.
- ⁹⁸Mobini S, Song YH, McCrary MW, Schmidt CE. Advances in ex vivo models and lab-on-a-chip devices for neural tissue engineering. *Biomaterials*. 2018; ahead of print.
- ⁹⁹Ibid.
- ¹⁰⁰Zhuang P, Sun AX, An J, Chua CK, Chew SY. 3D neural tissue models: From spheroids to bioprinting. *Biomaterials*. 2018;154:113-133.
- ¹⁰¹Angius *et al*.
- ¹⁰²Shrirao AB, Kung FH, Omelchenko A, *et al*. Microfluidic platforms for the study of neuronal injury in vitro. *Biotechnol Bioeng*. 2018;115(4):815-830.
- ¹⁰³Mobini *et al*.
- ¹⁰⁴Potashkin JA, Blume SR, Runkle NK. Limitations of animal models of Parkinson's disease. *Parkinsons Dis*. 2010;2011:1-7.
- ¹⁰⁵Pistollato F, Ohayon EL, Lam A, *et al*. Alzheimer disease research in the 21st century: Past and current failures, new perspectives and funding priorities. *Oncotarget*. 2016;7(26):38999-39016.
- ¹⁰⁶AstraZeneca. Update on Phase III clinical trials of lanabecestat for Alzheimer's disease. <https://www.astrazeneca.com/media-centre/press-releases/2018/update-on-phase-iii-clinical-trials-of-lanabecestat-for-alzheimers-disease-12062018.html>. Published 12 June 2018. Accessed 17 July 2018.
- ¹⁰⁷Pistollato *et al*.
- ¹⁰⁸Burns TC, Li MD, Mehta S, Awad AJ, Morgan AA. Mouse models rarely mimic the transcriptome of human neurodegenerative diseases: A systematic bioinformatics-based critique of preclinical models. *Eur J Pharmacol*. 2015;759:101-117.



- ¹⁰⁹Lane E, Dunnett S. Animal models of Parkinson's disease and L-dopa induced dyskinesia: How close are we to the clinic? *Psychopharmacology (Berl)*. 2008;199(3):303-312.
- ¹¹⁰Ehrnhoefer DE, Butland SL, Pouladi MA, Hayden MR. Mouse models of Huntington disease: Variations on a theme. *Dis Model Mech*. 2009;2(3-4):123-129.
- ¹¹¹Ibid.
- ¹¹²Benatar M. Lost in translation: Treatment trials in the SOD1 mouse and in human ALS. *Neurobiol Dis*. 2007;26(1):1-13.
- ¹¹³Clerc P, Lipnick S, Willett C. A look into the future of ALS research. *Drug Discov Today*. 2016;21(6):939-949.
- ¹¹⁴Menache A, Beuter A. Commentary: Lessons from the analysis of non-human primates for understanding human aging and neurodegenerative diseases. *Front Hum Neurosci*. 2016;10:33.
- ¹¹⁵Olsson IA, Hansen AK, Sandøe P. Animal welfare and the refinement of neuroscience research methods – a case study of Huntington's disease models. *Lab Anim*. 2008;42(3):277-283.
- ¹¹⁶Ibid.
- ¹¹⁷Pistollato *et al*.
- ¹¹⁸Mirbaha H, Chen D, Morazova OA, *et al*. Inert and seed-competent tau monomers suggest structural origins of aggregation. *Elife*. 2018;7:e36584.
- ¹¹⁹Cope TE, Rittman T, Borchert RJ, *et al*. Tau burden and the functional connectome in Alzheimer's disease and progressive supranuclear palsy. *Brain*. 2018;141(2):550-567.
- ¹²⁰Habchi J, Chia S, Galvagnion C, *et al*. Cholesterol catalyses A β 42 aggregation through a heterogeneous nucleation pathway in the presence of lipid membranes. *Nat Chem*. 2018;10(6):673-683.
- ¹²¹Ochalek A, Mihalik B, Avci HX, *et al*. Neurons derived from sporadic Alzheimer's disease iPSCs reveal elevated TAU hyperphosphorylation, increased amyloid levels, and GSK3B activation. *Alzheimers Res Ther*. 2017;9(1):90.
- ¹²²Bereczki E, Branca RM, Francis PT, *et al*. Synaptic markers of cognitive decline in neurodegenerative diseases: A proteomic approach. *Brain*. 2018;141(2):582-595.
- ¹²³Santhanam N, Kumanchik L, Guo X, *et al*. Stem cell derived phenotypic human neuromuscular junction model for dose response evaluation of therapeutics. *Biomaterials*. 2018;166:64-78.
- ¹²⁴Dauth S, Maoz BM, Sheehy SP, *et al*. Neurons derived from different brain regions are inherently different in vitro: A novel multiregional brain-on-a-chip. *J Neurophysiol*. 2017;117(3):1320-1341.
- ¹²⁵Soscia D, Belle A, Fischer N, *et al*. Controlled placement of multiple CNS cell populations to create complex neuronal cultures. *PLoS One*. 2017;12(11):e0188146.
- ¹²⁶Nestler EJ, Hyman SE. Animal models of neuropsychiatric disease. *Nat Neurosci*. 2010;13(10):1161-1169.
- ¹²⁷Molendijk ML, de Kloet ER. Immobility in the forced swim test is adaptive and does not reflect depression. *Psychoneuroendocrinology*. 2015;62:389-391.
- ¹²⁸Schechter MD, Chance WT. Non-specificity of "behavioral despair" as an animal model of depression. *Eur J Pharmacol*. 1979;60(2-3):139-142.
- ¹²⁹Arai I, Tsuyuki Y, Shiimoto H, Satoh M, Otomo S. Decreased body temperature dependent appearance of behavioral despair in the forced swimming test in mice. *Pharmacol Res*. 2000;42(2):171-176.
- ¹³⁰Suman PR, Zerbinatti N, Theindl LC, Domingues K, Lino de Oliveira C. Failure to detect the action of antidepressants in the forced swim test in Swiss mice. *Acta Neuropsychiatr*. 2018;30(3):158-167.
- ¹³¹De Pablo JM, Parra A, Segovia S, Guillamón A. Learned immobility explains the behavior of rats in the forced swimming test. *Physiol Behav*. 1989;46(2):229-237.
- ¹³²Jefferys D, Funder J. The effect of water temperature on immobility in the forced swimming test in rats. *Eur J Pharmacol*. 1994;253(1-2):91-94.
- ¹³³Lucki I, Dalvi A, Mayorga AJ. Sensitivity to the effects of pharmacologically selective antidepressants in different strains of mice. *Psychopharmacology (Berl)*. 2001;155(3):315-322.
- ¹³⁴Molendijk, de Kloet.
- ¹³⁵Carvalho C, Vieira Crespo M, Ferreira Bastos L, Knight A, Vicente L. Contribution of animal models to contemporary understanding of attention deficit hyperactivity disorder. *ALTEX*. 2016;33(3):243-249.
- ¹³⁶Kato T, Kasahara T, Kubota-Sakashita M, Kato TM, Nakajima K. Animal models of recurrent or bipolar depression. *Neuroscience*. 2016;321:189-196.
- ¹³⁷Garner JP. The significance of meaning: Why do over 90% of behavioral neuroscience results fail to translate to humans, and what can we do to fix it? *ILAR J*. 2014;55(3):438-456.
- ¹³⁸Jin H, Romano G, Marshall C, Donaldson AE, Suon S, Iacovitti L. Tyrosine hydroxylase gene regulation in human neuronal progenitor cells does not depend on Nurr1 as in the murine and rat systems. *J Cell Physiol*. 2006;207(1):49-57.
- ¹³⁹van der Staay FJ, Arndt SS, Nordquist RE. Evaluation of animal models of neurobehavioral disorders. *Behav Brain Funct*. 2009;5:11.
- ¹⁴⁰Ibid.
- ¹⁴¹Siekmeier PJ. Computational modeling of psychiatric illnesses via well-defined neurophysiological and neurocognitive biomarkers. *Neurosci Biobehav Rev*. 2015;57:365-380.
- ¹⁴²Haggarty SJ, Silva MC, Cross A, Brandon NJ, Perlis RH. Advancing drug discovery for neuropsychiatric disorders using patient-specific stem cell models. *Mol Cell Neurosci*. 2016;73:104-115.
- ¹⁴³Adegbola A, Bury LA, Fu C, Zhang M, Wynshaw-Boris A. Concise review: Induced pluripotent stem cell models for neuropsychiatric diseases. *Stem Cells Transl Med*. 2017;6(12):2062-2070.



- ¹⁴⁴McInnis M, Bame M, DeLong C, Williams A, Martinez E, Oshea KS. Stem cell models of bipolar disorder – a developmental perspective. *Eur Neuropsychopharmacol*. 2017;27(S3):S515-S516.
- ¹⁴⁵Biedermann SV, Biedermann DG, Wenzlaff F, et al. An elevated plus-maze in mixed reality for studying human anxiety-related behavior. *BMC Biol*. 2017;15(1):125.
- ¹⁴⁶Scarr E, Udawela M, Dean B. Changed frontal pole gene expression suggest altered interplay between neurotransmitter, developmental, and inflammatory pathways in schizophrenia. *NPJ Schizophr*. 2018;4:4.
- ¹⁴⁷Wang P, Mokhtari R, Pedrosa E, et al. CRISPR/Cas9-mediated heterozygous knockout of the autism gene CHD8 and characterization of its transcriptional networks in cerebral organoids derived from iPSC cells. *Mol Autism*. 2017;8:11.
- ¹⁴⁸Stern S, Santos R, Marchetto MC, et al. Neurons derived from patients with bipolar disorder divide into intrinsically different sub-populations of neurons, predicting the patients' responsiveness to lithium. *Mol Psychiatry*. 2018;23(6):1453-1465.
- ¹⁴⁹Russo FB, Freitas BC, Pignatari GC, et al. Modeling the interplay between neurons and astrocytes in autism using human induced pluripotent stem cells. *Biol Psychiatry*. 2018;83(7):569-578.
- ¹⁵⁰Davies A, Green C, Hutton J. Severe sepsis: A European estimate of the burden of disease in ICU. *Intens Care Med*. 2001;27:S284.
- ¹⁵¹Verma S. Laboratory animal models to mimic human sepsis: A review. *Research & Reviews: Journal of Zoological Sciences*. 2016;4(2):34-39.
- ¹⁵²Seok J, Warren HS, Cuenca AG, et al. Genomic responses in mouse models poorly mimic human inflammatory diseases. *Proc Natl Acad Sci U S A*. 2013;110(9):3507-3512.
- ¹⁵³Collins F. Of mice, men, and medicine. NIH. <https://directorsblog.nih.gov/2013/02/19/of-mice-men-and-medicine/>. Published 19 February 2013. Accessed 2 November 2017.
- ¹⁵⁴Ibid.
- ¹⁵⁵Esmon CT. Why do animal models (sometimes) fail to mimic human sepsis? *Crit Care Med*. 2004;32(5):S219-S222.
- ¹⁵⁶Rittirsch D, Hoesel LM, Ward PA. The disconnect between animal models of sepsis and human sepsis. *J Leukoc Biol*. 2007;81(1):137-143.
- ¹⁵⁷Buras JA, Holzmann B, Sitkovsky M. Animal models of sepsis: Setting the stage. *Nat Rev Drug Discov*. 2005;4(10):854-865.
- ¹⁵⁸Nemzek JA, Hugunin KM, Opp MR. Modeling sepsis in the laboratory: Merging sound science with animal well-being. *Comp Med*. 2008;58(2):120-128.
- ¹⁵⁹Ruiz S, Vardon-Bounes F, Merlet-Dupuy V, et al. Sepsis modeling in mice: Ligation length is a major severity factor in cecal ligation and puncture. *Intensive Care Med Exp*. 2016;4(1):22.
- ¹⁶⁰Buras et al.
- ¹⁶¹Redl H, Bahrami S. Large animal models: Baboons for trauma, shock, and sepsis studies. *Shock*. 2005;24(S1):88-93.
- ¹⁶²Fink MP. Animal models of sepsis. *Virulence*. 2014;5(1):143-153.
- ¹⁶³Lilley E, Armstrong R, Clark N, et al. Refinement of animal models of sepsis and septic shock. *Shock*. 2015;43(4):304-316.
- ¹⁶⁴Ibid.
- ¹⁶⁵Sakurai Y, Hardy ET, Ahn B, et al. A microengineered vascularized bleeding model that integrates the principal components of hemostasis. *Nat Commun*. 2018;9:509.
- ¹⁶⁶Cockrell RC, An G. Examining the controllability of sepsis using genetic algorithms on an agent-based model of systemic inflammation. *PLoS Comput Biol*. 2018;14(2):e1005876.
- ¹⁶⁷Allen A, Deshmukh H. All on "CHIP": Using microfluidics to study neutrophil ontogeny. *Transl Res*. 2017;190:1-3.
- ¹⁶⁸Timermans S, Libert C. Learning lessons in sepsis from the children. *Mol Syst Biol*. 2018;14(5):e8335.
- ¹⁶⁹Joachim RB, Altschuler GM, Hutchinson JN, Wong HR, Hide WA, Kobzik L. The relative resistance of children to sepsis mortality: From pathways to drug candidates. *Mol Syst Biol*. 2018;14(5):e7998.
- ¹⁷⁰Rahmel T, Schäfer ST, Frey UH, Adamzik M, Peters J. Increased circulating microRNA-122 is a biomarker for discrimination and risk stratification in patients defined by sepsis-3 criteria. *PLoS One*. 2018;13(5):e0197637.
- ¹⁷¹Marik PE, Khangoora V, Rivera R, Hooper MH, Catravas J. Hydrocortisone, vitamin C, and thiamine for the treatment of severe sepsis and septic shock: A retrospective before-after study. *Chest*. 2017;151(6):1229-1238.
- ¹⁷²Harris R. Can a cocktail of vitamins and steroids cure a major killer in hospitals? NPR. <https://www.npr.org/sections/health-shots/2018/05/11/609149556/can-a-cocktail-of-vitamins-and-steroids-cure-a-major-killer-in-hospitals>. Published 11 May 2018. Accessed 11 May 2018.
- ¹⁷³Ibid.
- ¹⁷⁴Roth S, Liesz A. Stroke research at the crossroads – where are we heading? *Swiss Med Wkly*. 2016;146:w14329.
- ¹⁷⁵Sutherland BA, Minnerup J, Balami JS, Arba F, Buchan AM, Kleinschnitz C. Neuroprotection for ischemic stroke: Translation from the bench to the bedside. *Int J Stroke*. 2012;7(5):407-418.
- ¹⁷⁶Ibid.
- ¹⁷⁷Sommer CJ. Ischemic stroke: Experimental models and reality. *Acta Neuropathol*. 2017;133(2):245-261.
- ¹⁷⁸Ibid.
- ¹⁷⁹Ibid.



- ¹⁸⁰Chen Z, Mou R, Feng D, Wang Z, Chen G. The role of nitric oxide in stroke. *Med Gas Res.* 2017;7(3):194-203.
- ¹⁸¹Sommer.
- ¹⁸²Lin S, Lin Y, Nery JR, *et al.* Comparison of the transcriptional landscapes between human and mouse tissues. *Proc Natl Acad Sci U S A.* 2014;111(48):17224-17229.
- ¹⁸³Kaya AH, Erdogan H, Tasdemiroglu E. Searching evidences of stroke in animal models: A review of discrepancies. *Turk Neurosurg.* 2017;27(2):167-173.
- ¹⁸⁴Sommer.
- ¹⁸⁵Holloway PM, Gavins FN. Modeling ischemic stroke *in vitro*: The status quo and future perspectives. *Stroke.* 2016;47(2):561-569; Werth JL, Park TS, Silbergeld DL, Rothman SM. Excitotoxic swelling occurs in oxygen and glucose deprived human cortical slices. *Brain Res.* 1998;782(1-2):248-254.
- ¹⁸⁶Brown JA, Pensabene V, Markov DA, *et al.* Recreating blood-brain barrier physiology and structure on chip: A novel neurovascular microfluidic bioreactor. *Biomicrofluidics.* 2015;9(5):054124.
- ¹⁸⁷Narsaria R. Nortis awarded \$688K grant from NIH to develop "living" model of blood-brain barrier for research. *Multiple Sclerosis News Today.* <https://multiplesclerosisnewstoday.com/2017/08/23/nortis-awarded-688k-nih-grant-nih-to-develop-living-model-blood-brain-barrier-for-research/>. Published 23 August 2017. Accessed 13 July 2018.
- ¹⁸⁸He Y, Yao Y, Tsrka SE, Cao Y. Cell-culture models of the blood-brain barrier. *Stroke.* 2014;45(8):2514-2526.
- ¹⁸⁹Phan DT, Bender RHF, Andrejcsk JW, *et al.* Blood-brain barrier-on-a-chip: Microphysiological systems that capture the complexity of the blood-central nervous system interface. *Exp Biol Med.* 2017;242(17):1669-1678.
- ¹⁹⁰*ibid.*
- ¹⁹¹Bosetti F, Koenig JI, Ayata C, *et al.* Translational stroke research: Visions and opportunities. *Stroke.* 2017;48(9):2632-2637.
- ¹⁹²Mozaffarian D, Benjamin EJ, Go AS, *et al.* Heart disease and stroke statistics – 2016 update: A report from the American Heart Association. *Circulation.* 2016;133(4):e38-e360.
- ¹⁹³Tzschentke TM. Where do we stand in the field of anti-abuse drug discovery? *Expert Opin Drug Dis.* 2014;9(11):1255-1258.
- ¹⁹⁴Stephens DN, Crombag HS, Duka T. The challenge of studying parallel behaviors in humans and animal models. *Curr Top Behav Neurosci.* 2013;13:611-45.
- ¹⁹⁵Green AR, King MV, Shortall SE, Fone KC. Lost in translation: Preclinical studies on 3,4-methylenedioxymethamphetamine provide information on mechanisms of action, but do not allow accurate prediction of adverse events in humans. *Br J Pharmacol.* 2012;166(5):1523-1536.
- ¹⁹⁶*ibid.*
- ¹⁹⁷Ahmed SH. Validation crisis in animal models of drug addiction: Beyond non-disordered drug use toward drug addiction. *Neurosci Biobehav Rev.* 2010;35(2):172-184.
- ¹⁹⁸*ibid.*
- ¹⁹⁹*ibid.*
- ²⁰⁰*ibid.*
- ²⁰¹Ramsden E. Making animals alcoholic: Shifting laboratory models of addiction. *J Hist Behav Sci.* 2015;51(2):164-194.
- ²⁰²Hyman SE, Malenka RC. Addiction and the brain: The neurobiology of compulsion and its persistence. *Nat Rev Neurosci.* 2001;2(10):695-703.
- ²⁰³Tzschentke.
- ²⁰⁴*ibid.*
- ²⁰⁵Scarnati MS, Halikere A, Pang ZP. Using human stem cells as a model system to understand the neural mechanisms of alcohol use disorders: Current status and outlook. *Alcohol.* 2018, ahead of print.
- ²⁰⁶Lieberman R, Kranzler HR, Levine ES, Covault J. Examining the effects of alcohol on GABA_A receptor mRNA expression and function in neural cultures generated from control and alcohol dependent donor induced pluripotent stem cells. *Alcohol.* 2018;66:45-53.
- ²⁰⁷De Filippis L, Halikere A, McGowan H, *et al.* Ethanol-mediated activation of the NLRP3 inflammasome in iPS cells and iPS cells-derived neural progenitor cells. *Mol Brain.* 2016;9(1):51.
- ²⁰⁸Tian L, Prasad N, Jang YY. In vitro modeling of alcohol-induced liver injury using human-induced pluripotent stem cells. *Methods Mol Biol.* 2016;1353:271-283.
- ²⁰⁹Hildebrand F, Andruszkow H, Huber-Lang M, Pape HC, van Griensven M. Combined hemorrhage/trauma models in pigs – current state and future perspectives. *Shock.* 2013;40(4):247-273.
- ²¹⁰*ibid.*
- ²¹¹Staudlbauer KH, Wagner-Berger HG, Raedler C, *et al.* Vasopressin, but not fluid resuscitation, enhances survival in a liver trauma model with uncontrolled and otherwise lethal hemorrhagic shock in pigs. *Anesthesiology.* 2003;98(3):699-704.
- ²¹²Tsukamoto T, Pape HC. Animal models for trauma research: What are the options? *Shock.* 2009;31(1):3-10.
- ²¹³Xiong Y, Mahmood A, Chopp M. Animal models of traumatic brain injury. *Nat Rev Neurosci.* 2013;14(2):128-142.
- ²¹⁴Combes RD. A critical review of anaesthetised animal models and alternatives for military research, testing and training, with a focus on blast damage, haemorrhage, and resuscitation. *Altern Lab Anim.* 2013;41(5):385-415.
- ²¹⁵Brown D, Namas RA, Almahmoud K, *et al.* Trauma in silico: Individual-specific mathematical models and virtual clinical populations. *Sci Transl Med.* 2015;7(285):285ra61.



- ²¹⁶Ziraldó C, Solovyev A, Allegretti A, *et al.* A computational, tissue-realistic model of pressure ulcer formation in individuals with spinal cord injury. *PLoS Comput Biol.* 2015;11(6):e1004309.
- ²¹⁷Abboud A, Mi Q, Puccio A, *et al.* Inflammation following traumatic brain injury in humans: Insights from data-driven and mechanistic models into survival and death. *Front Pharmacol.* 2016;7:342.
- ²¹⁸Almahmoud K, Teuben M, Andruszkow H, *et al.* Trends in intubation rates and durations in ventilated severely injured trauma patients: An analysis from the TraumaRegister DGU®. *Patient Saf Surg.* 2016;10:24.
- ²¹⁹Schiller AM, Howard JT, Convertino VA. The physiology of blood loss and shock: New insights from a human laboratory model of hemorrhage. *Exp Biol Med (Maywood).* 2017;242(8):874-883.
- ²²⁰Cattaneo C, Maderna E, Rendinelli A, Gibelli D. Animal experimentation in forensic sciences: How far have we come? *Forensic Sci Int.* 2015;254:e29-e35.
- ²²¹Knight B. Forensic science and animal rights. *Forensic Sci Int.* 1992;57(1):1-3.
- ²²²Ibid.
- ²²³Cattaneo *et al.*
- ²²⁴Mole CG, Heyns M. Animal models in forensic science research: Justified use or ethical exploitation? *Sci Eng Ethics.* 2018, ahead of print.
- ²²⁵Cattaneo *et al.*
- ²²⁶Mole, Heyns.
- ²²⁷Cattaneo *et al.*
- ²²⁸Patronek GJ, Rauch A. Systematic review of comparative studies examining alternatives to the harmful use of animals in biomedical education. *J Am Vet Med Assoc.* 2007;230(1):37-43.
- ²²⁹Goodman JR, Borch CA, Cherry E. Mounting opposition to vivisection. *Contexts.* 2012;11(2):68-69.
- ²³⁰Reznick RK, MacRae H. Teaching surgical skills – changes in the wind. *N Engl J Med.* 2006;355(25):2664-2669.
- ²³¹Institute of Medicine. *To Err Is Human: Building a Safer Health System.* Washington, DC: The National Academies Press; 2000.
- ²³²Hansen LA. Animal laboratories are not needed to train medical students. *J Surg Educ.* 2014;71(4):454.
- ²³³Dua A. Letters to the editor. *Mil Med.* 2014;179(7):vii.
- ²³⁴Grober ED, Hamstra SJ, Wanzel KR, *et al.* The educational impact of bench model fidelity on the acquisition of technical skill: The use of clinically relevant outcome measures. *Ann Surg.* 2004;240(2):374-381.
- ²³⁵Ghanem AM, Hachach-Haram N, Leung CC, Myers SR. A systematic review of evidence for education and training interventions in microsurgery. *Arch Plast Surg.* 2013;40(4):312-319.
- ²³⁶Hall A, Riojas R, Sharon D. Comparison of self-efficacy and its improvement after artificial simulator or live animal model emergency procedure training. *Mil Med.* 2014;179(3):320-323.
- ²³⁷Hall A. Letters to the editor. *Mil Med.* 2014:179(7).
- ²³⁸Gala SG, Goodman JR, Murphy MP, Balsam MJ. Use of animals by NATO countries in military medical training exercises: An international survey. *Mil Med.* 2012;177(8):907-910.
- ²³⁹Seck H. Coast Guard puts permanent end to wounding animals for training. Military.com. <https://www.military.com/daily-news/2018/03/20/coast-guard-puts-permanent-end-wounding-animals-training.html>. Published 20 March 2018. Accessed 16 August 2018.
- ²⁴⁰The New York Times Editorial Board. Ban animal use in military medical training. *The New York Times.* <https://www.nytimes.com/2016/06/26/opinion/ban-animal-use-in-military-medical-training.html>. Published 25 June 2016. Accessed 16 August 2018.
- ²⁴¹Rep Hank Johnson. Leading medical groups endorse Johnson's military modernization bill. <https://hankjohnson.house.gov/media-center/press-releases/leading-medical-groups-endorse-johnson-s-military-modernization-bill>. Published 27 June 2016. Accessed 16 August 2018.
- ²⁴²Belisomo R. 'TraumaMan' helps doctors save humans, spares animals. Reuters. <https://uk.reuters.com/article/us-health-surgeons-traumaman-idUKKCNORP1O620150925>. Published 25 September 2015. Accessed 16 August 2018.
- ²⁴³Robinson MK, Cohen C, de Fraissinette AB, Ponc M, Whittle E, Fentem JH. Non-animal testing strategies for assessment of the skin corrosion and skin irritation potential of ingredients and finished products. *Food Chem Toxicol.* 2002;40(5):573-592.
- ²⁴⁴OECD. New guidance document on an integrated approach on testing and assessment (IATA) for skin corrosion and irritation. Series on Testing and Assessment No 203. [http://www.oecd.org/officialdocuments/publicdisplaydocumentpdf/?cote=env/jm/mono\(2014\)19&doclanguage=en](http://www.oecd.org/officialdocuments/publicdisplaydocumentpdf/?cote=env/jm/mono(2014)19&doclanguage=en). Published 11 July 2014. Accessed 6 May 2020.
- ²⁴⁵De Jong WH, Hoffmann S, Lee M, *et al.* Round robin study to evaluate the reconstructed human epidermis (RhE) model as an in vitro skin irritation test for detection of irritant activity in medical device extracts. *Toxicol In Vitro.* 2018;50:439-449.
- ²⁴⁶Kandarova H, Willoughby JA, De Jong WH, *et al.* Pre-validation of an in vitro skin irritation test for medical devices using the reconstructed human tissue model EpiDerm™. *Toxicol In Vitro.* 2018;50:407-417.
- ²⁴⁷OECD. Guidance document on considerations for waiving or bridging of mammalian acute toxicity tests. Series on Testing & Assessment No 237. <http://www.oecd.org/env/ehs/testing/mono%202016%2032.pdf>. Published 2 August 2016. Accessed 6 May 2020.



- ²⁴⁸Luechtefeld T, Maertens A, Russo DP, Rovida C, Zhu H, Hartung T. Analysis of publically available skin sensitization data from REACH registrations 2008–2014. *ALTEX*. 2016;33(2):135-148.
- ²⁴⁹OECD. Guidance document on an integrated approach on testing and assessment (IATA) for serious eye damage and eye irritation. Series on Testing & Assessment No 263. [http://www.oecd.org/officialdocuments/publicdisplaydocumentpdf/?cote=ENV/JM/MONO\(2017\)15&doclanguage=en](http://www.oecd.org/officialdocuments/publicdisplaydocumentpdf/?cote=ENV/JM/MONO(2017)15&doclanguage=en). Published 20 July 2017. Accessed 6 May 2020.
- ²⁵⁰EPA. Alternate testing framework for classification of eye irritation potential of EPA-regulated pesticide products. 2015. <https://www.epa.gov/pesticide-registration/alternate-testing-framework-classification-eye-irritation-potential-epa>.
- ²⁵¹OECD. Guidance document on considerations for waiving or bridging of mammalian acute toxicity tests.
- ²⁵²OECD. The adverse outcome pathway for skin sensitisation initiated by covalent binding to proteins. Series on Testing and Assessment No 168. 4 May 2012. [http://www.oecd.org/officialdocuments/publicdisplaydocumentpdf/?cote=env/jm/mono\(2012\)10/part1&doclanguage=en](http://www.oecd.org/officialdocuments/publicdisplaydocumentpdf/?cote=env/jm/mono(2012)10/part1&doclanguage=en).
- ²⁵³Hoffmann S, Kleinstreuer N, Alépée N, et al. Non-animal methods to predict skin sensitization (I): The Cosmetics Europe database. *Crit Rev Toxicol*. 2018;48(5):344-358.
- ²⁵⁴Kleinstreuer NC, Hoffmann S, Alépée N, et al. Non-animal methods to predict skin sensitization (II): An assessment of defined approaches. *Crit Rev Toxicol*. 2018;48(5):359-374.
- ²⁵⁵Wareing B, Urbisch D, Kolle SN, et al. Prediction of skin sensitization potency sub-categories using peptide reactivity data. *Toxicol In Vitro*. 2017;45(Pt 1):134-145.
- ²⁵⁶OECD. Guidance document on the reporting of defined approaches and individual information sources to be used within integrated approaches to testing and assessment (IATA) for skin sensitization. Series on Testing & Assessment No 256. 27 October 2016. [http://www.oecd.org/officialdocuments/publicdisplaydocumentpdf/?cote=env/jm/mono\(2016\)29&doclanguage=en](http://www.oecd.org/officialdocuments/publicdisplaydocumentpdf/?cote=env/jm/mono(2016)29&doclanguage=en).
- ²⁵⁷EPA. Interim science policy: Use of alternative approaches for skin sensitization as a replacement for laboratory animal testing. Draft for public comment. 2018. <https://www.regulations.gov/document?D=EPA-HQ-OPP-2016-0093-0090>.
- ²⁵⁸Health and Safety Executive. Vertebrate testing. <http://www.hse.gov.uk/pesticides/topics/pesticide-approvals/pesticides-registration/applicant-guide/vertebrate-testing.htm>.
- ²⁵⁹Coleman KP, McNamara LR, Grailer TP, et al. Evaluation of an *in vitro* human dermal sensitization test for use with medical device extracts. *Appl In Vitro Toxicol*. 2015;1(2):118-130.
- ²⁶⁰OECD. Guidance document on considerations for waiving or bridging of mammalian acute toxicity tests.
- ²⁶¹Daneshian M, Akbarsha MA, Blaauboer B, et al. A framework program for the teaching of alternative methods (replacement, reduction, refinement) to animal experimentation. *ALTEX*. 2011;28(4):341-352.
- ²⁶²Hartung T, Borel A, Schmitz G. Detecting the broad spectrum of pyrogens with the human whole-blood monocyte activation test. *Bioprocess Int*. 2016;14(3):38-56.
- ²⁶³Anderson RL, Watson WH, Chabot CC. Sublethal behavioral and physiological effects of the biomedical bleeding process on the American horseshoe crab, *Limulus polyphemus*. *Biol Bull*. 2013;225(3):137-151.
- ²⁶⁴EDQM. Monocyte-activation test. *European Pharmacopoeia* 6.7, Chapter 2.6.30. Strasbourg, France: Council of Europe; 2010.
- ²⁶⁵Fennrich S, Hennig U, Toliashvili L, Schlensak C, Wendel HP, Stoppelkamp S. More than 70 years of pyrogen detection: Current state and future perspectives. *Altern Lab Anim*. 2016;44(3):239-253.
- ²⁶⁶Hasiwa N, Daneshian M, Bruegger P, et al. Evidence for the detection of non-endotoxin pyrogens by the whole blood monocyte activation test. *ALTEX*. 2013;30(2):169-208.
- ²⁶⁷US Food and Drug Administration. Guidance for industry. Pyrogen and endotoxins testing: Questions and answers. Washington, DC: FDA; 2012. <http://www.fda.gov/downloads/Drugs/GuidanceComplianceRegulatoryInformation/Guidances/UCM310098.pdf>.
- ²⁶⁸PETA International Science Consortium Ltd. Workshop: Using the monocyte activation test as a standalone release test for medical devices. <https://www.piscltd.org.uk/medical-device-pyrogen>.
- ²⁶⁹EDQM. Monocyte-activation test. *Pharmeuropa*. 2016; 27(4):15-26.
- ²⁷⁰EDQM. European Pharmacopoeia Commission adopts revised general chapter on Monocyte-activation test to facilitate reduction in testing on laboratory animals. Strasbourg; 23 June 2016.
- ²⁷¹EMA Committee for Medicinal Products for Veterinary Use. Reflection paper providing an overview of the current regulatory testing requirements for veterinary medicinal products and opportunities for implementation of the 3Rs. (Draft) London: EMA; 2016. http://www.ema.europa.eu/docs/en_GB/document_library/Scientific_guideline/2016/04/WC500205609.pdf.
- ²⁷²Fennrich et al.
- ²⁷³Indian Pharmacopoeia Commission. Monocyte activation test. *Indian Pharmacopoeia*. 8th ed. General Chapter Monograph 2.2.25.
- ²⁷⁴SCHEER. Opinion on additives used in tobacco products (Opinion 2). Tobacco additives II. 16 December 2016. https://ec.europa.eu/health/sites/health/files/scientific_committees/scheer/docs/scheer_o_001.pdf.



- ²⁷⁵Brepeols F. Animal tests for the development of tobacco products. European Parliament, parliamentary questions, 16 March 2009.
- ²⁷⁶Parve V. *National Regulations on Ethics and Research in Estonia*. Luxembourg: Office for Official Publications of the European Communities; 2003.
- ²⁷⁷German Animal Welfare Act.
- ²⁷⁸Glasa J. *Slovak Republic – Regulations on Ethics and Research*. Luxembourg: Office for Official Publications of the European Communities; 2003 .
- ²⁷⁹UK Home Office. Guidance on the operation of the Animals (Scientific Procedures) Act 1986, Section 5.18. London: HMSO, 2014.
- ²⁸⁰Behrsing H, Raabe H, Manuppello J, *et al.* Assessment of *in vitro* COPD models for tobacco regulatory science: Workshop proceedings, conclusions and paths forward for *in vitro* model use. *Altern Lab Anim*. 2016;44(2):129-166.
- ²⁸¹Manuppello JR, Sullivan KM. Toxicity assessment of tobacco products *in vitro*. *Altern Lab Anim*. 2015;43(1):39-67.
- ²⁸²Clippinger A, Allen D, Behrsing H, *et al.* Pathway-based predictive approaches for non-animal assessment of acute inhalation toxicity. *Toxicol In Vitro*. 2018;52:131-145.
- ²⁸³Further recent reviews of innovative, non-animal methods for the hazard assessment of tobacco products can be found at http://www.bat-science.com/groups/sites/BAT_9GVJXS.nsf/vwPagesWebLive/DO9P2BZT.
- ²⁸⁴EURL ECVAM. Strategy to avoid and reduce animal use in genotoxicity testing. 2013. http://publications.jrc.ec.europa.eu/repository/bitstream/111111111/30088/1/jrc_report_en_34844_online.pdf.
- ²⁸⁵*Ibid.*; Corvi R, Madia F. *In vitro* genotoxicity testing – can the performance be enhanced? *Food Chem Toxicol*. 2017;106(Pt B):600-608.
- ²⁸⁶SCCS. The SCCS notes of guidance for the testing of cosmetic ingredients and their safety evaluation. 9th revision. 25 April 2016. http://ec.europa.eu/health/scientific_committees/consumer_safety/docs/sccs_o_190.pdf.
- ²⁸⁷Reisinger K, Blatz V, Brinkmann J, *et al.* Validation of the 3D Skin Comet assay using full thickness skin models: Transferability and reproducibility. *Mutat Res*. 2018;827:27-41.
- ²⁸⁸Kleinstreuer NC, Karmaus AL, Mansouri K, Allen DG, Fitzpatrick JM, Patlewicz G. Predictive models for acute oral systemic toxicity: A workshop to bridge the gap from research to regulation. *Comput Toxicol*. 2018;8:21-24
- ²⁸⁹OECD. Guidance document on considerations for waiving or bridging of mammalian acute toxicity tests.
- ²⁹⁰EPA Office of Pesticide Programs. Guidance for waiving or bridging of mammalian acute toxicity tests for pesticides and pesticide products (acute oral, acute dermal, acute inhalation, primary eye, primary dermal, and dermal sensitization). 1 March 2012. <https://www.epa.gov/sites/production/files/documents/acute-data-waiver-guidance.pdf>.
- ²⁹¹Kleinstreuer *et al.*
- ²⁹²NICEATM workshop on Predictive Models for Acute Oral Systemic Toxicity, 11–12 April 2018. <https://ntp.niehs.nih.gov/pubhealth/evalatm/test-method-evaluations/acute-systemic-tox/models/index.html>.
- ²⁹³European Commission. EURL ECVAM strategy to replace, reduce and refine the use of animals in the assessment of acute mammalian systemic toxicity. 2014.
- ²⁹⁴Hamm J, Sullivan K, Clippinger AJ, *et al.* Alternative approaches for identifying acute systemic toxicity: Moving from research to regulatory testing. *Toxicol In Vitro*. 2017;41:245-259.
- ²⁹⁵Prieto P, Kinsner-Ovaskainen A, Stanzel S, *et al.* The value of selected *in vitro* and *in silico* methods to predict acute oral toxicity in a regulatory context: Results from the European Project ACuteTox. *Toxicol In Vitro*. 2013;27(4):1357-1376.
- ²⁹⁶Prieto P, Graepel R, Gerloff K, *et al.* Investigating cell type specific mechanisms contributing to acute oral toxicity. *ALTEX*. 2018. <https://doi.org/10.14573/altex.1805181>.
- ²⁹⁷Graepel R, Asturiol D, Prieto P, Worth AP. Exploring waiving opportunities for mammalian acute systemic toxicity tests. *Altern Lab Anim*. 2016;44(3):271-279.
- ²⁹⁸ECHA. Guidance on information requirements and chemical safety assessment. Chapter R.7a: Endpoint specific guidance. Version 6.0. July 2017. https://echa.europa.eu/documents/10162/13632/information_requirements_r7a_en.pdf.
- ²⁹⁹Commission Regulation (EU) 2016/863 of 31 May 2016 amending Annexes VII and VIII to Regulation (EC) No 1907/2006 of the European Parliament and of the Council on the Registration, Evaluation, Authorisation and Restriction of Chemicals (REACH) as regards skin corrosion/irritation, serious eye damage/eye irritation and acute toxicity. <http://eur-lex.europa.eu/eli/reg/2016/863/oj>.
- ³⁰⁰EPA Office of Pesticide Programs. Guidance for waiving acute dermal toxicity tests for pesticide formulations & supporting retrospective analysis. 9 November 2016. https://www.epa.gov/sites/production/files/2016-11/documents/acute-dermal-toxicity-pesticide-formulations_0.pdf.
- ³⁰¹Clippinger AJ, Allen D, Behrsing H, *et al.* Nonanimal approaches to assessing the toxicity of inhaled substances: Current progress and future promise. *Appl In Vitro Toxicol*. 2018;4(2):82-88.
- ³⁰²EPA. Meeting materials for the December 4–7, 2018 scientific advisory panel. <https://www.epa.gov/sap/meeting-materials-december-4-7-2018-scientific-advisory-panel-0>.



- ³⁰³Clippinger AJ, Allen D, Jarabek AM, *et al.* Alternative approaches for acute inhalation toxicity testing to address global regulatory and non-regulatory data requirements: An international workshop report. *Toxicol In Vitro*. 2018;48:53-70.
- ³⁰⁴Clippinger AJ, Allen D, Behrsing H, *et al.* Pathway-based predictive approaches for non-animal assessment of acute inhalation toxicity. *Toxicol In Vitro*. 2018;52:131-145.
- ³⁰⁵Goodman JI. Goodbye to the bioassay. *Toxicol Res*. 2018;7(4):558-564.
- ³⁰⁶Grasso P, Crampton RF. The value of the mouse in carcinogenicity testing. *Food Cosmet Toxicol*. 1972;10(3):418-426.
- ³⁰⁷Schach von Wittenau M, Estes PC. The redundancy of mouse carcinogenicity bioassays. *Fundam Appl Toxicol*. 1983;3(6):631-639.
- ³⁰⁸Alden CL, Smith PF, Piper CE, Brey L. A critical appraisal of the value of the mouse cancer bioassay in safety assessment. *Toxicol Pathol*. 1996;24(6):722-725.
- ³⁰⁹Carmichael NG, Enzmann H, Pate I, Waechter F. The significance of mouse liver tumor formation for carcinogenic risk assessment: Results and conclusions from a survey of ten years of testing by the agrochemical industry. *Environ Health Perspect*. 1997;105(11):1196-1203.
- ³¹⁰Van Oosterhout JP, Van der Laan JW, De Waal EJ, *et al.* The utility of two rodent species in carcinogenic risk assessment of pharmaceuticals in Europe. *Regul Toxicol Pharmacol*. 1997;25(1):6-17.
- ³¹¹Cohen SM. Alternative models for carcinogenicity testing: Weight of evidence evaluations across models. *Toxicol Pathol*. 2001;29 Suppl:183-190.
- ³¹²Cohen SM. Human carcinogenic risk evaluation: An alternative approach to the two-year rodent bioassay. *Toxicol Sci*. 2004;80(2):225-229.
- ³¹³Ward JM. The two-year rodent carcinogenesis bioassay – will it survive? *J Toxicol Pathol*. 2007;20(1):13-19.
- ³¹⁴Billington R, Lewis RW, Mehta JM, Dewhurst I. The mouse carcinogenicity study is no longer a scientifically justifiable core data requirement for the safety assessment of pesticides. *Crit Rev Toxicol*. 2010;40(1):35-49.
- ³¹⁵Reddy MV, Sistare FD, Christensen JS, Deluca JG, Wollenberg GK, DeGeorge JJ. An evaluation of chronic 6- and 12-month rat toxicology studies as predictors of 2-year tumor outcome. *Vet Pathol*. 2010;47(4):614-629.
- ³¹⁶Sistare FD, Morton D, Alden C, *et al.* An analysis of pharmaceutical experience with decades of rat carcinogenicity testing: Support for a proposal to modify current regulatory guidelines. *Toxicol Pathol*. 2011;39(4):716-744.
- ³¹⁷Annys E, Billington R, Clayton R, *et al.* Advancing the 3Rs in regulatory toxicology – carcinogenicity testing: Scope for harmonisation and advancing the 3Rs in regulated sectors of the European Union. *Regul Toxicol Pharmacol*. 2014;69(2):234-242.
- ³¹⁸Cohen SM. The relevance of experimental carcinogenicity studies to human safety. *Curr Opin Toxicol*. 2017;3:6-11.
- ³¹⁹Goodman.
- ³²⁰Ibid.
- ³²¹Billington *et al.*
- ³²²Sistare *et al.*
- ³²³EURL ECVAM. EURL ECVAM recommendation on the cell transformation assay based on the Bhas 42 cell line. JRC Reference Report. 2013. <http://dx.doi.org/10.2788/42908>.
- ³²⁴Hayashi M, Kojima H, Corvi R, *et al.* Bhas 42 cell transformation assay validation study report submitted to JaCVAM. 2012.
- ³²⁵OECD. Guidance document on the *in vitro* Bhas 42 cell transformation assay. Series on Testing & Assessment No 231. [http://www.oecd.org/env/ehs/testing/ENV_JM_MONO\(2016\)1.pdf](http://www.oecd.org/env/ehs/testing/ENV_JM_MONO(2016)1.pdf).
- ³²⁶Benigni R, Bossa C, Tcheremenskaia O. *In vitro* cell transformation assays for an integrated, alternative assessment of carcinogenicity: A data-based analysis. *Mutagenesis*. 2013;28(1):107-116.
- ³²⁷EPA. OncoLogic™ – a computer system to evaluate the carcinogenic potential of chemicals. <https://www.epa.gov/tsca-screening-tools/oncologictm-computer-system-evaluate-carcinogenic-potential-chemicals>.
- ³²⁸OECD. Work plan for the Test Guidelines Programme. 2018. http://www.oecd.org/chemicalsafety/testing/TGP%20work%20plan_September%202018.pdf.
- ³²⁹Browne P, Judson RS, Casey WM, Kleinstreuer NC, Thomas RS. Screening chemicals for estrogen receptor bioactivity using a computational model. *Environ Sci Technol*. 2015;49(14):8804-8814.
- ³³⁰EPA. Use of high throughput assays and computational tools in the Endocrine Disruptor Screening Program. <https://www.epa.gov/endocrine-disruption/use-high-throughput-assays-and-computational-tools-endocrine-disruptor>.
- ³³¹OECD. New scoping document on *in vitro* and *ex vivo* assays for the identification of modulators of thyroid hormone signaling. Series on Testing and Assessment No 207. 11 July 2014.
- ³³²Rovida C, Longo F, Rabbit RR. How are reproductive toxicity and developmental toxicity addressed in REACH dossiers? *ALTEX*. 2011;28(4):273-294.
- ³³³Hartung T. Toxicology for the twenty-first century. *Nature*. 2009;460:208-212.
- ³³⁴Bouvier d'Yvoire M, Bremer S, Casati S, *et al.* ECVAM and new technologies for toxicity testing. *Adv Exp Med Biol*. 2012;745:154-180.



- ³³⁵Rolaki A, Nepelska M, Bremer S, Graepel R, Price A, Worth A. Reproductive toxicity – effects on fertility and developmental toxicity. In Worth A, Barroso J, Bremer S, et al, eds. *JRC Science and Policy Reports: Alternative Methods for Regulatory Toxicology: A State-of-the-Art Review*. 2014. https://echa.europa.eu/documents/10162/13634/echa_jrc_sla_report_en.pdf.
- ³³⁶AOP Wiki. Aromatase (Cyp19a1) reduction leading to impaired fertility in adult female. <https://aopwiki.org/aops/7>. Updated 30 November 2016.
- ³³⁷ReProTect. Development of a novel approach in hazard and risk assessment or reproductive toxicity by a combination and application of in vitro, tissue and sensor technologies. 2004–2009. https://cordis.europa.eu/project/rcn/75291_en.html.
- ³³⁸van der Burg B, Wedebeye EB, Dietrich DR, et al. The ChemScreen project to design a pragmatic alternative approach to predict reproductive toxicity of chemicals. *Reprod Toxicol*. 2015;55:114-123.
- ³³⁹EPA. Virtual tissue models: Predicting how chemicals impact development. <https://www.epa.gov/chemical-research/virtual-tissue-models-predicting-how-chemicals-impact-development>.
- ³⁴⁰European Commission. Seventh report on the statistics on the number of animals used for experimental and other scientific purposes in the member states of the European Union. 2013. <https://eur-lex.europa.eu/legal-content/EN/TXT/PDF/?uri=CELEX:52013DC0859&from=EN>.
- ³⁴¹OECD. Test No 319A: Determination of *In Vitro* Intrinsic Clearance Using Cryopreserved Rainbow Trout Hepatocytes (RT-HEP). 2018. <https://www.oecd-ilibrary.org/docserver/9789264303218-en.pdf?expires=1534257618&id=id&accname=guest&checksum=0EFBA59C5D35D2862F50B9CF24DE45C>.
- ³⁴²OECD. Test No 319B: Determination of *In Vitro* Intrinsic Clearance Using Rainbow Trout Liver S9 Sub-Cellular Fraction (RT-S9). 2018. <https://www.oecd-ilibrary.org/docserver/9789264303232-en.pdf?expires=1534257717&id=id&accname=guest&checksum=2077E945948261062F539B14B172095F>.
- ³⁴³OECD. Draft guidance document: Determination of *in vitro* intrinsic clearance using cryopreserved hepatocytes (RT-HEP) or liver S9 sub-cellular fractions (RT-S9) from rainbow trout and extrapolation to *in vivo* intrinsic clearance. 2018. <http://www.oecd.org/env/ehs/testing/latestdocuments/3-OECD%20Guidance%20Document%20Draft%20for%20comments.pdf>.
- ³⁴⁴OECD. Test No 305: Bioaccumulation in Fish: Aqueous and Dietary Exposure. 2012. <https://www.oecd-ilibrary.org/docserver/9789264185296-en.pdf?expires=1534257777&id=id&accname=guest&checksum=9AE6102FA262C7A119FC478F6416A4A8>.
- ³⁴⁵OECD. Test No 236: Fish Embryo Acute Toxicity (FET) Test. 2013. <https://www.oecd-ilibrary.org/docserver/9789264203709-en.pdf?expires=1534257884&id=id&accname=guest&checksum=279D5F896219575ADE098BD738D4EB7>.
- ³⁴⁶ECHA. Joint Report ECHA and UBA. Expert workshop on the potential regulatory application of the Fish Embryo Acute Toxicity (FET) Test under REACH, CLP and the BPR. 3–4 May 2017, Helsinki. https://echa.europa.eu/documents/10162/13630/fet_workshop_proceedings_en.pdf/a987ccab-5d4a-a226-2a73-994be484ca8d.
- ³⁴⁷Tanneberger K, Knöbel M, Busser FJM, Sinnige TL, Hermens JLM, Schirmer K. Predicting fish acute toxicity using a fish gill cell line-based toxicity assay. *Environ Sci Technol*. 2013;47(2):1110-1119.
- ³⁴⁸OECD. Test No 203: Fish, Acute Toxicity Test. 1992. <https://www.oecd-ilibrary.org/docserver/9789264069961-en.pdf?expires=1534510163&id=id&accname=guest&checksum=0D2B43A6545188D1119BA52AFA660503>.
- ³⁴⁹Fischer M, Belanger SE, Berckmans P, et al. Repeatability and reproducibility of the RTgill-W1 cell line assay for predicting fish acute toxicity. *Toxicol Sci*. 2019;1-12.
- ³⁵⁰ISO 21115:2019: Water quality – determination of acute toxicity of water samples and chemicals to a fish gill cell line (RTgill-W1). <https://www.iso.org/obp/ui/#iso:std:iso:21115:ed-1:v1:en>.
- ³⁵¹Dozier S, Brown J, Currie A. Bridging the gap between validation and implementation of non-animal veterinary vaccine potency testing methods. *Animals*. 2011;1(4):414-432.
- ³⁵²Draayer H. Overview of currently approved veterinary vaccine potency testing methods and methods in development that do not require animal use. *Procedia Vaccinol*. 2011;5:171-174.
- ³⁵³Bristow A, Schulster D, Jeffcoate S. Report of an international workshop on assays, standardization and labelling requirements of somatotropin. *Pharmeuropa*. 1994;6:60-67.
- ³⁵⁴EDQM. Harmonisation with VICH Guidelines 41 and 44 and deletion of the TABST, adopted at the 142nd session of the European Pharmacopoeia Commission. *Pharmeuropa*. 2012;S7.7:1-5.
- ³⁵⁵Unkauf T, Miethe S, Fühner V, Schirrmann T, Frenzel A, Hust M. Generation of recombinant antibodies against toxins and viruses by phage display for diagnostics and therapy. *Adv Exp Med Biol*. 2016;917:55-76.
- ³⁵⁶Dozier et al.
- ³⁵⁷Stokes W, Srinivas G, McFarland R, et al. Report on the international workshop on alternative methods for *Leptospira* vaccine potency testing: State of the science and the way forward. *Biologicals*. 2013;41(5):279-294.



- ³⁵⁸Stokes W, McFarland R, Kulpa-Eddy J, *et al.* Report on the international workshop on alternative methods for human and veterinary rabies vaccine testing: State of the science and planning the way forward. *Biologicals*. 2012;40(5):369-381.
- ³⁵⁹Veterinary Medicines Directorate. Animal usage in quality control tests for the batch release of Immunological Veterinary Medicinal Products (IVMPs) via the UK from 2007 to 2012. London: VMD; 2016. https://assets.publishing.service.gov.uk/government/uploads/system/uploads/attachment_data/file/438916/_518852-v8-Animal_Usage_for_QC_Batch_Release_of_IVMPs_2007-2012.pdf.
- ³⁶⁰Jungbäck C, ed. *Potency Testing for Veterinary Vaccines for Animals: The Way From In Vivo to In Vitro*. Langen, Germany: International Alliance for Biological Standardization; 2012. <http://www.epsv.fiocruz.br/upload/d/silviovalle/VaccineforAnimals.pdf>.
- ³⁶¹De Mattia F, Chapsal JM, Descamps J, *et al.* The consistency approach for quality control of vaccines – a strategy to improve quality control and implement 3Rs. *Biologicals*. 2011;39(1):59-65.
- ³⁶²De Mattia F, Hendriksen C, Buchheit KH, *et al.* The vaccines consistency approach project: An EPAA initiative. *Pharmeur Bio Sci Notes*. 2015;2015:30-56.
- ³⁶³Groff K, Brown J, Clippinger AJ. Modern affinity reagents: Recombinant antibodies and aptamers. *Biotechnol Adv*. 2015;33(8):1787-1798.
- ³⁶⁴Bradbury A, Plückthun A. Reproducibility: Standardize antibodies used in research. *Nature*. 2015;518(7537):27-29.
- ³⁶⁵Baker M. Reproducibility crisis: Blame it on the antibodies. *Nature*. 2015;521(7552):274-276.
- ³⁶⁶Bradbury ARM, Trinklein ND, Thie H, *et al.* When monoclonal antibodies are not monospecific: Hybridomas frequently express additional functional variable regions. *MAbs*. 2018;10(4):539-546.
- ³⁶⁷Bradbury, Plückthun.
- ³⁶⁸*Ibid.*
- ³⁶⁹Groff *et al.*
- ³⁷⁰Gray AC, Sidhu SS, Chandrasekera PC, Hendriksen CFM, Borrebaeck CAK. Animal-friendly affinity reagents: Replacing the needless in the haystack. *Trends Biotechnol*. 2016;34(12):960-969.
- ³⁷¹*Ibid.*; Groff *et al.*
- ³⁷²Barroso J. Scientific validity of replacements for animal-derived antibodies. *Sci Advis Comm Altern Toxicol Methods Meet*. 2019. https://ntp.niehs.nih.gov/ntp/about_ntp/sacatm/2019/september/presentations/1-4-barroso-508.pdf.
- ³⁷³Groff K, Allen D, Casey W, Clippinger A. Increasing the use of animal-free recombinant antibodies. *ALTEX*. 2020; 37(2);309-311.
- ³⁷⁴Marx U, Embleton MJ, Fischer R, *et al.* Monoclonal antibody production – the report and recommendations of ECVAM Workshop 23. *Altern Lab Anim*. 1997;25(2):121-137.
- ³⁷⁵Brindley DA, Davie NL, Culme-Seymour EJ, Mason C, Smith DW, Rowley JA. Peak serum: Implications of serum supply for cell therapy manufacturing. *Regen Med*. 2012;7(1):7-13.
- ³⁷⁶van der Valk J, Mellor D, Brands R, *et al.* The humane collection of fetal bovine serum and possibilities for serum-free cell and tissue culture. *Toxicol In Vitro*. 2004;18(1):1-12.
- ³⁷⁷van der Valk J, Brunner D, De Smet K, *et al.* Optimization of chemically defined cell culture media – replacing fetal bovine serum in mammalian *in vitro* methods. *Toxicol In Vitro*. 2010;24(4):1053-1063.
- ³⁷⁸van der Valk J, Bieback K, Buta C, *et al.* Fetal bovine serum (FBS): Past – present – future. *ALTEX*. 2018;35(1): 99-118.





PO Box 28260
Juhu, Mumbai 400 049

+91 022-40727382
+91 022-26367383 (fax)
PETAIndia.com